ॐ श्री गणेशाय नमः

卐 श्री परमात्मने नमः 卐

परिवार में मनाये जाने वाले वर्ष के व्रत त्यौहार, विधि, महत्व और पौराणिक कथाओं सहित

संकलन - आशुतोष कुमार बंसल (अग्रवाल)
दूरभाष : ९३४७९०४८१४

कुल देवी - महालक्ष्मी / नैना देवी

सती माता - दक्षपुत्री सती, दादी सती झुंझुनू

क्रम	पर्व त्यौहार	मास, तिथि
	सूर्य ग्रहण	
1.	हरियाली तीज	श्रावण मास शुक्ल पक्ष तृतीया तिथि
2.	नाग पंचमी	श्रावण माह की शुक्ल पक्ष पंचमी
3.	रक्षाबन्धन	श्रावण मास- पूर्णिमा
4.	भाई पंचमी/गूगा पंचमी /भाई भिन्ना	भाद्रपद मास कृष्णपक्ष पंचमी
5.	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत	भाद्रपद मास कृष्ण पक्ष अष्टमी (रोहिणी नक्षत्र)
6.	गोगा नवमी	भाद्रपद मास कृष्ण पक्ष नवमी
7.	बछ बारस (गोवत्स द्वादशी)	भाद्रपद मास कृष्ण पक्ष द्वादशी
8.	श्रीकृष्ण की षष्ठी	भाद्रपद मास शुक्ल पक्ष षष्ठी (जन्म के 6 दिन बाद)
9.	सर्व पितृ-देवता अमावस्या	भाद्रपद मास अमावस्या
10.	सती (पिठोरी) अमावस्या	
11.	महादेव का धागा बांधना	भाद्रपद शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार
12.	गणेश मूर्ति स्थापना चतुर्थी	भाद्रपद मास शुक्ल पक्ष चतुर्थी

13.	**भाद्रपद कलंक चतुर्थी**	
14.	**दूर्वा/ संतान सप्तमी/दुबड़ी (धागा बांधना)**	**भाद्रपद मास शुक्ल पक्ष सप्तमी**
15.	**राधाष्टमी महालक्ष्मी व्रत ,दूर्वाष्टमी**	**भाद्रपद मास शुक्ल पक्ष अष्टमी**
16.	**गणेश मूर्ति विसर्जन**	**भाद्रपद शुक्ल पक्ष अनंत चतुर्दशी**
17.	**पितृ पक्ष (श्राद्ध पक्ष)**	**भाद्रपद शुक्ल पक्ष पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या**
18.	**सर्व पितृ-देवता श्राद्ध**	**आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या**
19.	**दुबड़ी (दूर्वा सप्तमी)धागा खोलना**	**आश्विन कृष्ण पक्ष (पितृ पक्ष) सप्तमी**
20.	**शारदीय नवरात्रि**	**अश्विन शुक्लपक्ष (प्रतिपदा से दशमी तक)**
21.	**विजयादशमी**	**आश्विन मास शुक्ल पक्ष दशमी**
22.	**शरद पूर्णिमा**	**आश्विन मास पूर्णिमा**
23.	**करवा चौथ**	**कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी**
24.	**अहोई अष्टमी**	**कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी**
25.	**धन त्रयोदशी**	**कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी**
26.	**नर्क चतुर्दशी**	**कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दशी**

27.	पितरों की अमावस्या	कार्तिक अमावस
28.	दीपावली, लक्ष्मी पूजन	
29.	गोवेर्धन पूजा (अन्नकूट)	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा
30.	यम द्वितीया (भाई दूज)	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया
31.	षष्ठी पूजा (छठ पूजा)	कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी
32.	अक्षय नवमी, आंवला नवमी व्रत	कार्तिक शुक्ल पक्ष - नवमी
33.	देवोत्थान एकादशी (तुलसी विवाह)	कार्तिक शुक्ल पक्ष - एकादशी
34.	गुरु पूर्णिमा	कार्तिक पूर्णिमा (गुरु नानक जयंती)
35.	महादेव का धागा खोलना	मार्गशीर्ष (अगहन) शुक्ल पक्ष के पहले / दुसरे सोमवार
36.	लोहड़ी (पोंगल, पिहू)	पौष शुक्ल पक्ष पूर्णिमा
37.	मकर सक्रांति (उत्तरायण)	माघ मास कृष्ण पक्ष प्रतिपदा
38.	गणेश संकष्टी चतुर्थी	माघ माह कृष्ण पक्ष चतुर्थी
39.	बसंत , सरस्वती पूजा	माघ माह शुक्ल पक्ष पंचमी
40.	महाशिवरात्रि	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी
41.	शीतला सप्तमी (बासड़िया)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष सप्तमी (होली से पहले मंगलवार)

42.	**होली धुलेंडी**	**फाल्गुन पूर्णिमा**
43.	**शीतला सप्तमी (बासड़िया)**	**चैत्र माह कृष्ण पक्ष (होली के बाद का पहला मंगलवार)**
44.	**युगादि या उगादि पर्व (गुड़ी पड़वा)**	**चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा**
45.	**चैत्र नवरात्रि**	**चैत्र शुक्लपक्ष (प्रतिपदा से नवमी तक)**
46.	**राम नवमी**	**चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी**
47.	**बैसाखी**	**बैसाख कृष्ण पक्ष प्रतिपदा**
48.	**अक्षय तृतीया**	**वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया**
49.	**वट सावित्री व्रत**	**ज्येष्ठ माह, कृष्ण पक्ष की अमावस्या**
50.	**निर्जला एकादशी**	**ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की एकादशी**
51.	**वट पूर्णिमा व्रत**	**ज्येष्ठ माह शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा**
52.	**जगन्नाथ यात्रा**	**आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीय तिथि से दसवीं तिथि**
53.	**देवशयनी एकादशी**	**आषाढ़ शुक्ल पक्ष एकादशी**
54.	**गुरु पूर्णिमा**	**आषाढ़ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा**
पूर्णिमा के बाद (घटता चन्द्रमा) कृष्णपक्ष और अमावस के बाद (बढ़ता चन्द्रमा) शुक्लपक्ष कहलाता है।		

सूर्य ग्रहण

1. **सूर्य ग्रहण** का सूतक शुरू होने से पहले जल, घी, दूध,अचार और खाने-पीने के अन्य चीज़ों में तुलसी/कुशा की पत्तियां डालकर रख देनी चाहिए।
2. सूर्य ग्रहण के दौरान बिना किसी मूर्ति को छूए। आराध्य देवता की पूजा-अर्चना (सुन्दर काण्ड), गायत्री और महामृत्युंजय मन्त्र का जाप करें।
3. सूर्य ग्रहण के दौरान "ॐ आदित्याय विदमहे दिवाकराय धीमहि तन्नो : सूर्य: प्रचोदयात।" इस मंत्र का जाप करें।

4. सूर्य ग्रहण के दौरान गृह प्रवेश, मुंडन, विवाह, आदि मांगलिक कार्यों को करना अच्छा नहीं माना जाता।

5. सूर्य ग्रहण के दौरान न ही खाना बनाना चाहिए और न खाना चाहिए। सूर्य ग्रहण के दौरान सोना भी नहीं चाहिए।

6. सूर्य ग्रहण के दौरान बाल और दाढ़ी नहीं कटवाए जाते हैं। सूर्य ग्रहण के दौरान तेल मालिश नहीं करना चाहिए।

7. सूर्य ग्रहण के दौरान गर्भवती महिलाओं को कैंची, चाकू, सुई आदि का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

8. गर्भवती महिलाओं या किसी बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को ग्रहण नहीं देखना चाहिए।सूर्य ग्रहण देखने से गर्भस्थ शिशु पर असर पड़ सकता है।
9. सूर्य ग्रहण : कोशिश करें कि आप सूर्य ग्रहण न देखें।

१० सूर्य ग्रहण के दौरान तुलसी, पीपल, बरगद (वट), बेल,आंवला आदि वृक्षों को जल अर्पित न करें।

११ सूर्य ग्रहण समाप्ति पर स्नान करें , घर में मंदिर की सफाई करें। सतनाजा, वस्त्र आदि का दान दें।

हरियाली तीज (श्रावण मास शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि)

हरियाली तीज, भारतीय संस्कृति का एक अत्यंत पावन और समृद्ध पर्व है। भारतीय नारी शक्ति की श्रद्धा, प्रेम और संस्कृति का उत्सव है, जो धर्म, समाज और परंपरा—तीनों को एक सूत्र में पिरोता है। सूर्योदय के समय महिलाएँ लाल या हरे रंग की साड़ी, चूड़ियाँ और मेहँदी लगाकर दिन की शुरुआत करती हैं। देवी पार्वती को फूल, मिठाई और नारियल जैसे प्रसाद चढ़ाए जाते हैं। दीप प्रज्वलित करके और भक्ति गीत गाकर पूजा की शुरुआत की जाती है। विवाहित महिलाएँ अपने पति के अच्छे स्वास्थ्य के लिए निराहार व्रत रखती हैं, खीर, मीठे पुढे , श्रृंगार, झूला

पौराणिक कथा : शिवजी ने पार्वतीजी को उनके पूर्वजन्म का स्मरण कराने के लिए तीज की कथा सुनाई थी। शिवजी ने पार्वतीजी से कहा- तुम्हारे पिता पर्वतराज दुःखी थे। नारदजी तुम्हारे घर पधारे और कहा- मैं विष्णुजी के भेजने पर आया हूं। वह आपकी कन्या से प्रसन्न होकर विवाह करना चाहते हैं। अपनी राय बताएं। पर्वतराज प्रसन्नता से तुम्हारा विवाह विष्णुजी से करने को तैयार हो गए। नारदजी ने विष्णुजी को यह शुभ समाचार सुना दिया पर जब तुम्हें पता चला तो बड़ा दु.ख हुआ। तुम मुझे मन से अपना पति मान चुकी थीं। तुमने अपने मन की बात सहेली को बताई। सहेली ने तुम्हें एक ऐसे घने वन में छुपा दिया जहां तुम्हारे पिता नहीं पहुंच सकते थे। वहां तुम तप करने लगी। तुम्हारे लुप्त होने से पिता चिंतित होकर सोचने लगे यदि इस बीच विष्णुजी बारात लेकर आ गए तो क्या होगा।

शिवजी ने आगे पार्वतीजी से कहा- तुम्हारे पिता ने तुम्हारी खोज में धरती-पाताल एक कर दिया पर तुम न मिली। तुम गुफा में रेत से शिवलिंग बनाकर मेरी आराधना में लीन थी। शिवजी कहते हैं- हे पार्वती तुमने हिमालय पर मुझे वर के रूप में पाने के लिए घोर तप किया था। अन्न-जल त्यागा, पत्ते खाए, सर्दी-गर्मी, बरसात में कष्ट सहे। प्रसन्न होकर मैंने मनोकामना पूरी करने का वचन दिया। तुम्हारे पिता खोजते हुए गुफा तक पहुंचे। तुमने बताया कि अधिकांश जीवन शिवजी को पतिरूप में पाने के लिए तप में बिताया है। आज तप सफल रहा, शिवजी ने मेरा वरण कर लिया। मैं आपके साथ एक ही शर्त पर घर चलूंगी यदि आप मेरा विवाह शिवजी से करने को राजी हों। पर्वतराज मान गए। बाद में विधि-विधान के साथ हमारा विवाह किया। हे

पार्वती! तुमने जो कठोर व्रत किया था उसी के फलस्वरूप हमारा विवाह हो सका। इस व्रत को निष्ठा से करने वाली स्त्री को मैं मनवांछित फल देता हूं। उसे तुम जैसा अचल सुहाग का वरदान प्राप्त हो।

धार्मिक सामाजिक/ सांस्कृतिक महत्व: हरियाली तीज का संबंध माता पार्वती और भगवान शिव के दिव्य मिलन से है। इस दिन व्रत रखकर महिलाएं माता पार्वती की कृपा प्राप्त करने तथा वैवाहिक जीवन में सुख, शांति और सौभाग्य की कामना करती हैं। हरियाली तीज पर्व नारी एकता, सामूहिक रूप से संस्कारों में भाग लेने का और सामाजिक समरसता का प्रतीक है। भारतीय लोकसंस्कृति का अद्‌भुत उदाहरण है। सावन की हरियाली और वर्षा का सौंदर्य इस दिन को और भी मनोरम बना देता है। महिलाएं पारंपरिक वेशभूषा में सज-धजकर झूला झूलती हैं, लोकगीत गाती हैं और सामूहिक रूप से व्रत व कथा में भाग लेती हैं। इस दिन पारंपरिक नृत्य, गीत, मेंहदी रचना, हरे वस्त्र पहनना और श्रृंगार करना एक सांस्कृतिक परंपरा बन चुकी है।

नाग पंचमी (श्रावण माह की शुक्ल पक्ष)

सर्वप्रथम भगवान शिव का ध्यान करें। जन्मेजय के नागयज्ञ के दौरान बड़े-बड़े विकराल नाग अग्निकुंड में जलने लगे, श्रावण माह की शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि ऋषि और पत्नी जरत्कारु (मनसा देवी) के सपुत्र आस्तिक सर्प यज्ञ रोककर नागों की रक्षा की थी। कालिय नाग से भगवान श्री कृष्ण ने वृंदावन के लोगों की जान बचाई थी .

पूजा विधि इस दिन दीवार पर **मुल्तानी मिट्टी** से पोतकर दूध में कोयला पीसकर चाकोर घर बनाकर उसमें 09 सांपों (अनन्त, वासुकी, पद्म, महापद्म, वासुकि, कर्कोटक, तक्षक, कालिय, धृतराष्ट्र) का चित्र बनाते हैं। **बाण की माला पहनाई जाती** है आटा, घी, चीनी, चने और हल्दी, कच्चा दूध के छींटे से नागों की पूजा करें।
(आसन कुश का) **पूरी , चना , खीर**

रक्षाबन्धन (श्रावण मास की पूर्णिमा)

रक्षा बंधन के एक दिन पहले या उसी दिन ९, ११ दरवाजो के दोनों और सजावट (ॐ, स्वस्तिक, राम सीता) आदि से करते हैं। पानी का छींटा दे कर, कलावे की ४ धागे की माला आटे से जमा कर, कुमकुम से टीका लगाना है ।

थाली सजावट: कलावे की राखी, मिठाई, दीपक, चंदन, फूल और चावल की थाली सजाएं।तिलक विधि: भाई के माथे पर कुमकुम और अक्षत से तिलक करें।

गणेशजी बताते हैं, जब भगवान विष्णु ने वामन अवतार लेकर राजा बलि को पाताल लोक भेजा, तब राजा बलि ने निवेदन किया कि भगवान विष्णु उनके साथ रहें। विष्णु ने सहमति दी, लेकिन देवी लक्ष्मी इससे दुखी हो गईं। देवी लक्ष्मी ने ब्राह्मणी स्त्री का रूप धारण कर राजा बलि से शरण मांगी और रक्षा सूत्र बांधा। बलि ने जब वरदान मांगा, तब देवी लक्ष्मी ने अपनी पहचान प्रकट की और विष्णु जी को वापस लाने का अनुरोध किया। राजा बलि ने खुशी-खुशी उन्हें मुक्त किया। जब कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया तब उनकी तर्जनी में चोट आ गई। द्रौपदी ने उस समय अपनी साड़ी फाड़कर उनकी उँगली पर पट्टी बाँध दी। साबुत मूंग , चावल , दही, शक्कर, मिठाई ।

भाई पंचमी/ रक्षा पंचमी/ गूगा पंचमी भाद्रपद मास की कृष्णपक्ष की पंचमी



पूजा विधि इस दिन दीवार पर गेरू से पोतकर दूध में कोयला पीसकर चाकोर घर बनाकर उसमें 05 सर्प बनाते हैं। इसके बाद इन सर्पों पर जल, कच्चा दूध, रोली-चावल, बाजरा, आटा, घी, चीनी मिलाकर चढ़ाना चाहिए और पण्डित को दक्षिणा देनी चाहिए।

- पूजन के लिये एक दिन पूर्व रात को मोठ और चने भीगों कर रख दें।
- पंचमी के दिन बहन को सिर से स्नान के बाद एक थाल भीगे हए मोठ-चने, हल्दी, रूपया ले।
- एक लोटा ले उस पर मौली बांधकर सतिया बनाये फिर उसमें पानी भरें उस पानी में कच्चा दूध मिलायें।

• तत्पश्चात यह सब वस्तुएँ लेकर कीकर के वृक्ष पर लोटे से जल चढ़ायें, हल्दी से तिलक करें। फिर अपने माथे पर हल्दी से बिंदी लगाये। • भीगे हुये मोठ-चने वृक्ष की झाड़ी की टहनी के कोनों पर बोयें और फिर अपनी साड़ी के पल्लू से सात बार कीकर की टहनी को स्पर्श करके अपने माथे से लगाये। यह करते समय यह कहें "झाड़ झड़े मेरा बीर बड़े"।

• तत्पश्चात भाई पंचमी की कहानी कहे या सुने। कहानी सुनते समय अपने हाथ में मोठ-चने लेकर उन्हे छीलते रहे। कहानी के बाद छीले हुए मोठ-चने वहीं वृक्ष पर चढ़ा दें।

• भाई पंचमी की कहानी के बाद विनायक महाराज की कहानी कहे या सुने। कहानी के पश्चात सूरज भगवान को जल दें। थोड़ा-सा जल बचाकर रखना हैं। जिसका प्रयोग घर लौटने पर घर के दरवाजे के दोनों कोनों पर पानी डाले, फिर हल्दी से स्वास्तिक बनाये। इसके बाद घर मे प्रवेश करें

भाई पंचमी /नाग पंचमी की पौराणिक कथा

बहुत समय पहले की बात है एक गाँव में एक साहूकार रहता था। उसके सात विवाहित पुत्र थे। साहूकार की छ बहुओं के भाई थे और उनका मायका बहुत समृद्ध था। परन्तु सबसे छोटे बेटे की पत्नी चरित्रवान, समझदार और बहुत ही विनम्र थी, बहू के कोई भाई नही था और ना ही उसका मायका इतना धनवान था। एक दिन घर की बड़ी बहू ने सभी बहुओं से पीली मिट्टी लाने को कहा। सब खुरपी और धलिया लेकर मिट्टी खोदने लगीं, तभी एक सर्प निकला। बड़ी बहू उसे मारने लगी, लेकिन छोटी बहू ने उसे रोका और कहा – "मत मारो इसे, यह निर्दोष है।" सर्प को छोड़ दिया।श्रावण / भाद्रपद मास की भैया पंचमी (नाग पंचमी) आई तब साहूकार की छ बहुएँ अपने मायके जाने की तैयारी करने लगी। जल्दी-जल्दी घर के काम निपटाकर वो अपने मायके भैया पंचमी मनाने जाना चाहती थी। वो छ बहुएँ कुएँ पर पानी भर रही थी तभी किसी ने उनसे पूछा की तुम सभी तो यहाँ हो पर तुम्हारी देवरानी कहाँ है? तो उन्होने उत्तर दिया के आज भैया पंचमी है और हमें अपने पीहर जाना है भैयापंचमी की पूजा के लिये। परन्तु उसके कोई भाई नही है इसलिये वो अंदर चुपचाप बैठी है और अपने काम कर रही है। उनकी सभी बातें एक सर्प सुन रहा था। एक बार उस छोटी बहू ने उस सर्प के जीवन की रक्षा करी थी इसीलिये वो सर्प उसका आभारी थी। उन बहूओं की बातें सुनकर सर्प उन बहूओं के पीछे पीछे उनके घर पहुँच गया। घर पहुँच कर उस सर्प ने आदमी का रूप ले लिया। घर में आकर उस सर्प ने साहूकर की छोटी बहू को अपनी बहन बताया और कहा कि वो उसका दूर रिश्ते का भाई है। उसने वहाँ सबका अभिवादन किया। लेकिन छोटी बहू को यकीन नही हुआ इसीलिये उसने उससे कहा मेरा कोई भाई नही है, तुम कौन

हो? मैं तुम्हे नही जानती। तब उसने उसको विश्वास दिलाया कि वो उसका भाई है और कहा की मेरा जन्म तुम्हारे विवाह के बाद हुआ था। यह जानकर उसे बहुत खुशी हुई। वो सबसे कहने लगी मेरा भाई आया है। उसे याद आया कि आज तो भैया पंचमी है परन्तु उसने कभी यह त्यौहार नही मनाया था इसीलिये उसे इसकी विधि नही पता थी। उसने अपनी सास से भैया पंचमी की विधि पूछी। बोली सासू माँ मेरा भाई आया है और आज भैया पंचमी है। मैं क्या करूँ,

उसकी सास ने कहा की पहले चूल्हा लीप फिर उसपर चावल चढ़ा। जब चावल बन जायें उसमें घी-बूरा मिलाकर अपने भाई को खिला। उसने वैसा ही किया। खाना खाने के बाद उस भाई ने कहा बहन मैं तुम्हे अपने घर ले जाने के लिये आया हूं। सब तुमसे मिलकर बहुत खुश होंगे। बहू ने अपनी सास से पूछा तो उसकी सासू ने भी उसे जानेकी आज्ञा दे दी। जब इंसान के रूप मे सर्प अपनी बहन को अपने साथ लेकर वहाँ से चला तो उसने मार्ग में उस बहन को अपने विषय मे बताया कि मैं एक सर्प हूँ, और एक बार तुमने मेरे जीवन की रक्षा करी थी और मुझे भाई माना था इसलिये मैं अब तुम्हारा धर्म भाई हूँ। अपने बिल के पास पहुँच कर मैं अपने असली रूप में आऊँगा तब तुम बिना ड़रे मेरी पूंछ को पकड़ लेना और मेरे साथ बांबी में आ जाना। उसने वैसा ही किया और बांबी में पहुंचने के बाद उस सर्प ने उसे अपने परिवार से मिलाया और अपनी पत्नी से कहा ये मेरी धर्म बहन है। तब उसकी पत्नी बोली- यह मेरी ननद है, भतीजे बोले – हमारी बुआ आई है। सबने मिलकर उसका स्वागत किया। साहूकार की छोटी बहू ने वहाँ देखा की साँप के बच्चों की माँ अपने बच्चों और छोटे भाई-बहनों को घण्टी बजाकर बुलाती है दूध पीने के लिये। एक दिन उसने कहा कि मैं इन्हे दूध पिला देती हूँ। उसकी सर्प भाभी ने कहा ठीक है परंतु ध्यान रखना कि दूध ठण्ड़ा हो घण्टी तभी बजाना उससे पहले नही।

किंतु उसने गलती से घण्टी पहले ही बजा दी। तब तक दूध गर्म ही था और उस साँप के छोटे भाई-बहन का गर्म दूध पीने से जीभ, फन,पूँछ आदि जल गये। इससे वो बहुत नाराज हुए और बोले इसने हमें गर्म दूध से जलाया है हम इसको सजा देंगे, हम इसको खायेंगे। तब उसकी सर्प भाभी ने कहा – नही, इनसे गलती हुई है, इन्हे माफ कर दो। मैं इनकी तरफ से क्षमा माँगती हूँ।तभी सर्प की पत्नी के पुत्र हुआ तु उसने अपनी ननद (साहूकार की छोटी बहू) से पूछा बोलो ननद जी आपको क्या चाहिये अपने भतीजे के जन्म की खुशी में। तब उसने अपनी भाभी से एक नौलखा हार माँगा। सर्प भाभी ने ननद को नौलखा हार भेंट में दे दिया। और उससे यह कहा कि यदि आप इस हार को पहनोगी तो यह हार ही रहेगा परंतु अगर कोई दूसरा इसे पहनेगा तो उसके गले में यह सर्प बन जायेगा।इधर साहूकार का छोटा लड़का अपनी पत्नी को लेने के लिये आया तो उसकी पत्नी ने ईश्वर

से प्रार्थना की हे ईश्वर यदि मेरे पति को यह पता चलेगा के एक सर्प मेरा भाई है तो पता नही उसे कैसा लगेगा। इसलिये आप इस बांबी के स्थान पर महल बना दो। ईश्वर ने उसकी मनोकामना पूर्ण कर दी और जहाँ बाम्बी थी वहाँ एक सुंदर महल बन गया। साहूकार का बेटा वहाँ आया और दो दिन के लिये वहाँ रूका। उसका वहाँ बहुत आदर सत्कार हुआ। फिर जब उस लड़के ने अपनी पत्नी को लेकर जाने के लिए कहा तो उस धर्म भाई ने विदा करते समय बहुत सारे दास-दासी, हाथी-घोड़े, धन-दौलत देकर उन्हे विदा किया। मार्ग मे साहूकार के बेटे को याद आया कि वो वहाँ पर अपना कुछ सामान भूल आया है। उसने अपना सामान लाने के लिये वापस जाने के लिये कहा। तो उसकी स्त्री ने कहा ऐसा कौन सा कीमती सामान है जिसके लिये हम दुबारा लौटे। हम अभी अपने घर चलते है परंतु उसका पति नही माना। और वापस लौट कर उसी स्थान पर आ गया। परंतु अब वहाँ पर कोई महल नही था। वहाँ तो साँप की बांबी थी। यह देखकर साहूकार के बेटे को बहुत क्रोध आया और अपनी स्त्री से कहा कि तुमने मुझे भ्रम में रखा। तुमने मुझे धोखा दिया है। अब मुझे सच सच बता की यह क्या माजरा है? तब उसकी पत्नी ने कहा कि मेरे कोई भाई नही था, इसलिये सारी जेठानियाँ मेरा अपमान करती थी। मुझ पर ईश्वर ने दया दिखाई और एक सर्प मेरा धर्म भाई बनकर आया और यह उसी की बाम्बी है। मैंने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि दो दिन के लिये उस बाम्बी के स्थान पर एक महल हो जाये। जिससे किसी को इस बात का पता ना चलें। उसके पति को उसकी बात पर विश्वास हो गया और वो उसे लेकर अपने घर लौट आया। बहुत दिनों बाद उस साहूकार की छोटी बहू के पुत्र हुआ।

साहूकार की छोटी बहू ने अपनी ननद से पूछा की तुम्हे क्या चाहिये? तो उसकी ननद ने कहा की आप जो अपने मायके से नौलखा हार लाई हो मैं तो वही लूँगी। तब छोटी बहू ने उससे कहा कि तुम उसकी जगह कुछ भी ले लो, मैं खुशी से दे दूंगी। पर उसे मत लो यह मेरे पीहर का हार है। यदि इसे मेरे अतिरिक्त कोई दूसरा पहनेगा तो यह सर्प बन जाएगा। परंतु उसकी ननद नही मानी और बोली मैं तो यही हार लूँगी। तब उस बहू ने अपनी ननद को वो हार दे दिया। जैसे ही वो ननद उस हार को हाथ में लेकर देखने लगी तभी वो सर्प बन गया। यह देखकर ननद बहुत ड़र गई। तब छोटी बहू बोली कि मैंने आपसे पहले ही कहा था यह मेरे पीहर का हार है। फिर उसने अपनी ननद को अपनी सारी कहानी बताई। कैसे एक सर्प उसका धर्म भाई बनकर आया और उसने उसकी पीहर की कामना पूरी करी। यह सुनकर उन सभी को बड़ा अचम्भा हुआ। किस प्रकार सच्चे मन से ईश्वर से भैया पंचमी के दिन उसने जो माँगा ईश्वर ने उसे दिया। इसलिये जो भी श्रावण मास की कृष्ण पक्ष की पंचमी को

भैया पाँचें मनाएँ और विधि विधान से पूजा करें। साथ ही विनायक जी की कहानी कहें या सुनें। उन सबकी ईश्वर उसी प्रकार मनोकामना पूरी करे जैसे साहूकार की छोटी बहू की करी।

विनायक जी की कहानी : एक दिन एक लड़का विनायक जी से मिलने के लिये अपने घर से चल दिया और अपनी माँ से बोला की मैं विनायक जी से मिल कर ही वापस आऊँगा। चलते-चलते वो लड़का एक बियाबान जंगल मे पहुँच गया। उसे ऐसे देखकर विनायक जी को उस पर दया आ गई। उन्होने सोचा की ये लड़का मुझसे मिलने का नाम लेकर घर से निकला और कही जंगल में इसके साथ कुछ अनिष्ट ना हो जाये। यही सोचकर विनायक जी एक बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण कर उसके पास आये और बोले बेटा तू कहाँ और किसके पास जा रहा है? वह लड़का बोला कि मैं अपने घर से विनायक जी से मिलने के लिये निकला हूँ। मैं उन्ही के पास जा रहा हूँ। यह सुनकर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण किये विनायक जी बोले मैं ही विनायक हूँ। बोल तुझे क्या चाहिये। जो भी मांगना है मांग ले। परंतु एक बार ही मांगना। यह सुन कर उस लड़के ने कहा, "अन्न हो, धन हो। हाथी की सवारी हो, महल में गुलाब के फूल जैसी सुंदर स्त्री बैठी हो।" उसकी चतुराई देखकर विनायक जी प्रसन्न हो गये और बोले, "लड़के तूने तो सब कुछ ही मांग लिया। जा सब कुछ वैसा ही होगा जैसा तूने मांगा हैं।" वो लड़का फिर अपने घर आया तो उसने देखा कि एक सुन्दर सी बहु चौकी पर बैठी है और घर में बहुत सा धन आ गया है। उस लड़के ने अपनी माँ से कहा, "देख माँ मुझे विनायक जी ने कितना धन दिया है। यह सब मैंने विनायक जी से मांगा हैं। हे विनायक! जी महाराज जैसे आपने उस लड़के की सुनी वैसे सबकी सुनना और जैसा उसको दिया वैसा सबको देना। कहने सुनने वाले हमारे पूरे परिवार की मनोकामना पूर्ण करना।

बायना :- घर में आकर एक थाली में मोठ-चने, फल-मिठाई, रुपए रखकर और एक अन्य लोटे में जल लेकर बायना निकाले। यह बायना अपनी सास /जेठानी / ननद को देकर चरण स्पर्श करें और आशीर्वाद लें।

उद्यापन की विधि : नवविवाहिता स्त्री को शादी के पहले वर्ष अपने मायके में ही भैया पंचमी मनानी चाहिये। अच्छे से तैयार होकर सिर पर चुनरी ओढ़कर भैया पंचमी की विधि विधान से पूजा करके, कहानी सुनने के बाद एक थाली में भीगे हुए मोठ-चने रखकर साथ में फल-मिठाई, साड़ी-ब्लाउज और दक्षिणा रखकर बायना लेकर ससुराल जाकर अपनी सास या ननद या जेठानी को दें और उनके चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करें।

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत

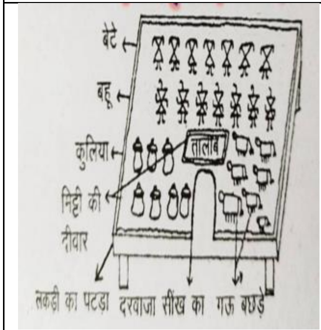
श्री कृष्ण राधा जी को नए वस्त्र माला पहना कर झूला में बिठाओ,
प्रसाद - खीरा, धनिया, शक्कर, खरबूजे के बीज पीस कर शक्कर मिला कर बनाओ
रात्रि में दही, दूध, शहद, घी, गंगाजल से स्नान करवाना है। चरणामृत में तुलसी मिलानी है।
देशी घी की तीन धागोवाली ज्योत जला कर आरती करनी है और प्रसाद ग्रहण करना है।
आरती और पूजा करने के बाद व्रत का पारण करना है।
खाने में दही, कट्टु का आटा की रोटी या पकोड़े या साबूदाना की खिचड़ी खानी है,

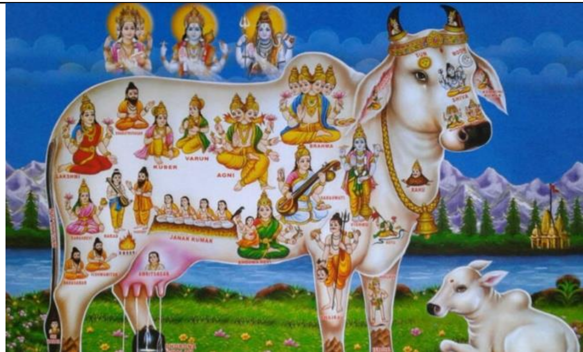
भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की गोगा नवमी

गोगा नवमी की सुबह स्नानादि करने के बाद गोगा देव की घोड़े पर सवार प्रतिमा लेकर घर आएं। कुंकुम, रोली, चावल, फूल, गंगाजल आदि से गोगादेव की पूजा करें। खीर, चूरमा, गुलगुले का भोग लगाएं एवं चने की दाल गोगा जी के घोड़े पर श्रद्धापूर्वक चढ़ाएं। गोगा देव की कथा श्रद्धा पूर्वक सुनें और मनोकामना पूर्ति के लिए प्रार्थना करें। कुछ स्थानों पर इस दिन सांप की बांबी की पूजा भी की जाती है।

किवंदतियों के अनुसार, गोगा जी की माँ बाछल देवी की कोई संतान हीं थी। काफी प्रयास के बाद भी जब उन्हें संतान नहीं हुई तो वे निराश हो गई। तब एक दिन गोगामेड़ी में गुरु गोरखनाथ तपस्या करने आए। बाछलदेवी गुरु गोरखनाथ के पास गई और अपनी परेशानी बताई। गुरु गोरखनाथ ने उन्हें एक फल खाने को दिया और पुत्रवती होने का आशीर्वाद देते हुए कहा कि " तेरा पुत्र वीर तथा नागों को वश में करने वाला तथा सिद्धों का शिरोमणि होगा। जब बाछल देवी को पुत्र हुआ तो उन्होंने उसका नाम गुग्गा रखा। बाद में इन्हें गोगा देव के नाम से जाना जाने लगा। ये गुरु गोरखनाथ के परम शिष्य थे। इनका नाम लेने से सर्प कोई हानि नहीं पहुंचाते।

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की द्वादशी तिथि बछ बारस (गोवत्स द्वादशी)







पूजा विधि : 1. प्रात:काल स्नानादि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर महिलाएं गाय के पैरों की मिट्टी से मस्तक पर तिलक के बाद गौमाता की विधिवत पूजा करें। बछ बारस व्रत में महिलाएं गाय और बछड़ों की पूजा करती हैं, इसलिए इसे गोवत्स द्वादशी भी कहते हैं। यह पर्व महिलाएं सुपुत्र प्राप्ति और उसकी मंगल कामना (सुरक्षा) के लिए करती है।

2. एक थाली में पूजन करने के लिए चने, मोठ (पूर्व रात को भीगे हुए मोठ और चने), खीरा, केला, हल्दी, हरी दूब, दही, चीनी, चढ़ाने के लिये रूपये और चाँदी का सिक्का रखें। एक कलश में कच्चा दूध और पानी मिला भरें। पूजा के लिये रखी सामग्री केला, खीरा, चीनी और रूपये भी पाटे पर चढ़ायें। मिट्टी से बनाये गये गायों एवं बछड़ों के हल्दी से टीका करें। फिर हल्दी से स्वयं के माथे पर भी बिंदी लगाये।

3. मिट्टी व गोबर से बनी तलैया को अच्छी तरह सजाकर (भीगी हुई मिट्टी से सात पुत्र, सात बहु, सात गाय, सात बछड़े, सात भगोने, उनके ढक्कन और एक तालाब लकड़ी के पाटे पर बनायें। उसके बीच में एक गोल मिटटी की बावडी बनाते है), मिटटी की बावडी को कच्चा दूध दूध, दही और पानी से भर देते है. उसकी कुमकुम, मौली, धूप दीप प्रज्वलित कर पूजा करते हैं ।

4. इसके बाद पहले (गोवत्स द्वादशी) की कहानी कहें या सुनें। कहानी कहते हुये या सुनते हुये हाथ में लेकर चनों को छीलते रहें। साथ में बिंदायक जी की कहानी भी सुने और जब कहानी समाप्त हो जाये तब उन्हें (चनों को) मिट्टी के बनाये भगोनों में चढ़ाये और कुछ को चौकी पर बनें मिट्टी के तालाब में भी चढ़ायें। फिर उस घर की सास-बहू या देवरानी-जेठानी एकसाथ मिलकर हाथ में चाँदी का सिक्का और हरी दूब लेकर बचा हुआ जल उस पाटे पर चढ़ा दें। फिर उसको सुखाने के लिये धूप में रख दें। सूखने के बाद उस मिट्टी को किसी नदी या बहते हुये जल में प्रवाहित करा दें। और पाटा किसी कामवाली या गरीब स्त्री को दे दें। परात में इकट्ठा किये जल को सभी महिलायें मिलकर सूरज भगवान को चढ़ा दें।

5. इसके बाद अपने दाहिने हाथ पर दो और आधा छिला हुआ चना-मोठ, दूध, दही, चीनी रखें और बायें हाथ पर एक और आधा छिला हुआ चना, मोठ, दूध, दही, चीनी रखें। फिर बायें हाथ पर रखा सामान खाले और दाहिने हाथ वाली सामग्री को अपने पीछे उछाल दें।

6. बायना :- एक थाली में मिनशने के लिये भीगे चने, मोंठ, पैसे, बेसन के लड्डू और फल रखें। फिर हाथ में पानी लेकर उसे मिनश कर बायना अपनी सास या जेठानी या किसी मंदिर में दे दें।

7. बछबारस पर सिर्फ पूजन किया जाता है, परंतु व्रत नही किया जाता। जो महिलायें ये पूजन करती है वो इस दिन गाय के दूध से बनी वस्तुयें, गेहूँ, जौ और चावल का सेवन नहीं करती। बेसन, मूंग आदि से बनी वस्तुओं का सेवन करती हैं। गाय और बछड़े का पूजन किया जाता है। भारतीय धार्मिक शास्त्रों के अनुसार बछ बारस पर्व के कुछ नियम इस प्रकार हैं –

- इस दिन गाय का दूध और उससे बने पदार्थ जैसे दही, मक्खन, घी आदि का उपयोग नहीं किया जाता, केवल भैंस या बकरी का दूध ही उपयोग में लिया जाता है।
- गेहूँ तथा इनसे बने खाद्य पदार्थ नहीं खाये जाते। भोजन में चाकू से कटी हुई किसी भी चीज का सेवन नहीं करते है।
- इस दिन भोजन में बेसन से बने आहार जैसे कढ़ी, पकोड़ी, भजिये आदि तथा मक्के, बाजरे, ज्वार आदि की रोटी तथा बेसन से बनी मिठाई का उपयोग किया जाता है। घरों में विशेष कर बाजरे की रोटी जिसे सोगरा कहा जाता है और अंकुरित अनाज (चना, मोठ, मूंग, मटर) की सब्जी बनाई जाती है।

उद्यापन : बछबारस (गोवत्स द्वादशी) का उद्यापन भी किया जाता हैं। औगद्वादश (बछबारस) का उद्यापन तब किया जाता है जब जिस घर में पुत्र का जन्म होता है या बेटे का विवाह होता है। पुत्र के विवाह या जन्म से एक वर्ष के भीतर इसका उद्यापन किया जाता हैं।

उद्यापन के लिये एक पाटे पर मिट्टी से बनी चौदह गाय, चौदह बछड़े और सात भगोने (ढ़क्कन के साथ) बना कर रखें। फिर एक बड़ा सा थाल लेकर उसमें चौदह ढ़ेरी बनाये। ढ़ेरी में चने, मोठ, एक खीरा, एक बेसन का लड्डू और दक्षिणा रखें। साथ में एक बायने में साड़ी-ब्लाउज, पैर छुआई के पैसे, मिठाई और फल रखकर मिनशकर बायना अपनी सास या जेठानी को चरण छूकर दें। उन चौदह ढ़ेरियों में से एक-एक ढ़ेरी अपने परिवार वालों और पड़ोसियों के यहाँ भिजवा दें। जिस साल उद्यापन करते है उस साल हर वर्ष की भांति एक तो साधारण बायना निकाला जाता है और दूसरा साड़ी ब्लाउज, पैर छूआई के पैसे, चने-मोठ, खीरा और मिठाई (लड्डू) वाला उद्यापन का बायना निकाला जाता हैं।

पौराणिक कथा : बहुत समय पहले की बात है एक गांव में एक साहूकार अपने सात बेटों और पोतों के साथ रहता था. उस साहूकार ने गांव में एक तालाब बनवाया था, लेकिन बारह सालों तक वो तालाब नही भरा था. तालाब नही भरने का कारण पूछने के लिए उसने पंडितों को बुलाया. पंडितों ने कहा कि इसमें पानी तभी भरेगा जब तुम या तो अपने बड़े बेटे या अपने बड़े पोते की बलि दोगे. तब साहूकार ने अपने बड़ी बहु को तो पीहर भेज दिया और पीछे से अपने बड़े पोते की बलि दे दी. इतने में गरजते बरसते बादल आये और तालाब पूरा भर गया. इसके बाद बछबारस आयी और सभी ने कहा की, अपना तालाब पूरा भर गया है इसकी पूजा करने चलो. बड़े बेटे की पत्नी भी पीहर से तालाब पूजने आ गयी थी. तालाब पूजने के बाद वह अपने बच्चो से प्यार करने लगी तभी उसने बड़े बेटे के बारे में पूछा. तभी तालाब में से मिटटी में लिपटा हुआ उसका बड़ा बेटा निकला और बोला की मां मुझे भी तो प्यार करो. तब सास बहु एक दुसरे को देखने लगी. सास ने बहु को बलि देने वाली सारी बात बता दी. फिर सास ने कहा की बछबारस माता ने हमारी लाज रख ली और हमारा बच्चा वापस दे दिया. साहूकार अपने परिवार के साथ तालाब की पूजा करने गया. वह दासी से बोल गया था की **गेहुला (**गेहू के धान) **को पका लेना**. दासी समझ नही पाई. दरअसल गेहुला (गाय नामक बछड़े) को ही पका लिया. तालाब की पूजा करने के बाद जब वह वापस घर लौटे तो उन्होंने देखा बछड़ा नही था. साहूकार ने दासी से पूछा की बछड़ा कहा है तो दासी ने कहा कि “आपने ही तो उसे पकाने को कहा था. साहूकार ने कहा की, एक पाप तो अभी उतरा ही है तुमने दूसरा पाप कर दिया. साहूकार ने पका हुआ बछड़ा मिटटी में दबा दिया. शाम को गाय

वापस लौटी तो वह अपने बछड़े को ढूंढने लगी और फिर मिटटी खोदने लगी. तभी मिटटी में से बछड़ा निकल गया. साहूकार को पता चला तो वह भी बछड़े को देखने गया. उसने देखा कि बछड़ा गाय का दूध पीने में व्यस्त था. तब साहूकार ने पूरे गांव में यह बात फैलाई कि हर बेटे की मां को बछबारस का व्रत करना चाहिए और तालाब पूजना चाहिए. हे बछबारस माता! जैसे साहूकार की बहु को दिया वैसा कहानी कहते सुनते ही सभी की मनोकामना पूर्ण करना.

गणेश जी की पौराणिक कथा : भगवान विष्णु और लक्ष्मीजी का विवाह होने जा रहा था। भगवान विष्णु के सभी देवतओं की सभा बुलाई। सभी देवता सभा में उपस्थित हो गये। वहाँ पर विष्णु जी के विवाह में जाने के लिये चर्चा होने लगी। सभी देवता विवाह में जाने के तैयार हो गये और बोले कि हम सब तो चलेंगे परंतु गणेश जी को नही ले जायेंगे। विष्णु जी देवताओं से गणेश जी को ना ले जाने का कारण पूछा तो देवता कहने लगे, प्रभु गणेश जी को बहुत भूख लगती है, उनको तो नाश्ते में ही 40 किलो मूंग, 50 किलो चावल, बहुत सा घी और ढ़ेर सारे लड्डू चहिये होते हैं। और फिर उसके बाद इससे भी अधिक मात्रा में उनको भोजन चाहियेगा। इसके अतिरिक्त उनका मस्तक हाथी का है, बड़े- बड़े कान है, सूंड़ है और उनक शरीर भी भारी हैं। उनको साथ लेकर जायेंगे तो वहाँ की सभी स्त्रियाँ क्या कहेंगी। उनको तो यहाँ रहकर रखवाली करने के लिये छोड़ देते हैं। सब गणेश जी को घर पर छोड़कर विष्णु जी की बारात में चले गये। नारद जी गणेश जी के पास आये और बोले गणेश जी यह तो आपका बहुत बड़ा अपमान हैं, सब तो बारात में चले गये और आपको यहाँ घर की रखवाली के लिए छोड़ दिया। सब देवताओं को ऐसा लगता था कि आपको ले जाने से बारात अच्छी नही लगेगी, इसलिए आपको नहीं लेकर गये। गणेशजी ने नारद जी से पूछा – देवर्षि! अब मुझे क्या करना चाहिये? तब नारदजी ने कहा – आप अपने मूषक से कहो की धरती को थोथी कर दे। गणेश जी ने मूषक को धरती थोथी करने का आदेश दे दिया। धरती के थोथी होने से भगवान विष्णु के रथ का पहिया धरती में धंस गया। सभी ने रथ को निकालने का प्रयास किया लेकिन सफल ना हो सके। तब पहिया निकालने के लिये एक बढ़ई को बुलाया गया। उसने काम शुरू करने से पहले बोला – जय बिन्दायक जी की। जय हो गणेश जी की। तभी देवताओं में से किसी ने पूछा कि तूने गणेश जी को क्यों याद किया? तब बढ़ई ने कहा कि गणेश जी को स्मरण करे बिना तो कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। तब वहाँ उपस्थित देवताओं में से किसी ने कहा कि हम तो गणेश जी को घर पर ही छोड़ कर आये हैं। फिर सभी गणेशजी को बुलाने के लिये वापस गये। फिर पहले गणेश जी का विवाह रिद्धि-सिद्धि से हुआ। उसके बाद में विष्णुजी ने लक्ष्मी जी से विवाह किया। हे गणेश जी महाराज! जैसे आपने भगवान के कार्य सिद्ध किए वैसे सबके करना।

श्रीकृष्ण की छठी
भाद्रपद मास कृष्ण जन्माष्टमी के 6 दिन बाद

श्रीकृष्ण की छठी पर कढ़ी का भोग लगाने की परंपरा है. जन्माष्टमी के 6 दिन बाद लड्डू गोपाल को कढ़ी चावल का भोग अर्पित किया जाता है. यह भोग भगवान को प्रिय है और भक्तिभाव का प्रतीक है.

भाद्रपद मास की दर्श अमावस्या (पितरों का दिन)

पितरों के निमित स्थान पर २ मिटटी की कुज्जीया, कच्ची दूध की लस्सी, 4 पूड़े, गुलगुले (कार्तिक अमावस्या पर 5 मिठाई), बताशे, कलावा, मेहँदी, अन्न, और तिल का दान, ३ धागो वाले- देसी घी का 02 दीप-दान , ७ बार मिटटी निकालते है। फिर ही भोजन करना है।

पितरों की पूजा घर में : ३ धागो वाले, देशी घी के ०२ दीपक जलाने हैं , गेंहू के मीठे चीले (२ या 4), गेंहू के गुलगुले (७ या ११) बना कर मेहँदी से टीका करना है। सिर ढके, दक्षिणमुखी बैठ कर, ॐ सर्व पितृ-देवताभ्यो नमः कहते हुए , कच्चे दूध और काले तिल को पानी में मिला कर दाहिने हाथ पर गिराते हुए अंगूठे से साइड में होते हुए मिटटी में, शिवलिंग के पास छोड़ना हैं। ब्राह्मण हो तो उसको खाना खिला कर, फल और दक्षिणा के साथ विदा करना हैं। गेंहू के मीठे चीले , गेंहू के गुलगुले गौ को खिला आवें। फिर ही भोजन करना है। इस दिन **श्राद्ध, तर्पण और दान** करने से पितृ तृप्त होकर आशीर्वाद देते हैं। अमावस्या की रात्रि ग्रहों और चंद्रमा की ऊर्जा का प्रभाव अधिक रहता है। इससे व्यक्ति के मनोभाव, क्रोध और मानसिक स्थिति पर असर पड़ सकता है।दर्श अमावस्या का धार्मिक स्नान और दान पुण्य अत्यंत फलदायी माना गया है। पूजा विधि एवं धार्मिक कार्य : प्रातः स्नान के पश्चात गंगा, यमुना या किसी पवित्र नदी में स्नान करना श्रेष्ठ माना गया है। घर पर पूजा स्थान में दीप प्रज्वलित करें और पितरों को जल अर्पित करें। दान-पुण्य करें – विशेषकर अन्न, वस्त्र और तिल का दान। भगवान विष्णु व भगवान शिव की पूजा करें। शाम को दीपदान करें।

भाद्रपद मास की अमावस्या को सती (पिठोरी) अमावस्या

यह पर्व दक्ष पुत्री शिव पत्नी देवी सती, जालंधर पत्नी वृंदा और अन्य सती माताओं को याद करने के लिए मनाया जाने वाला पर्व है।






सती माता जी का चित्र कागज़ पर या पाटे पर बना कर उस पर मौली के २ धागों की माला मेहँदी से चिपकाएं . कच्ची जमीन में एक पानी का जोहड़ बना ले या थाली में या चित्र पर निचे ही 13 कुमकुम के टीके, 13 मेहँदी के टीके, 13 काजल के टीके लगाने हैं। माता को दूध का छींटा दे , कुमकुम और मेंहदी से तिलक करें। एक खुले मुँह वाली छोटी मटकी में गेंहू डालें , उसपर एक सिक्का रख कर , एक दिए में दीपक प्रज्वलित करें, दीपक के चारों और मौली के १३(गोल टुकड़े) रखें ।

फिर सिर ढक कर सती माता और सतवंतिओं माता का ध्यान करें [सतिओ और सतवंतिओं मेरे कुल की रखना लाज, श्रद्धा से हम माथा टेकते है, सारे कुल के साथ]

भोग : गेंहू के मीठे चीले (७,९,११ या १३), गेंहू के मीठीं छोटी टिक्किया(७,९,११ या १३), नारियल के टुकड़े (७,९,११ या १३), हलवे की २ बर्फी । छोटी लड़की को खाना खिलाएं और दक्षिणा दें या किसी गौ को सारा भोग दाल आवें। उसके बाद ही भोजन करना है।

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार -महादेव का धागा

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार, (रात को चने भिगो कर रखने है), आटे का गणेश बना कर, ४ ताने वाले, ४ चने के दाने , 4 धागे , ४ गांठे - महादेव का धागा बांधने है। ४ बार मिटटी निकालनी है । सुबह धागा बाँधने के बाद आटा, भीगे चने गौ को देने हैं।

मार्गशीर्ष मास (अगहन मास) के शुक्ल पक्ष **के पहले या दुसरे सोमवार को हलवा बना कर गौ को देकर महादेव का धागा खोलना हैं । धागा खोलने वाले दिन ज्वार के आटा की चूरी या रोटी खानी है, गेंहू या चावल से बनी कोई वस्तु नहीं खानी हैं। श्रद्धा पूर्वक महादेव का धागा बाँधने से सर्व इच्छाओं की पूर्ती होती है, दूध वाले को दूध, धन वाले को धन संतान प्राप्ति होती है।**

पौराणिक कथा : एक बार की बात है, एक निर्धन ब्राह्मण शिवभक्त था, जो भगवान शिव की पूजा में लीन रहता था। उसकी भक्ति इतनी गहरी थी कि वह अपने जीवन की हर कठिनाई को भगवान शिव की कृपा मानकर सहन करता था। एक दिन, ब्राह्मण ने भगवान शिव से प्रार्थना की, "हे महादेव! मुझे ऐसा कोई उपाय बताइए जिससे मैं आपकी कृपा सदैव अपने साथ रख सकूं।" उसकी सच्ची भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए और उसे एक पवित्र धागा दिया। उन्होंने कहा, "यह धागा मेरी शक्ति और आशीर्वाद से भरा हुआ है। इसे अपने हाथ में बांध लो, यह तुम्हारी हर विपत्ति से रक्षा करेगा।" ब्राह्मण ने उस धागे को श्रद्धा से अपने हाथ में बांध लिया। जैसे ही उसने धागा बांधा, उसके जीवन में सकारात्मक बदलाव आने लगे। उसकी गरीबी दूर हो गई, और वह सुख-समृद्धि से भर गया। लेकिन उसने कभी अपनी भक्ति नहीं छोड़ी और हमेशा भगवान शिव का आभार व्यक्त करता रहा। यह कथा हमें सिखाती है कि सच्ची भक्ति और विश्वास से भगवान की कृपा प्राप्त की जा सकती है। महादेव का धागा विश्वास का प्रतीक है, जो हमें हर कठिनाई से उबार सकता है।

पौराणिक कथा : एक राजा रानी के संतान नहीं थी, एक दासी ने रानी को भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार को व्रत रख कर ४ ताने वाले, 4 धागे , ४ गांठे - महादेव का धागा बांधने को दिया। रानी ने राजा को जब महादेव के धागे के बारे बताया तो राजा ने सोचा की वो सदा सत्कर्म करता है फिर भी संतान नही है तो ये धागा बाँड्ने पर क्या होगा , ऐसा सोच कर, दासी की बात पर विश्वास न करके राजा ने वह धागा बाहर फेंक दिया । वो धागा एक सूखी बेरी पर गिरा और बेरी का वृक्ष तुरंत ही हरा भरा हो गया। अब राजा रानी ने विश्वास कर के, समय पर धागा बाँध लेती है। रानी को गर्भ ठहर गया । दासी ने उनको बताया था कि ४ महीने बाद मार्गशीर्ष मास (अगहन मास) के शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार या दुसरे सोमवार को हलवा बना कर गौ को देकर महादेव का धागा खोलना हैं । धागा खोलने वाले दिन ज्वार के आटा की चूरी या रोटी खानी है , गेंहू या चावल से बनी कोई वस्तु नहीं खानी हैं।

मार्गशीर्ष मास (अगहन मास) के शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार को रानी हलवा बना कर गौ को देकर महादेव का धागा खोलती है परन्तु भूल कर राजा को गेंहू की रोटी भेज देती है। जब राजा उस डिब्बे को खोलता है तो उसमें कीड़े निकलते हैं। राजा का राज्य छीन लिया जाता हैं। राजा रानी एक मित्र के पास जाते हैं, जिस कमरे में वो रुकते हैं , वहां मित्र कि पत्नी कि सोने की माला, कमरे में एक खूँटी ही निगल जाती हैं। राजा रानी बाहर नदी में जाते हैं। मछेरा उनको एक मछली पका कर देता है। परन्तु राजा को हैरानी होती हैं जब पकी हुई मछली उछल कर पानी में कूद जाती हैं। राजा रानी को अपनी गलती का अहसास होता हैं। राजा दूर प्रदेश में काम करने निकल पड़ता है।

राजा रानी एक महात्मा के आश्रम में जा कर सारी घटना बताते हैं, वो महात्मा (स्वयं शिव) समय आने पर भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार को व्रत रख कर ४ ताने वाले, 4 धागे , ४ गांठे - महादेव का धागा बांधते उनको महादेव का धागा बांधते हैं। उनका राज्य उनको वापिस मिल जाता हैं , गर्भ से एक संतान की उत्पति होती है। उनके मित्र के घर में भी खूँटी सोने की माला उगल देती है। समय पर वे मार्गशीर्ष मास (अगहन मास) के शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार को रानी हलवा बना कर गौ को देकर महादेव का धागा खोलते हैं और ज्वार की चूरी या रोटी बना कर व्रत का पारण करते है। यह कथा भगवान शिव और उनके भक्तों के बीच के अटूट प्रेम और विश्वास को दर्शाती है।

भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की गणेश चतुर्थी

विघ्नहर्ता भगवान गणेश को सुख, समृद्धि और वैभव का प्रतीक माना जाता है. घर में भगवान गणेश की मूर्ति रखने से किसी प्रकार का क्लेश पैदा नहीं होता और घर सदा खुशियों से भरा रहता है. वास्तु के अनुसार घर में गणपति की मूर्ति स्थापित करने से पहले कई तरह की सावधानियां बरतनी चाहिए. अपने पूजा घर में गणेश जी की केवल एक ही मूर्ति रखें. दो या ज्यादा गणेश जी रखने पर उनकी पत्नी रिद्धि-सिद्धि नाराज होती हैं.

घर में क्रिस्टल के गणेश जी रखने से सारे वास्तु दोष कट जाते हैं. वहीं हल्दी से बने गणेश जी आपके भाग्य को चमकाते हैं. गणेश भगवान को पीपल, आम और नीम के पेड़ के नीचे रखना काफी शुभ माना जाता है. ऐसा करने से घर में सकारात्मकता आती है. अगर आपके घर में या बाहर पेड़ हो तो आप गणेश जी को वहां स्थापित कर सकते हैं. गणपति की मूर्ति कभी भी घर के उस कोने में ना रहे, जिस तरफ सोते समय आपके पैर रहते हों. सीढ़ियों के पास या नीचे भी गणेश को ना रखें क्योंकि उन्हीं सीढ़ियों पर आप चलते हैं और उस जगह पर अंधेरा भी होता है. ऐसा करना भगवान गणेश का अपमान होगा.

गणपति स्थापना पूजन सामग्री : गणेश मूर्ति (मिट्टी, स्वर्ण, चांदी, पीतल आदि की हो सकती है) हल्दी, कुमकुम, सुपारी, सिंदूर, गुलाल, लौंग, लाल रंग का वस्त्र, जनेऊ का जोड़ा, दूर्वा, कपूर, दीपक, धूप, पंचामृत (दूध, दही, शहद, घी, शक्कर), मौली (रक्षा सूत्र), फल, पंचमेवा, गंगाजल, कलश, नारियल, लाल चंदन, मोदक (गणेश जी का प्रिय भोग), अष्टगंध, दही, शहद, गाय का घी, गुलाब जल, दीपक-बाती, केले के पत्ते, चांदी का सिक्का, गणेश जी के लिए पुष्प-माला

गणपति स्थापना से पहले क्या करना है?

- सबसे पहले एक बर्तन में जल लेकर आएं। जहां भी आपने पूजा के लिए मंडप बनाया है, वहां चटाई बिछाकर बैठ जाएं।
- सबसे पहले हाथ में कुशा और जल लें, फिर मंत्र बोलें- 'ओम अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोअपी वा। य: स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाहान्तर: शुचि:।।'
- फिर जल को अपने ऊपर और पूजा की सभी वस्तुओं पर छिड़कें। इसके बाद तीन बार कुल्ला करें।
- हाथ में जल लेकर 'ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः ॐ हृषीकेशाय नमः' का जाप करें।
- ऐसा कहते हुए तीन बार हाथ में जल लेकर मुंह पर डालें और फिर हाथ धो लें।

गणपति स्थापना विधि

1. अपने घर में हमेशा वही गणेश लाएं जिनकी सूंड बायीं तरफ झुकी हुई हो। मूर्ति रखते समय ध्यान दें कि भगवान के दोनों पैर जमीन को स्पर्श कर रहे हों. इससे सफलता आपके कदम चूमेगी. वही मूर्ति घर लाएं जिनमें मोदक और गणेश जी का वाहन चूहा भी हो ।गणेश जी को लकड़ी की किसी टेबल पर भी रख सकते हैं और उनके चरणों में एक कटोरी चावल चढ़ा देने से आपका भाग्य आपका साथ देने लगेगा । बैठे हुए गणेश जी की सही जगह आपके घर में है. इससे घर में सुख-समृद्धि आती है. गाय के गोबर से बने गणेश जी काफी शुभ माने जाते हैं. इन्हें घर में रखने से घर में दुख कभी नहीं आता. अगर आप अपने ऑफिस या काम करने की जगह पर गणेश जी की मूर्ति रखना चाहते हैं, तो हमेशा ध्यान रहे कि ये भगवान गणेश की बैठी हुई मुद्रा में ना हों.

2. **दिशा का रखें ध्यान- भगवान गणेश की मूर्ति को उत्तर-पूर्व कोने में स्थापित करना चाहिए।**

3. भगवान गणेश के 21 नामों का जप करें : ॐ गणञ्जयाय नमः, ॐ गं गणपतये नमः, ॐ गं हेरम्बाय नमः, ॐ गं धरणीधराय नमः, ॐ गं महागणपतये नमः, ॐ गं लक्षप्रदाय नमः, ॐ गं क्षिप्रप्रसादनाय नमः, ॐ गं अमोघसिद्धये नमः, ॐ गं अमृताय नमः, ॐ गं मंत्राय नमः, ॐ गं चिंतामणये नमः,ॐ गं निधये नमः, ॐ गं सुमङ्गलाय नमः, ॐ गं बीजाय नमः, ॐ गं आशापूरकाय नमः, ॐ गं वरदाय नमः, ॐ गं शिवाय नमः, ॐ गं काश्यपाय नमः, ॐ गं नन्दनाय नमः, ॐ गं वाचासिद्धाय नमः, ॐ गं ढुण्ढिविनायकाय नमः

4. भगवान गणेश की मूर्ति को आसन पर स्थापित करने से पहले उसे अच्छी तरह से साफ करें और गंगाजल छिड़क कर पवित्र करें। आसन को शुद्ध करने के बाद लाल कपड़ा बिछाएं और उस पर थोड़ी सी मिट्टी या अक्षत रखें। इसके बाद ही उस आसन पर गणपति बप्पा को शुद्ध हाथों से स्थापित करें। भगवान श्री गणेश को गंगाजल से स्नान कराएं। गणपति बप्पा की मूर्ति के बगल में ऋद्धि-सिद्धि रखें, इनकी जगह आप उनके स्वरूप में सुपारी भी रख सकते हैं। भगवान की मूर्ति के दाहिनी ओर कलश रखें और उसमें जल भरें। इसके बाद हाथ में फूल और अक्षत लेकर गणपति बप्पा का ध्यान करें। गणपति बप्पा को फल, फूल और मिठाई अर्पित करें। उनकी पूजा में ॐ गं गणपतये नमः मंत्र का जाप करें। पूजा के अंत में भगवान श्री गणेश की आरती करें। आरती के बाद भोग लगाएं और प्रसाद बांटें।

गणपति विसर्जन

हिन्दू शास्त्रों के मतानुसार, महर्षि वेदव्यास ने गणेश चतुर्थी से गणपति को महाभारत की कथा सुनाना आरंभ किया था। लगातार दस दिनों तक वेदव्यास आंखे बंद कर गणपति को कथा सुनाते रहे और गणपति उसे बिना आराम किए लगातार लिखते रहे। दस दिनों के बाद जब महाभारत की कथा पूरी हुई तो वेदव्यास जी ने आंखे खोलीं, तो देखा कि लगातार लिखते हुए गणपति के शरीर का तापमान बढ़ गया था, तब गणपति के तापमान को कम करने के लिए वेदव्यास ने तालाब में गणपति को स्नान कराया। जिसके बाद उनके शरीर का तापमान सामान्य हुआ। जिस दिन उन्होंने गणपति को स्नान कराया था, उस दिन अनंत चर्तुदशी थी, इसलिए इस दिन को गणेश प्रतिमा का विसर्जन किया जाने लगा।

घर पर गणपति विसर्जन की विधि:

उसके लिए एक पात्र में पानी भरकर उसमें गणेश जी की प्रतिमा को विसर्जित करें और उसके बाद उस मिट्टी का प्रयोग पौधों में किया जा सकता है। लेकिन इस जल को तुलसी में न चढ़ाएं क्योंकि तुलसी गणपति पूजन में वर्जित होती है।

मंत्र: आवाह्न न जानामि न जानामि विसर्जनम। पूजां च न जानामि क्षमस्व परमेश्वरम।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनम भक्तिहीनम सुरेश्वर। यत्पूजितं मयादेव परिपूर्ण तदस्तु मे।।

भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की गणेश चतुर्थी की रात्रि को चंद्रमा देखना निषेध है।

भगवान श्री कृष्ण को भी गणेश चतुर्थी की रात्रि के चंद्र दर्शन करने पर स्यमन्तक मणि की चोरी का मिथ्या कलंक लगा था। गणेश चतुर्थी के चंद्र- दर्शन के कलंक को दूर करने के लिए स्यमन्तक मणि की कथा सुननी चाहिए।

स्यमंतक मणि कथा : द्वारिका पुरी में निवास करने वाले सत्राजित नाम के एक यदुवंशी ने सूर्य भगवान को तप से प्रसन्न कर स्यमंतक नाम की मणि प्राप्त की थी। वह मणि प्रतिदिन नित्य आठ भार सोना स्वर्ण प्रदान करती थी। उसके प्रभाव से पूरे राष्ट्र में रोग, अनावृष्टि यानी बरसात न होना, सर्प, अग्नि, चोर आदि का डर नहीं रहता था। एक दिन सत्राजित स्यमंतक मणि को गले

में पहनकर सभा में श्री कृष्ण से मिलने गए। श्रीकृष्ण ने सोचा कि कितना अच्छा होता यह मणि अगर राजा उग्रसेन के पास होती। श्रीकृष्ण ने उस मणि को प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। सत्राजित ने वह मणि श्रीकृष्ण को न देकर अपने भाई प्रसेनजित को दे दी। एक दिन प्रसेनजित घोड़े पर चढ़कर शिकार के लिए गया। वहाँ एक शेर ने उसे मार डाला और मणि ले ली। रीछों का राजा जामवन्त उस सिंह को मारकर मणि लेकर गुफा में चला गया। जब प्रसेनजित वापस नहीं लौटा तो सत्राजित् ने यह आशंका उठाई कि श्रीकृष्ण उस मणि को चाहते थे। इसलिए भाई प्रसेनजित को मारकर उन्होंने ही वह मणि ले ली होगी।

जब श्रीकृष्ण को यह मालूम पड़ा कि उन पर झूठा आरोप लग रहा है तो वे प्रसेनजित की तलाश में जंगल गए। वहाँ पर प्रसेनजित को शेर द्वारा मार डालना और शेर को रीछ द्वारा मारने के चिह्न उन्हें मिल गए। रीछ के पैरों की खोज करते-करते श्रीकृष्ण जामवन्त की गुफा पर पहुँचे और गुफा के भीतर चले गए। वहाँ उन्होंने देखा कि जामवन्त की पुत्री जाम्बन्ती उस मणि से खेल रही है।श्रीकृष्ण को देखते ही जामवन्त युद्ध के लिए तैयार हो गए। युद्ध छिड़ गया। गुफा के बाहर श्रीकृष्ण के साथियों ने उनकी सात दिन तक प्रतीक्षा की। फिर वे लोग उन्हें मर गया जानकर पश्चाताप करते हुए द्वारिकापुरी लौट गए। इधर इक्कीस दिन तक लगातार युद्ध करने पर भी जामवन्त श्रीकृष्ण को पराजित न कर सका। तब उसने सोचा, कहीं यह वह अवतार तो नहीं जिसके लिए मुझे रामचंद्रजी का वरदान मिला था। यह पुष्टि होने पर उसने अपनी कन्या का विवाह श्रीकृष्ण के साथ कर दिया और मणि दहेज में दे दी। श्रीकृष्ण जब मणि लेकर वापस आए तो सत्राजित अपने किए पर बहुत लज्जित हुआ। उसने अपनी पुत्री सत्यभामा का विवाह श्रीकृष्ण के साथ कर दिया।

एक बार भगवान श्रीकृष्ण बलरामजी के साथ हस्तिनापुर गए। उनके हस्तिनापुर चले जाने के बाद अक्रूर और कृतवर्मा ने शतधन्वा को स्यमंतक मणि छीनने के लिए उकसाया। शतधन्वा बड़े दुष्ट और पापी स्वभाव का मनुष्य था। अक्रूर और कृतवर्मा के बहकाने पर उसने लोभवश सोए हुए सत्राजित को मौत के घाट उतार दिया और मणि लेकर वहाँ से चला गया। शतधन्वा द्वारा अपने पिता के मारे जाने का समाचार सुनकर सत्यभामा शोकातुर होकर रोने लगी। फिर भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण कर उसने यह प्रतिज्ञा की कि जब तक श्रीकृष्ण शतधन्वा का वध नहीं कर देंगे, वह अपने पिता का दाह-संस्कार नहीं होने देगी। इसके बाद उसने हस्तिनापुर जाकर श्रीकृष्ण को सारी घटना से अवगत कराया। सत्राजित की मौत का समाचार जब श्रीकृष्ण को मिला तो वे उसी समय सत्यभामा और बलरामजी के साथ तत्काल द्वारिका पहुंचे। द्वारिका पहुँचकर उन्होंने शतधन्वा को बंदी बनाने का

आदेश दे दिया। जब शतधन्वा को ज्ञात हुआ कि श्रीकृष्ण ने उसे बंदी बनाने का आदेश दे दिया है तो वह भयभीत होकर कृतवर्मा और अक्रूर के पास गया और उनसे सहायता की प्रार्थना की। किंतु उन्होंने सहायता करने से इंकार कर दिया। तब उसने स्यमंतक मणि अक्रूर को सौंप दी और अश्व पर सवार होकर द्वारिका से भाग निकला। श्रीकृष्ण और बलराम को उसके भागने की सूचना मिल चुकी थी। अतः उसका वध करने के लिए वे रथ पर सवार होकर उसका पीछा करने लगे। उन्हें पीछे आते देख शतधन्वा भयभीत होकर अश्व से कूद गया और पैदल ही घने वन की ओर दौड़ने लगा। तब श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से उसका मस्तक धड़ से अलग कर दिया। इस प्रकार दुष्ट शतधन्वा का वध कर उन्होंने सत्यभामा की प्रतिज्ञा पूर्ण की। पर मणि उन्हें नहीं मिल पाई। इसके बाद उन्होंने भाई बन्धुओं के साथ अपने श्वसुर सत्राजित की वे सब और्ध्वदेहिक क्रियाएँ करवायीं, जिनसे मृतक प्राणी का परलोक सुधरता है। बलरामजी भी वहां पहुंचे। श्रीकृष्ण ने उन्हें बताया कि मणि इसके पास नहीं है। बलरामजी को विश्वास न हुआ। वे अप्रसन्न होकर विदर्भ चले गए। श्रीकृष्ण के द्वारिका लौटने पर लोगों ने उनका भारी अपमान किया। तत्काल यह समाचार फैल गया कि स्यमन्तक मणि के लोभ में श्रीकृष्ण ने अपने भाई को भी त्याग दिया। श्रीकृष्ण इस अकारण प्राप्त अपमान के शोक में डूबे थे कि सहसा वहां **नारदजी** आ गए।

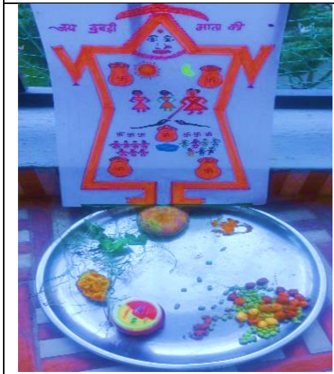
उन्होंने श्रीकृष्णजी को बताया- आपने भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी के चंद्रमा का दर्शन किया था। इसी कारण आपको इस तरह लांछित होना पड़ा है। श्रीकृष्ण ने पूछा- चौथ के चंद्रमा को ऐसा क्या हो गया है जिसके कारण उसके दर्शनमात्र से मनुष्य कलंकित होता है? तब नारदजी बोले- एक बार ब्रह्माजी ने चतुर्थी के दिन गणेशजी का व्रत किया था। गणेशजी ने प्रकट होकर वर मांगने को कहा तो उन्होंने मांगा कि मुझे सृष्टि की रचना करने का मोह न हो। गणेशजी ज्यों ही 'तथास्तु' कहकर चलने लगे, उनके विचित्र व्यक्तित्व को देखकर चंद्रमा ने उपहास किया। इस पर गणेशजी ने रुष्ट होकर चंद्रमा को शाप दिया कि आज से कोई तुम्हारा मुख नहीं देखना चाहेगा। अक्रूर और कृतवर्मा ने शतधन्वा को सत्राजित के वध के लिए उत्तेजित किया था। इसलिए जब उन्होंने सुना कि भगवान श्रीकृष्ण ने शतधन्वा को मार डाला है, तब वे अत्यंत भयभीत होकर द्वारका से भाग खड़े हुए। अक्रूर के द्वारका से चले जाने पर द्वारकावासियों को बहुत प्रकार के अनिष्टों और अरिष्टों का सामना करना पड़ा।

भला, यह भी कभी सम्भव है कि जिन भगवान श्रीकृष्ण में समस्त ऋषि-मुनि निवास करते हैं, उनके निवासस्थान द्वारका में उनके रहते कोई उपद्रव खड़ा हो जाय। उस समय नगर के बड़े-बूढ़े लोगों ने कहा - 'एक बार काशी नरेश के राज्य में वर्षा नहीं हो रही

थी, सूखा पड़ गया था। तब उन्होंने अपने राज्य में आये हुए अक्रूर के पिता श्वफल्क को अपनी पुत्री गान्दिनी ब्याह दी। तब उस प्रदेश में वर्षा हुई। अक्रूर भी श्वफल्क के ही पुत्र हैं और इनका प्रभाव भी वैसा ही है। इसलिए जहाँ-जहाँ अक्रूर रहते हैं, वहाँ-वहाँ खूब वर्षा होती है तथा किसी प्रकार का कष्ट और महामारी आदि उपद्रव नहीं होते।' उन लोगों की बात सुनकर भगवान ने सोचा कि ' द्वारका के उपद्रव का यही कारण नहीं है' यह जानकर भी भगवान ने दूत भेजकर अक्रूर को ढुँढवाया और आने पर उनसे बातचीत की। भगवान ने उनका खूब स्वागत सत्कार किया और मीठी-मीठी प्रेम की बातें कहकर उनसे सम्भाषण किया। भगवान सबके चित्त का एक-एक संकल्प देखते रहते हैं। इसलिए उन्होंने मुस्कराते हुए अक्रूर से कहा - 'चाचा जी ! आप दान धर्म के पालक हैं। हमें यह बात पहले से ही मालूम है कि शतधन्वा आपके पास वह स्यमन्तक मणि छोड़ गया है, जो बड़ी ही प्रकाशमान और धन देने वाली है।

आप जानते ही हैं कि सत्राजित के कोई पुत्र नहीं है। इसलिए उनकी लड़की के लड़के – उनके नाती ही उन्हें तिलाँजली और पिण्डदान करेंगे, उनका ऋण चुकायेंगे और जो कुछ बच रहेगा उसके उत्तराधिकारी होंगे। इस प्रकार शास्त्रीय दृष्टि से यद्यपि स्यमन्तक मणि हमारे पुत्रों को ही मिलनी चाहिए, तथापि वह मणि आपके ही पास रहे। क्योंकि आप बड़े व्रतनिष्ठ और पवित्रात्मा हैं तथा दूसरों के लिए उस मणि को रखना अत्यन्त कठिन भी है। परन्तु हमारे सामने एक बहुत बड़ी कठिनाई यह आ गयी है कि हमारे बड़े भाई बलराम जी मणि के सम्बन्ध में मेरी बात का पूरा विश्वास नहीं करते। इसलिए महाभाग्यवान अक्रूर जी ! आप वह मणि दिखाकर हमारे इष्टमित्र – बलराम जी, सत्यभामा और जाम्बती का सन्देह दूर कर दीजिए और उनके हृदय में शान्ति का संचार कीजिए। हमें पता है कि उसी मणि के प्रताप से आजकल आप लगातार ही ऐसे यज्ञ करते रहते हैं, जिसमें सोने की वेदियाँ बनती हैं। जब भगवान श्रीकृष्ण ने इस प्रकार सान्तवना देकर उन्हें समझाया-बुझाया, तब अक्रूर जी ने वस्त्र में लपेटी हुई सूर्य के समान प्रकाशमान वह मणि निकाली और भगवान श्रीकृष्ण को दे दी। भगवान श्रीकृष्ण ने वह स्यमंतक मणि अपने जाति-भाईयों को दिखाकर अपना कलंक दूर कर दिया और उसे अपने पास रखने में समर्थ होने पर भी पुनः अक्रूर जी को लौटा दिया। सर्वशक्तिमान् सर्वव्यापक भगवान श्रीकृष्ण के पराक्रम से परिपूर्ण यह आख्यान समस्त पापों, अपराधों और कलंकों का मार्जन करने वाला तथा परम मंगलमय है। जो इसे पढ़ता, सुनता अथवा स्मरण करता है, वह हर प्रकार की अपकीर्ति और पापों से छूटकर शान्ति का अनुभव करता है।

भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष दुबड़ी सप्तमी, संतान सप्तमी व्रत (दूर्वाष्टमी)



भविष्य पुराण की कथा में यह उल्लेख मिलता है कि- जब देवताओं ने सागर मंथन किया, उस समय विष्णु भगवान ने अपनी पीठ पर 'मंदराचल' को धारण किया और उसकी रगड़ से भगवान के जो रोम उखड़ कर जल में गिरे, उनसे दूब उत्पन्न हुई तथा उस दूब पर देवताओं ने अमृत के कुंभ रखे थे, जिससे यह अजर-अमर हो गई। अत: दूब को अजर-अमर माना जाता है और दूबरी सातम के दिन यह व्रत संतान प्राप्ति, कुशलता और उन्नति के लिए किया जाता है। इस व्रत के दौरान शिव तथा गौरी की पूजा आराधना की जाती हैं। भाद्रपद सप्तमी के दिन माता-पिता दोनों या फिर दोनों में से कोई एक व्यक्ति संतान सप्तमी का व्रत रखकर पूजन कर सकता है। यह व्रत पुत्र प्राप्ति, पुत्र की रक्षा के लिए किया जाता है। माताएं देवी पार्वती का पूजन करके पुत्र प्राप्ति तथा उसके उत्तरोत्तर उन्नति का वरदान मांगती हैं।

पुराणों के अनुसार भाद्रपद शुक्ल सप्तमी के दिन ही संतान सप्तमी व्रत भी किया जाता है। इस व्रत को 'मुक्ताभरण' भी कहते हैं। इस व्रत का विधान दोपहर तक रहता है। धार्मिक मान्यतानुसार इस दिन भगवान शिव, माता पार्वती जांबवती, श्यामसुंदर तथा उनके बच्चे साम्ब की विधि-विधान से पूजा की जाती है। इसी दिन दूर्वा लेकर गणेश जी को गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप व नैवेद्य अर्पण करके दूर्वा चढ़ाना चाहिए। भाद्रपद मास की शुक्लपक्ष की अष्टमी तिथि के दिन दूर्वाष्टमी का व्रत एवं पूजन किया जाता हैं। इसे दूबड़ी आठे भी कहते हैं। यह दिन बहुत ही दुर्लभ और शुभ हैं। स्त्रियाँ दूबड़ी आठे का व्रत एवं पूजन अपने परिवार की मंगलकामना /सुरक्षा के लिये करती हैं। उनके कुल की वृद्धि हो और परिवार में खुशहाली हो इसके लिये महिलायें इस व्रत को करती हैं।

दूर्वाष्टमी व्रत एवं पूजन की विधि : दूर्वाष्टमी व्रत एवं पूजन के लिये एक दिन पूर्व मूंग, मोठ, चने एवं बाजरा भिगो कर रख दें। दूर्वाष्टमी के लिये भोजन बना कर रख लें। इस व्रत में ठंड़ा खाना खाया जाता हैं।

1. दूर्वाष्टमी के दिन प्रात:काल ही स्नानादि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर लाल रंग के स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
2. पूजा स्थान पर एक चौकी पर मिट्टी से सात बेटे, सात बहू, 5 ya सात कुज्यियाँ ढक्कन के साथ, एक नाग-नागिन और स्त्री की मूर्ति बनायें। झाड़ू की सींख का दरवाजा बनायें। साथ में एक तरफ सूरज एक तरफ चाँद बनाये।
3. पाटे की पूजा : जल के छींटे लगायें, रोली-चावल चढ़ायें। इसके बाद कच्चा दूध, आटा, घी और चीनी को मिला कर एक लोई बनायें और अर्पित करें।
4. तत्पश्चात् धूप-दीप जलाकर गंध, फूल, दूर्वा, खजूर, श्रीफल आदि चढ़ायें। पूजा करते समय इस मंत्र का जाप करते रहें –

त्वं दूर्वे अमृत जन्मासि वन्दिता व सुरसुरे:। सौभाग्यं संतति कृत्वा सर्वकार्यकरी भव ॥
यथा शाखाप्रशाखाभिविरस्त्रितासी महीतले। तथा ममामी संतानं देहि त्वमजरामरे ॥

5. इसके बाद 16 ताने वाले, 2 धागे , 16 गांठे का धागा बांधना है.
(पितृ पक्ष की सप्तमी को मिटटी निकालते है। हलवा बना कर गौ को देकर धागा खुलेगा)।

6. दूर्वाष्टमी की कथा कहे और सुनें। कथा कहते और सुनते समय भीगे हुये चने और मोठ छीलते रहें। फिर गणेश जी की कथा कहे या सुनें। बचा हुआ जल और दूध मिलाकर सूर्य भगवान को चढ़ा दें।

7. अलग से जल लेकर भीगे मूंग, मोठ, चने, बाजरे पर दक्षिणा रखकर बायना मिनस कर सासुजी को देकर उनके चरणस्पर्श करें।

8. पूजा करने और कथा सुनने के बाद भोजन किया जा सकता हैं। इस दिन ठंडा भोजन ही करें।

उद्यापन विधि

1. संकल्प: प्रातःकाल स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें। भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी का ध्यान करते हुए व्रत उद्यापन का संकल्प लें।

2. मंडप स्थापना: पूजा के लिए एक स्वच्छ स्थान पर मंडप बनाएं। मंडप में भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की मूर्ति या चित्र स्थापित करें।
3. पूजन सामग्री: दूर्वा (दूब घास), कलश, पंचामृत, फल, फूल, दीपक, धूप, मिठाई और नैवेद्य, पीला वस्त्र और दक्षिणा
4. पूजन विधि: भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी का पंचामृत से अभिषेक करें। दूर्वा अर्पित करें और विशेष मंत्रों का जाप करें। दीपक जलाकर आरती करें। नैवेद्य अर्पित करें।
5. हवन: यदि संभव हो, तो हवन करें। हवन में दूर्वा और घी का उपयोग करें।
6. ब्राह्मण भोजन और दक्षिणा :पूजा के बाद ब्राह्मणों को भोजन कराएं और दक्षिणा दें।
7. परिवार के साथ प्रसाद ग्रहण: अंत में, परिवार के सभी सदस्य प्रसाद ग्रहण करें और व्रत का समापन करें।उद्यापन विधि आपके व्रत को पूर्णता और भगवान की कृपा प्राप्त करने में सहायक होती है।जिस वर्ष घर में लड़की की शादी हो उस वर्ष उद्यापन करते हैं। पहले दिन लड़की मायके में आ जाती है, बायना निकाले। बाद ,ठण्ड़ा भोजन करें।
8. **लड़की की सास के लिए बायना (1)** भीगे मोठ, चने, के साथ लड्डू, फल और रुपये रखें।

लड़की की सास के लिए बायना (2) ढक्कन वाला भगोना, मोठ, चने, के साथ मिठाई, साड़ी-ब्लाऊज, फल लड्डू और रुपये यह बायने जब लड़की ससुराल जाये तो अपनी सास को देकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

दूर्वाष्टमी की कहानी : बहुत समय पहले एक नगर में एक साहूकार रहता था उसके सात पुत्र थे। साहूकर के बड़े पुत्र का विवाह सम्बंध तय हुआ। उसका विवाह दूर्वाष्टमी पर होना तय हुआ। साहूकर ने बड़ी धूम-धाम से अपने बेटे की बारात निकाली और विवाह के स्थान पर पहुँचे, किंतु दुर्भाग्यवश फेरों के समय ही सर्पदंश से उसकी मृत्यु हो गई। यह देखकर वहाँ उपस्थित लोगों में हड़कम्प मच गया। खुशी का माहौल शोक में बदल गया। दुर्भाग्य ने साहूकार का साथ नही छोड़ा और एक के बाद एक उसके विवाह योग्य छ: पुत्रों की मृत्यु उनकी विवाह की वेदी पर ही हो गई।

साहूकार ने अपने सबसे छोटे पुत्र के विवाह का विचार ही त्याग दिया। तब उसको उसके परिजनों ने बहुत समझाया और उसके सातवें पुत्र के विवाह के लिये उसे राजी किया। भावीवश उसके सबसे छोटे बेटे का विवाह का मुहूर्त भी दूर्वाष्टमी का ही निकला। साहूकार ने अपने सभी रिश्तेदारों को विवाह के लिये आमंत्रित किया। साहूकार की बहन भी अपने भतीजे के विवाह में शामिल होने के लिये अपने घर से चल दी। मार्ग में उसे प्यास लगी तो वो एक कुएँ के पास गई। वहाँ उसने देखा एक बुढ़िया बार-बार

कुछ बनाती और फिर उसे बिगाड़ देती। यह देखकर उसे साहूकार की बहन से रहा नही गया। उसने उससे पूछ हि लिया, हे माँ जी! आप यह क्या कर रही हैं। क्या मैं आपकी सहायता कर सकती हूँ।

इस पर उस बुढ़िया ने जवाब दिया कि नगर में एक साहूकार है जिसके सात में से छ: पुत्रों की उनके विवाह वाले दिन ही मृत्यु हो गयी थी। अब उसके सातवें पुत्र की भी मृत्यु होने वाली हैं। उसकी के लिये यह ढ़क्कनी बना रही हूँ।यह सुनकर साहूकार की बहन ने उस बुढ़िया से पूछा, कि आप हैं कौन? तब उसने बताया कि मैं दुबड़ी हूँ। तब साहूकार की बहन ने उससे कहा कि आप यह सब जानती है, तो उसे इस समस्या से बचाने का मार्ग भी जानती होंगी। कृपा करके मुझे बतायें, मैं उस अभागे साहूकार की बहन हूँ।यह सुनकर दुबड़ी माँ जी ने कहा कि यदि उस साहूकार की बहन या बेटी दूर्वाष्टमी का व्रत एवं पूजन करें तो वो उसके पुत्र की मृत्यु को टाल सकती हैं।

तब साहूकार की बहन ने कहा कि मैं यह व्रत और पूजन करूंगी। आप मुझे बताओं कि मैं कैसे उसकी मृत्यु को टाल सकती हूँ। तब उस बुढ़िया ने उसे कहा कि जब उसकी बारात निकले तो मुख्य दरवाजे से मत निकालना, क्योकि वो दरवाजा उस पर गिरने उसकी मृत्यु का योग हैं। उसके बाद मार्ग में किसी पेड़ के नीचे उसे मत रूकने देना क्योकि पेड़ के गिरने से भी उसकी मृत्यु का योग हैं। बारात को प्रवेश भी मुख्य दरवाजे से मत करने देना क्योकि यहाँ भी उसके जीवन पर संकट हैं। उसके बाद फेरों पर उसको ड़सने के लिये नाग आयेगा, तुम उस नाग को किसी तरह से कैद कर लेना और जब उसकी नागिन उसे छुड़ाने के लिये आये तो उस नाग को छोड़ने के बदले में तुम अपने मृत भतीजों को वापस माँग लेना। परंतु मैंने जो बात तुम्हे बताई है यह किसी को भी मत बताना अन्यथा तुम्हारा भतीजा तो मरेगा ही साथ में तुम और तुम जिसको भी तुम यह बात बताओगी वो भी मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा। दुबड़ी माई की बात सुनकर साहूकार की बहन ने मन ही मन अपने भाई के परिवार की रक्षा की कामना करने लगी और दूर्वाष्टमी के व्रत एवं पूजन करने की ठान ली।

दूर्वाष्टमी के दिन ही विवाह का मुहूर्त था। साहूकार की बहन ने उस दिन व्रत एवं पूजन किया और उसके बाद जब बारात निकलने लगी तो उसने बारात को मुख्य द्वार से निकालने नही दिया। सबको विवश होकर दीवार फोड़कर बारात को निकालना पड़ा। जैसे ही बारात दीवार फोड़कर निकली, घर का मुख्य दरवाजा भरभरा कर गिर गया। यह देखकर सब अचम्भित हो गये और मन ही मन शुक्र मनाने लगे की दूल्हे के प्राण बच गये। बारात में स्त्रियों का जाना मना था, परंतु साहूकार की बहन जिद्द पर अड़

गई कि वो भी बारात के साथ जायेगी। सबने उसे बहुत समझाया परंतु वो नही मानी। साहूकार को अपनी बहन से बहुत प्रेम था, उसने उसकी बात मान ली और वो भी बारात के साथ गई।

जब बारात मार्ग मे रूकने लगी तो सबने दूल्हे को एक पेड़ के नीचे रोकने के लिये कहा। तब बुआ अड़ गई कि नही वो मेरे साथ यही धूप में ही खड़ा रहेगा और उसको पेड़ के नीचे नही जाने दिया। थोड़ी ही देर में वो पेड़ गिर गया। तब सब बुआ की प्रशंसा करने लगे। साहूकर भी अपनी बहन का धन्यवाद करने लगा।उसके बाद जब बारात विवाहस्थल पर पहुँची तो फिर बुआ ने दूल्हे को मुख्य द्वार से प्रवेश नही करने दिया। पहले हुई घटनाओं को याद करके बिना किसी बहस के सबने बुआ की बात मान ली और दूल्हे तो दीवार तोड़कर वहाँ पहुँचाया गया। जैसे ही दूल्हा अंदर घुसा वहाँ का मुख्य द्वार भी भरभरा कर गिर पड़ा। सब यह देखकर भौचक्के रह गये। ऐसी घटनाओं को देख सभी विस्मित हो गये थे।

फिर जब फेरों का समय आया तो साहूकार की बहन अपने भतीजे के पास बैठी। उसने साँप के लिये कच्चा दूध रखा और उसे पकड़ने के लिये एक फंदा बनाया। दूल्हे को ड़सने के लिये जब नाग आया तो बुआ ने उसे कच्चा दूध पिलाया। जब नाग ने दूध पी लिया तब उसे फंदे में फंसा कर कैद कर लिया। थोड़ी देर में नाग को ढूंढ़ते हुये नागिन भी वहाँ आ गई। नागिन ने बुआ से कहा की मेरे नाग को छोड़ दो, तब बुआ ने उस नाग को मुक्त करने के बदले उस नागिन से अपने सातवें भतीजे का जीवन और मरे हुये छ: भतीजे पुन: जीवित करके लौटाने के लिये कहा। तब नागिन ने उसके मरे हुये छ: भतीजों को पुन: जीवित करके वापस कर दिया। और सातवें भतीजे का जीवन भी बक्ष दिया। तब साहूकार की बहन ने उस नाग को मुक्त कर दिया। तब सब खुशी-खुशी अपने घर लौट आये। साहूकार की खुशी का पारावार नही था। उसके मृत पुत्र पुन: जीवित होकर उसे मिल गये थे। उसने अपनी बहन का बार बार आभार प्रकट किया। तब उसकी बहन ने कहा यह सब तो दुर्वाष्टमी के व्रत और दुबड़ी माता की कृपा से हुआ है। साहूकार की बहन ने अपने भाई की पुत्रवधुओं को परिवार की खुशहाली, कुल-वृद्धि और सौभाग्य के लिये दूर्वाष्टमी के व्रत की विधि बताई और उनसे हर वर्ष यह व्रत करने के लिये कहा। हे दूर्वाष्टमी माता ! जैसे आपने साहूकर की बहन की सुनकर उसके भतीजों को जीवन दान दिया वैसे सबको देना ।

।। बोलो दुबडी माता की जय ।।

गणेश जी की कथा : एक समय की बात है एक गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। वो हर दिन मिट्टी के भगवान गणेश की प्रतिमा बना कर पूजा किया करती थी। और हर दिन मिट्टी की मूर्ति पानी पड़ने से गल जाया करती। एक दिन उस बुढ़िया ने सोचा क्यूँ न मैं गणेश जी की पत्थर की प्रतिमा बनवा लूँ। फिर रोज रोज उनकी मूर्ति गलेगी नही। यही सोचकर वो एक मिस्त्री के पास गई। वो मिस्त्री एक सेठ का मकान बना रहा था। उसे देखकर उस बुढ़िया ने कहा, बेटा! मेरी बनायी मिट्टी की गणेश की मूर्ति रोज गल जाती हैं। तू मेरे लिये गणेश जी की एक पत्थर की मूर्ति बना दें।

मिस्त्री ने कहा, माई! जब तक मैं तेरे लिये मूर्ति बनाऊँगा इतने समय में तो सेठ जी के मकान की एक पूरी दीवार बन जायेगी। यह सुनकर बुढ़िया वहाँ से दुखी होकर चली गई। वो मिस्त्री पूरे दिन काम में लगा रहा परंतु उससे उस दीवार का काम पूरा नही हुआ। जैसे वो दीवार बनाता वो दीवार गिर जाती। जब शाम को सेठ जी आये तो उन्होने यह सब देखा तो मिस्त्री से कहा, आज दिन भर में तुझसे एक दीवार भी नही बनी। मिस्त्री ने सेठ जी को उस बुढ़िया के विषय में बताया। उसने कहा कि एक बुढ़िया आई थी गणेश की मूर्ति बनवाने के लिये, परंतु मैंने उसे यह कहकर मना कर दिया कि इतनी देर में तो सेठ जी के मकान की दीवार बन जायेगी। उसके बाद से जैसे ही मैं दीवार बनाता हूँ, वो गिर जाती हैं। सेठजी सारा माजरा समझ गये। वो उस बुढ़िया के पास पहुँचे और उस बुढ़िया से कहा कि माई मैं तुझे सोने के गणेश जी बनवाकर दूंगा। तू मेरे घर का काम पूरा होने दें। सेठजी के वचन सुनकर बुढ़िया संतुष्ट हो गई। और उधर सेठ जी के वचन देते ही मकान की दीवार पुन: खड़ी हो गई। सेठ जी ने उस बुढ़िया को गणेश जी की सोने की मूर्ति बनवाकर दी। गणेशजी की मूर्ति पाकर वो बुढिया अतिप्रसन्न हुई। हे गणेश जी महाराज! जैसे आपने उस बुढ़िया की इच्छा पूरी करी और उस सेठ का काम पूर्ण किया वैसे सबका करना।

संतान सप्तमी व्रत कथा : पूजा के बाद कथा सुनने का महत्व सभी हिन्दू व्रत में मिलता हैं.संतान सप्तमी व्रत की कथा पति पत्नी साथ मिलकर सुने, तो अधिक प्रभावशाली माना जाता हैं. इस व्रत का उल्लेख श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर के सामने किया था. उन्होंने बताया यह व्रत करने का महत्व लोमेश ऋषि ने उनके माता पिता (देवकी वसुदेव) को बताया था. माता देवकी के पुत्रो को कंस ने मार दिया था, जिस कारण माता पिता के जीवन पर संतान शोक का भार था, जिससे उभरने के लिए उन्हें संतान सप्तमी व्रत करने कहा गया.

लोमेश ऋषि द्वारा संतान सप्तमी की व्रत कथा :

अयोध्या का राजा था नहुष, उसकी पत्नी का नाम चन्द्र मुखी था. चन्द्र मुखी की एक सहेली थी, जिसका नाम रूपमती थी, वो नगर के ब्राह्मण की पत्नी थी. दोनों ही सखियों में बहुत प्रेम था. एक बार वे दोनों सरयू नदी के तट पर स्नान करने गयी, वहाँ बहुत सी स्त्रियाँ संतान सप्तमी का व्रत कर रही थी. उसकी कथा सुनकर इन दोनों सखियों ने भी पुत्र प्रप्ति के लिए इस व्रत को करने का निश्चय किया, लेकिन घर आकर वे दोनों भूल गई. कुछ समय बाद दोनों की मृत्यु हो गई और दोनों ने पशु योनी में जन्म लिया. कई जन्मो के बाद दोनों ने मनुष्य योनी में जन्म लिया, इस जन्म में चन्द्रवती का नाम ईश्वरी एवम रूपमती का नाम भूषणा था. इश्वरी राजा की पत्नी एवं भुषणा ब्राह्मण की पत्नी थी, इस जन्म में भी दोनों में बहुत प्रेम था. इस जन्म में भूषणा को पूर्व जन्म की कथा याद थी, इसलिए उसने संतान सप्तमी का व्रत किया, जिसके प्रताप से उसे आठ पुत्र प्राप्त हुए, लेकिन ईश्वरी ने इस व्रत का पालन नहीं किया, इसलिए उसकी कोई संतान नहीं थी. इस कारण उसे भूषणा ने इर्षा होने लगी थी. उसने कई प्रकार से भुषणा के पुत्रों को मारने की कोशिश की, लेकिन उसके भुषणा के व्रत के प्रभाव से उसके पुत्रो को कोई क्षति ना पहुँची. थक हार कर ईश्वरी ने अपनी इर्षा एवं अपने कृत्य के बारे में भुषणा से कहा और क्षमा भी माँगी. तब भुषणा ने उसे पूर्वजन्म की बात याद दिलाई और संतान सप्तमी के व्रत को करने की सलाह दी. ईश्वरी ने पुरे विधि विधान के साथ व्रत किया और उसे एक सुंदर पुत्र की प्राप्ति हुई.

राधाष्टमी व्रत , दुर्वाष्टमी व्रत , महालक्ष्मी व्रत
भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष अष्टमी

राधा अष्टमी का व्रत बहुत ही महान पुण्य देने वाला व्रत हैं। इस दिन का व्रत करने जातक को श्री राधा जी और श्री कृष्ण जी दोनों की कृपा प्राप्त होती हैं। हिंदु धर्म ग्रंथो के अनुसार राधाष्टमी का व्रत करने से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। स्त्रियों को सुखी वैवाहिक जीवन और अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती हैं। घर-परिवार में सुख-शांति और धन-समृद्धि का वास होता हैं। संतानहीन को संतान की प्राप्ति होती हैं। कभी धन की कमी नही होती। लक्ष्मी हमेशा उसके घर में वास करती हैं। मनुष्य की समस्त मनोकामनायें पूर्ण होती हैं और उसका जीवन सुखमय हो जाता हैं। इस दिन का व्रत करने वाला साधक जीवन के सुख भोगकर मृत्यु के बाद गौलोक को प्राप्त करता हैं।

श्री राधा जी से जुड़े कुछ विशेष तथ्य

1. श्री राधा रानी का जन्म रावल गांव में हुआ था। राधा जी के पिता का नाम वृषभानु और माता का नाम कीर्ति था।
2. ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार श्री राधा जी ने अपनी माँ के गर्भ से जन्म नही लिया था, बल्कि वो प्रकट हुई थी। इसलिये मंदिरों में इस दिन श्री राधा जी का जन्मोत्सव (प्राकट्योत्सव) मनाया जाता हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार श्री राधा जी भगवान श्री कृष्णजी से आयु में बड़ी थी।
3. श्री राधा जी को कृष्ण की अह्लादिनी शक्ति माना जाता हैं।

राधा अष्टमी व्रत एवं पूजन विधि

1.इस दिन सुबह स्नान करके सबसे पहले सूर्य देव को अर्घ्य अर्पित करें।
2. राधा अष्टमी के दिन प्रात: काल स्नानादि नित्यक्रिया से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पूजास्थान पर एक चौकी बिछाकर उसके आसपास मण्ड़प सजायें और चौकी पर थाली /परात रखकर उसमें राधा जी की प्रतिमा स्थापित करें।
3. फिर पंचामृत से राधा जी का अभिषेक करें। फिर इत्र, पुष्प, चंदन अर्पित करें। जल चढ़ायें। राधा जी का श्रृंगार करें।
2. घर या मंदिर की सफाई कर देसी घी का दीपक जलाकर , रोली-चावल से राधा जी की पूजा करें। फल-फूल अर्पित करें।
3. श्री राधा रानी और भगवान कृष्ण को फूल, बांसुरी और प्रसाद (धनिया और बीज की मिठाई, बेसन का हलवा, फलों में कदलीफल और मौसमी फल) अर्पित करें।
4. राधा रानी के 108 नामों का जप करें ।
5. पूजा के समय राधा रानी के इस मंत्र का जाप करें - ओम ह्रीं राधिकायै नम:। ओम ह्रीं श्रीराधायै स्वाहा।
6. अब विधिवत कान्हा की भी पूजा करें और सुख-समृद्धि की कामना करें।
7. फिर राधा कृपा कटाक्ष स्त्रोत्र एवं राधा चालीसा का पाठ करें और राधा जी की आरती गायें।
8. दिन में एक ही समय भोजन करें और ब्रह्मचर्य का पालन करें। इस दिन सुहागिन स्त्रियों को भोजन कराएं और सामर्थ्य अनुसार दक्षिणा दें। इस पावन अवसर पर अन्न, वस्त्र और धन का दान करना बेहद शुभ माना जाता है। मान्यता है कि ऐसा करने से वैवाहिक जीवन में प्रेम और शांति बनी रहती है।

पितृ पक्ष (श्राद्ध पक्ष)
भाद्रपद की शुक्ल पूर्णिमा से आश्विन माह की कृष्ण अमावस्या तक

अमावस का श्राद्ध सर्व पितृ देवता श्राद्ध है। हिंदू पंचांग के अनुसार, भाद्रपद की शुक्ल पूर्णिमा से प्रारंभ होकर आश्विन माह की कृष्ण अमावस्या तक पितृ पक्ष चलता है। इसे श्राद्ध पक्ष भी कहा जाता है. पितृ पक्ष की चतुर्दशी को मम्मी और पापा जी का श्राद्ध है।

अमावस का श्राद्ध सर्व पितृ देवता श्राद्ध है। पितरों की पूजा घर में : ३ धागो वाले, देशी घी के ०२ दीपक जलाने हैं , गेंहू के मीठे चीले (२ या 4), गेंहू के गुलगुले (७ या ११) बना कर मेहँदी से टीका करना है। सिर ढके, दक्षिणमुखी बैठ कर, ॐ सर्व पितृ-देवताभ्यो नमः कहते हुए , कच्चे दूध और काले तिल को पानी में मिला कर दाहिने हाथ पर गिराते हुए अंगूठे से साइड में होते हुए मिटटी में, शिवलिंग के पास छोड़ना हैं।

ब्राह्मण हो तो उसको खाना खिला कर, फल और दक्षिणा के साथ विदा करना हैं। गेंहू के मीठे चीले , गेंहू के गुलगुले गौ को खिला आवें। फिर ही भोजन करना है। श्राद्ध पक्ष के दौरान प्रतिदिन तर्पण करना शुभ है. इस अवधि में पितरों की आत्मा की शांति और मोक्ष की कामना हेतु तर्पण, श्राद्ध और पिंडदान किया जाता है।

शारदीय नवरात्रि अश्विन मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि से प्रारंभ

शारदीय नवरात्रि वर्ष के मध्य का समय जाड़ा का आरंभ होता है।शारदीय नवरात्रि के दिन सात्विक साधना, दुर्गा पूजा और आराधना नृत्य और उत्सव का खासा महत्व रहता है। जबकि शारदीय नवरात्र के अंत में दुर्गा महानवमी आती है, और दूसरे दिन विजयादशी आती है।

आश्विन माह पितृ पक्ष की कृष्ण अमावस्या सायंकाल में जौ बीज (२, ५, ७, ९,११) सकते हैं । आक के पत्तों से ढकना हैं।

नवरात्रि कलश स्थापना के लिए आवश्यक सामग्री



जौ के लिए मिटटी पात्र,	**आम की पत्तियां**	**मोली /कलावा/ रक्षा सूत्र**	**श्रृंगार (बिंदी, चूड़ी, दर्पण, कंघी, सिन्दूर)**	**छोटी इलाइची**
मिटटी का कलश, ढक्कन	**जौ (जवारे)**	**दूर्वा घास**	**गंगा जल**	**लौंग**
लाल कपडा / लाल चुन्नी	**अक्षत/चावल**	**1 /2 रु सिक्का**	**हल्दी, सिन्दूर**	**नारियल**
फुल माला	**फुल ,**	**पान, सुपारी,**	**साफ़ मिट्टी**	**प्रसाद**

कलश स्थापना विधि :- नवरात्रि में कलश स्थापना देव-देवताओं के आह्वान से पूर्व की जाती है। सबसे पहले मिट्टी के बड़े पात्र में थोड़ी सी मिट्टी डालें। और उसमे जवारे के बीज डाल दें।अब इस पात्र में दोबारा थोड़ी मिटटी और डालें। और फिर बीज डालें। उसके बाद सारी मिट्टी पात्र में डाल दें और फिर बीज डालकर थोड़ा सा जल डालें। (ध्यान रहे इन बीजों को पात्र में इस तरह से लगाएं कि उगने पर यह ऊपर की तरफ उगें। यानी बीजों को खड़ी अवस्था में लगाएं और ऊपर वाली लेयर में बीज अवश्य डालें।) अब कलश और उस पात्र की गर्दन पर मौली बांध दें। साथ ही तिलक भी लगाएं। इसके बाद कलश में गंगा जल भर दें। इस जल में सुपारी, इत्र, दूर्वा घास, अक्षत और सिक्का भी दाल दें। अब इस कलश के किनारों पर 5 अशोक के पत्ते रखें और कलश को ढक्कन से ढक दें। अब एक नारियल लें और उसे लाल कपड़े या लाल चुन्नी में लपेट लें। चुन्नी के साथ इसमें कुछ पैसे भी रखें। इसके बाद इस नारियल और चुन्नी को रक्षा सूत्र से बांध दें। तीनों चीजों को तैयार करने के बाद सबसे पहले जमीन को अच्छे से साफ़ करके उसपर मिट्टी का जौ वाला पात्र रखें। उसके ऊपर मिटटी का कलश रखें और फिर कलश के ढक्कन पर नारियल रख दें। कलश स्थापना संपूर्ण हो चुकी है। इसके बाद सभी देवी देवताओं का आह्वान करके विधिवत नवरात्रि पूजन करें। इस कलश को आपको नौ दिनों तक मंदिर में ही रखे देने होगा। बस ध्यान रखें सुबह-शाम पानी डालते रहें। **सप्ताह भर श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करना है। साथ ही रामायण का नवाह्न पाठ भी कर सकते है। अष्टमी को कड़ाही (सूजी का हलवा, पूरी, चने) करनी है। आटे का दिया लगाना है , भगवती दुर्गा का पूजन कर भोग लगाना है।**

कन्या पूजन विधि :

- नवरात्रि की नवमी पर हवन के बाद कन्या पूजन का खास महत्व रहता है।–
- धार्मिक मान्यता के अनुसार **2 से 10 वर्ष की आयु की कन्या कुमारी पू**जा के लिए उपयुक्त होती हैं।
- सभी कन्याओं को कुश के आसान पर या लकड़ी के पाट पर बैठाकर उनके पैरों को पानी या दूध से धोएं।
- फिर पैर धोने के बाद उनके पैरों में महावार लगाकर उनका श्रृंगार करें और फिर उनके माथे पर अक्षत, फूल और कुमकुम का तिलक लगाकर उनकी पूजा और आरती करें।
- इसके बाद सभी कन्याओं को भोजन कराएं। साथ ही एक लांगुरिया (छोटा लड़का) को खीर, पूरी, प्रसाद, हलवा, चने की सब्जी आदि खिलाएं।- भोजन कराने के बाद उन्हें दक्षिणा दें, उन्हें रूमाल, चुनरी, फल और खिलौने देकर उनका चरण स्पर्श करके उन्हें खुशी खुशी से विदा करें।

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि - विजयादशमी

दशहरा के दिन सुबह उठते ही दही और चांदी देखना शुभ होता है। इस दिन, सूर्योदय से पहले उठें और स्नान करें। पीले या लाल रंग के स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

पूजा सामग्री : भगवान राम और मां दुर्गा की मूर्ति या चित्र, शमी वृक्ष की पत्तियाँ, गाय का गोबर, गेहूं या चूना, रोली, चावल, जौ, फल, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, पान का पत्ता, सुपारी, नारियल ,अपराजिता के फूल, गंगाजल और पीतल का लोटा, 2मूली, 2गन्ने,

पूजा स्थल को गंगाजल से शुद्ध करें और एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाएं। चौकी पर भगवान राम और मां दुर्गा की मूर्ति या चित्र स्थापित करें। उनके सामने दीप और धूप जलाएं। भगवान राम और मां दुर्गा को फूल, फल, जौ, गुड़ और नैवेद्य अर्पित करें। गेहूं या चूने से दशहरे की प्रतीकात्मक प्रतिमा बनाएं। गाय के गोबर से 10 गोले बनाएं। एक कटोरी में सिक्के और दूसरी में रोली, चावल और जौ रखें। **'ॐ श्री रामचंद्राय नमः' मन्त्र का जाप करते रहे।**

शमी वृक्ष के पास जाएं और उसे रोली, चावल और फूल अर्पित करें। मंत्र का जाप करें: **ॐ शम्यै नमः।**

यदि आपके पास कोई हथियार हैं, तो उन्हें साफ करें और रोली, चंदन, फूल और अक्षत से उनका पूजन करें। जिसमें ब्राह्मण शास्त्रों की, वैश्य अपने बहीखातों की और क्षत्रिय अपने हथियारों की पूजा करते हैं। बही खाता की पेन की पूजा करनी है। बही खाता में स्वस्तिक बना कर कुमकुम से टीका करना है। भोजन में दही, चावल, साबुत मूंग (अदरक वाली), जौ टांकने है।

1 - मां दुर्गा द्वारा महिषासुर का वध : मां दुर्गा ने नौ दिनों तक महिषासुर से युद्ध किया और दशमी तिथि को, उसका वध किया। यह विजय नवरात्रि के नौ दिनों की पूजा का समापन दशहरा के रूप में मनाया जाता है। इस कारण दशहरा को विजयादशमी भी कहा जाता है, जो शक्ति और साहस का प्रतीक है।

2 -भगवान राम द्वारा रावण का वध : रामायण के अनुसार, लंकापति रावण ने भगवान राम की पत्नी माता सीता का अपहरण कर लिया था। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि के दिन अधर्म और पाप के प्रतीक रावण**(अधर्म - काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद,मत्सर, स्वार्थ, अन्याय, अहङ्कार अमानवता)** कुंभकर्ण और मेघनाथ का वध कर भगवान राम **(धर्म -सत्य, नैतिकता और अच्छाई)** ने विजय प्राप्त की और माता सीता को मुक्त किया।

3 -अपराजिता पूजा: भगवान राम ने रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए अपराजिता देवी की पूजा की थी।

4. महाभारत के अनुसार, पांडवों ने अपने अज्ञातवास के दौरान अपने हथियारों को शमी वृक्ष पर छिपाया था। दशहरा के दिन अर्जुन ने अपने धनुष को शमी वृक्ष से निकालकर दुश्मनों को पराजित किया था। इसलिए, शमी वृक्ष की पूजा और शस्त्र पूजन की परंपरा प्रचलित है।

इस दिन (सनातन परंपरा में साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक **अबूझ मुहूर्त)** बिना किसी विशेष मुहूर्त के शुभ कार्य जैसे गृह प्रवेश, नया व्यवसाय शुरू करना, अक्षर लेखन, मुंडन, नामकरण आदि किए जा सकते हैं। यह दिन कार्यों में सफलता और सिद्धि प्रदान करता है। पूजा के अंत में भगवान राम, मां दुर्गा और अपराजिता देवी की आरती करें। इसके बाद प्रसाद वितरित करें। दशहरा के दिन दान-पुण्य का विशेष महत्व है।

आश्विन मास की शरद पूर्णिमा

पौराणिक कथाओं अनुसार शरद पूर्णिमा के दिन ही माता लक्ष्मी का जन्म हुआ था। इस दिन ही भगवान कृष्ण ने गोपियों संग निधिवन में रासलीला रचाई थी।

आश्विन मास की शरद पूर्णिमा पर खीर क्यों बनाते हैं :- शरद पूर्णिमा की रात में चंद्रमा की रोशनी से अमृत वर्षा होती है। कहा जाता है चांद की ये किरणें सेहत के लिए काफी लाभकारी होती है। इसलिए ही इस रात में खीर बनाकर चांद की रोशनी के नीचे चांदी के पात्र में रखी जाती है। चांदी के पात्र में खीर रखने से प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है। फिर सुबह के समय इस खीर को ग्रहण किया जाता है। कहते हैं इस अमृत रूपी खीर को खाने से स्वास्थ्य बढ़िया रहता है। शरद पूर्णिमा के दिन चांद की रोशनी में रखी जाने वाली खीर को खाने से शरीर ऊर्जावान रहता है। माना जाता है कि इस खीर को खाने से अस्थमा से और चर्मरोग से आराम मिलता है। इतना ही नहीं ये खीर हृदय और फेफड़े संबंधी बीमारियों को भी ठीक करती है।

कार्तिक कृष्ण पक्ष की गणेश चतुर्थी (करवा चौथ)



५ मिठाई (मैदे की मीठी मट्ठी, सूत के लड्डू, शकर पारे, फीकी मट्ठी, गुझिआ)

ढक्कन वाली मिटटी की पानी से भरी टोंटी वाली कुज्जी पर चिब्बड़, ग्वार फली, मट्ठी, रख कर दीपक जला कर कथा सुननी है।

सास के लिए बायना : मिठाई, साड़ी-ब्लाऊज, लड्डू, फल और रुपये सास को देकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

चन्द्रमा को देख कर, कुज्जी के पानी, फीकी मट्ठी, दीपक से अर्ग देना हैं **और** व्रत का पारण करना है। **भोजन के लिए अदरक वाली, साबुत मूंग दाल, चावल**

करवा चौथ व्रत की कथा : करवा चौथ व्रत कथा के अनुसार बहुत समय पहले की बात है, इंद्रप्रस्थपुर नाम के नगर में वेदशर्मा नाम के एक ब्राह्मण रहते थे। वेदशर्मा के 7 बेटे और 1 बेटी थी और दशर्मा की पत्नी का नाम लीलावती था। उनके परिवार की सबसे प्यारी और चहेती थी उनकी इकलौती बेटी, जिसका नाम था वीरवती। सात भाइयों की अकेली बहन होने से वीरवती को न केवल माता-पिता का, बल्कि भाइयों का भी भरपूर प्यार और दुलार मिला। जब वीरवती युवती हुई तो उसका विवाह एक ब्राह्मण युवक से कर दिया गया। शादी के बाद, एक बार जब वीरवती अपने मायके में थी, तो उसने अपने पति की लंबी उम्र के लिए करवा चौथ का व्रत रखा। इस व्रत को उसने अपनी भाभियों के साथ मिलकर किया। लेकिन करवा चौथ के व्रत के दौरान भूख से वीरवती की तबीयत बिगड़ने लगी। कमजोरी की वजह से वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी। यह देखकर उसके भाई परेशान हो गए। वे जानते थे कि उनकी प्यारी बहन, जो पतिव्रता है, वह तब तक कुछ नहीं खाएगी जब तक वह चांद को नहीं देख लेती, चाहे इसके लिए उसकी जान ही क्यों न चली जाए। इसलिए भाइयों ने मिलकर एक योजना बनाई ताकि वे अपनी बहन को व्रत तोड़ने के लिए मना सकें। उनमें से एक भाई वट के एक पेड़ पर चढ़ गया और छलनी और दीपक लेकर बैठ गया। जब वीरवती को होश आया तो बाकी भाइयों ने उसे बताया कि चांद निकल आया है और उसे छत पर ले जाकर चांद दिखाया। वीरवती ने पेड़ के पीछे छलनी और दीपक की रोशनी को देखा और उसे भरोसा हो गया कि चांद निकल आया है। भूख के मारे उसने उस दीपक की पूजा की और अपना व्रत तोड़ दिया। जैसे ही वीरवती ने खाना शुरू किया, उसे हर तरफ से अशुभ संकेत मिलने लगे। पहले निवाले में उसे बाल मिला, दूसरे निवाले में उसे छींक आ गई, और तीसरे निवाले के साथ ही उसे ससुराल से बुलावा आ गया। जब वीरवती अपने पति के घर पहुंची तो उसने पाया कि उसके पति की मौत हो गई है। पति का मृत शरीर देखकर वीरवती का दिल टूट गया। वह जोर-जोर से रोने लगी और अपने आप को दोषी ठहराने लगी कि करवा चौथ के व्रत के दौरान उसने कोई गलती की है। उसकी चीखें और रोने की आवाज सुनकर इंद्राणी देवी, जो भगवान इंद्र की पत्नी थीं, उसे सांत्वना देने के लिए आईं। वीरवती ने देवी इंद्राणी से पूछा कि करवा चौथ के दिन उसे ऐसा भाग्य क्यों मिला और उसने अपने पति को फिर से जीवित करने की प्रार्थना की। वीरवती के पश्चाताप को देखकर देवी इंद्राणी ने बताया कि उसने चांद को अर्घ्य दिए बिना ही व्रत तोड़ दिया, जिससे उसके पति की असमय मृत्यु हो गई। इंद्राणी ने वीरवती को सलाह दी कि वह पूरे साल हर महीने की चतुर्थी का व्रत करे, और विशेष रूप से करवा चौथ का व्रत पूरी श्रद्धा और विधि से करे। इससे उसके पति का जीवन उसे वापस मिल जाएगा। इसके बाद वीरवती ने पूरे साल भर महीने की चतुर्थी का व्रत पूरी श्रद्धा और विधि-विधान से किया। उसके इन व्रतों से प्राप्त पुण्य के फलस्वरूप वीरवती का पति फिर से जीवित हो गया।

कार्तिक कृष्ण पक्ष की अहोई अष्टमी

५ मिठाई (मैदे की मीठी मट्ठी, सूत के लड्डू, शकर पारे, फीकी मट्ठी, गुझिआ(प्रागड़ी)), फल , 2मूली, 2गन्ने, २ मिटटी के पानी भरे कुज्जे, २ मिठाई के लिए बर्तन , अहोई अष्टमी की मूर्ति। दीपक जला कर पूजा करनी है.







ढक्कन वाली मिटटी की पानी से भरी कुज्जी पर चिब्बड़, ग्वार फली, मट्ठी, अहोई माता पेंडंट और माला, रख कर दीपक जला कर कथा सुननी है। कुज्जी के पानी, मट्ठी, दीपक से तारों को अर्ग देना हैं। व्रत का पारण करना है। अहोई माता पेंडंट और माला, पुत्र के विवाह तक प्रत्येक वर्ष एक एक मोती जुड़ जाता है. बाद में अहोई माता पेंडंट और माला पुत्रवधु को देनी है। **खाने के लिए अदरक वाली, साबुत मूंग दाल, चावल**

कथा के अनुसार, एक नगर में एक साहूकार रहता था, जिसके 7 बेटे और 7 बहुएं थी और एक बेटी थी थी, जिसका विवाह हो चुका था. दिवाली के दिन वह मायके आई थी. दिवाली के अवसर पर घर और आंगन को साफ सुथरा करने के लिए सातों बहुएं अपनी ननद के साथ जंगल में जाकर खदान में मिट्टी खोद रही थी. जंगल में साहूकार की बेटी जिस जगह पर मिट्टी खोद रही थी, वहां पर स्याहु यानी साही अपने बेटों के साथ रहती थी. मिट्टी काटते समय साहूकार की बेटी की खुरपी से स्याहु का एक बच्चा मर गया. इससे स्याहू माता बहुत नाराज हो गई और बोली- मैं तेरी कोख बांधूंगी. उसकी बात सुनकर साहूकार की बेटी डर जाती है और वह अपनी सभी भाभीयोंसे एक-एक करके कहती है कि वे उसके बदले अपनी कोख बंधवा लें. लेकिन सभी भाभियों ने अपनी कोख बंधवाने से इनकार कर देती हैं.

लेकिन छोटी भाभी सोचती है कि अगर मैंने अपनी कोख नहीं बंधवाई तो सासू जी नाराज होंगी. यह सोचकर ननद के बदले में छोटी भाभी ने अपनी कोख बंधवा लेती है.इस घटना के कुछ समय बाद जब उसकी छोटी भाभी के बच्चे होते हैं तो वे 7

दिन बाद मर जाते हैं. ऐसे करके उसके 7 संतानों की मृत्यु हो जाती है. तब उसने एक पंडित को पूरी बात बताती है और उपाय पूछती है. तब पंडित कहता है कि – **तुम सुरही गाय की सेवा करो. सुरही गाय स्याहू माता की भायली है**. वह तेरी कोख खुलवा देगी तब तेरा बच्चा जीएगा. अब वह बहुत जल्दी उठकर चुपचाप सुरही गाय के नीचे साफ-सफाई कर आती. सुरही गाय ने सोचा रोज सुबह कौन मेरी सेवा कर रहा है? आज देखती हूं.

गौ माता खूब सवेरे उठकर देखती है कि साहूकार के बेटे की बहू उसके नीचे साफ-सफाई कर रही है. गौ माता उससे कहती हैं क्या मांगती है? तब साहूकार की बहू कहती है कि – हे गौ माता स्याहू माता तुम्हारी भायली है और उसने मेरी कोख बांध रखी है. सो मेरी कोख खुलवा दो. गौ माता ने कहा अच्छा ठीक है. अब तो गौ माता समुद्र पार साहूकार की बहू को अपनी भायली के पास लेकर चल पड़ी.रास्ते में दोनों थककर एक जगह आराम करते हुए सो जाती हैं. अचानक साहूकार की छोटी बहू की आंख खुलती है तो वह देखती है कि एक सांप गरुड़ पंखनी के बच्चे को डसने जा रहा होता है. तभी वह उस सांप को मार देती है. इतने समय में ही गरुड़ पंखनी वहां आ जाती है. वहां पर खून देखकर वह क्रोधित हो जाती है. उसे लगता है कि साहूकार की छोटी बहू ने उसके बच्चे को मार डाला है, इस पर वह उसे चोंच से मारने लगती है. इस पर छोटी बहू उससे कहती है कि उसने तुम्हारे बच्चे की जान बचाई है. यह बात सुनकर वह खुश हो जाती है. छोटी बहू और सुनहरी गाय के उद्देश्य को जानकर गरुड़ पंखनी उन दोनों को स्याहु के पास लेकर जाती है.साहूकार की छोटी बहू के काम से स्याहू प्रसन्न होती है. वह उसे 7 बेटे और 7 बहू होने का आशीर्वाद देती है. स्याहु के आशीर्वाद से साहूकार की छोटी बहू को 7 बेटे होते हैं और समय पर उनकी शादी होती है.

कार्तिक कृष्ण पक्ष की धन त्रयोदशी

धनतेरस के दिन संध्या के समय पूजा करने का अधिक महत्व हैं।

1. पूजा के स्थान में उत्तर दिशा की तरफ भगवान धन्वंतरि एवं भगवान कुबेर की मूर्ति स्थापित करना चाहिए भगवान गणेश और माता लक्ष्मी जी की भी मूर्ति स्थापित करने का भी प्रावधान है।
2. भगवान धन्वंतरि को पीली मिठाई (जलेबी), एवं भगवान कुबेर को सफेद मिठाई (खील, बताशे) का भोग लगाना चाहिए। पूजा में चावल, दाल, रोली, चंदन, धूप एवं फल-फूल का उपयोग करना लाभदायक होता है।

3. धनतेरस पर, पूरे परिवार की उपस्थिति में, 13 **पुराने या इस्तेमाल किए गए मिट्टी के दीये दक्षिण की ओर मुंह करके** जलाए जाते हैं। यम के नाम से भी एक दीपक दक्षिण दिशा की तरफ जलाने से अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता है। धनतेरस के दिन यमराज को भी श्रद्धाभावना के साथ नमन करना चाहिए । माना जाता है ऐंसा करने से अकाल मृत्यु कभी घर में प्रवेश नहीं करती और घर के दीपक की लौ हमेशा प्रज्ज्वलित रहती है, परिवार की असमय मृत्यु से रक्षा होती है।

4. . धनतेरस के दिन लोग घरों के लिए नए बर्तन की खरीदी करते हैं। इस दिन कुछ बड़ा समान खरीदने का भी रिवाज है इसीलिए बहुत से लोग इस दिन सोने अथवा चांदी का सामान खरीदते हैं। वहीं बहुत से लोग गाड़ी अथवा कोई महँगे समान की खरीद करते हैं। दीपावली की पूजन सामग्री जैंसे दिए, लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति, झाड़, नारियल, कपड़े आदि की खरीद भी धनतेरस के दिन करना शुभ माना जाता है। इस दिन व्यापारी कौड़िआं खेलते है और अपने गल्ले में कौड़िआं रखते हैं क्योंकि मान्यता है धनतेरस के दिन लक्ष्मी जी भी प्रकट हुई थी और उस समय उनके हाथों में कौंड़ी थी। माना जाता है कि गल्ला में कौंड़ी रखने से व्यापार में कभी नुकसान नहीं होगा।इस दिन घरों में धन व नई सामग्री की भी पूजा की जाती है। धनतेरस दीपावली की शुरुआत माना जाता है।

भगवान धन्वंतरि कथा (समुद्र मंथन) : पौराणिक कथा के अनुसार, जब देवता और दानवों ने मिलकर समुद्र मंथन किया तो इस महा अभियान से ही ऐरावत, चंद्रमा, उच्चैश्रवा, परिजात, वारुणी, रंभा आदि 14 रत्नों के साथ हलाहल विष भी निकला । इसके बाद समुद्र मंथन के दौरान **कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन आदिदेव भगवान धन्वंतरि** अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, तत्पश्चात इसी **महामंथन से देवी महालक्ष्मी जन्मीं** ।

इसलिए धनतेरस के दिन सोना, चांदी या बर्तन खरीदना शुभ माना जाता है. भगवान धन्वन्तरि को औषधि और चिकित्सा का देवता भी माना जाता है. मान्यता है कि इनकी पूजा करने से सभी प्रकार के रोग से छुटकारा मिलता है. कार्तिक माह कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि पर भगवान विष्णु के वामन अवतार ने असुराज बलि से दान में तीनों लोक मांगे थे और देवताओं को उनकी खोई हुई संपत्ति और स्वर्ग प्रदान किया था. इसी वजह से दिवाली से पहले धनतेरस का त्योहार मनाया जाता है.

धनतेरस कथा : पौराणिक कथा के अनुसार , एक बार यमराज ने यमदूतों से सवाल किया कि तुम न जाने कितने मनुष्यों के प्राण लेते हो. क्या तुम्हें कभी मनुष्यों के प्राण लेने में किसी पर दया नहीं आती है. यमदूतों ने कहा कि नहीं महाराज, हम सिर्फ आपके दिए हुए निर्देषों का पालन करते हैं. यमराज ने कहा कि बेझिझक होकर बताओं कि क्या कभी किसी व्यक्ति के प्राण लेने में दया आई है? तब एक यमदूत ने जवाब दिया कि एक बार ऐसी घटना हुई है.

महाराज हंस नाम का एक प्रतापी राजा था. वह शिकार खेलते-खेलते **महाराज हेमराज** के राज्य में पहुंच गया. भूख प्यास से व्याकुल राजा हंस का राजा हेमराज ने भव्य आतिथ्य किया. उसी दिन हेमराज को एक पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसके जन्म को लेकर ज्योतिषी ने भविष्यवाणी करते हुए कहा कि इस बालक के विवाह के चौथे दिन इसकी मृत्यु निश्चित है. इस बात से हेमराज काफी दुःखी हुआ. तभी **महाराज हंस** ने सांत्वना देते हुए **महाराज हेमराज** के बेटे की रक्षा की जिम्मेदारी खुद पर ले ली और हेमराज के बेटे के लिए यमुना किनारे एक विशेष किले का निर्माण कराया, जहां वायु भी उसकी अनुमति के बिना अंदर प्रवेश नहीं कर सकती थी. यमदूत ने आगे बताया, इस प्रकार राजकुमार तरुण बड़े हुए. लेकिन देवयोग से उन्हें एक राजकुमारी दिखी और **दोनों ने चुपके से गंधर्व विवाह कर लिया**. इसकी सूचना राजा हंस और हेमराज को मिलते ही दोनों ने नियति को टालने का प्रयास शुरू किया, लेकिन हमने राजकुमार तरुण के प्राण हर लिए.

यमदूत ने कहा - जहां कुछ समय पहले तक उत्सव का वातावरण था, वहां चीख-पुकार मच गई. नवविवाहिता राजकुमारी तो ऐसा दारूण विलाप कर रही थी कि मेरा कठोर मन भी उसे सुनकर विचलित हो गया. 'हे यमराज मैं स्वयं भी रोने लगा परंतु कर्तव्य की डोर से बंधा होने के कारण मैं विवश होकर वहां से उसके प्राण लेकर चला आया.

यमदेव भी यमदूत की बात सुनकर विचलित हो गए. अकाल मृत्यु के दोष मुक्त होने को लेकर दूत के अनुरोध पर यमदेव ने कहा : - धनतेरस के दिन विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना करने और दीपदान करने से अकाल मृत्यु नहीं होती है. जो प्राणी कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी की रात में मेरा पूजन करके दीप माला से दक्षिण दिशा की ओर मुंह वाला दीपक जलाएगा,. दीपक जलाते समय उस जीव को जीवनभर धर्म मार्ग पर चलने का वचन भी देगा, उसकी कभी अकाल मृत्यु नहीं होगी. वह समस्त सुखों का उपभोग करने के उपरांत ही मृत्यु को प्राप्त होगा.

कार्तिक कृष्ण पक्ष की नर्क चतुर्दशी :

दीपावली से पहले नरक चतुर्दशी यानी छोटी दीपावली भी पूरे धूम-धाम से मनाई जाती है। इसे रूप चौदस के नाम से भी जाना जाता है। पूरे परिवार की उपस्थिति में, 14 मिट्टी के दीये दक्षिण की ओर मुंह करके जलाए जाते हैं।

पौराणिक कथा कहते हैं कि भूदेवी समस्त प्राणियों का कल्याण करती हैं और पोषण करती है, लेकिन चिरकाल में एक समय ऐसा आया जब उनके ही पुत्र ने समस्त सृष्टि में दहशत मचा दी। जब देवतागण भी उसके समक्ष कमज़ोर पड़ने लगे तो देवराज इंद्र श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण की शरण में पहुंचे। श्रीकृष्ण ने उनका स्वागत किया, उन्हें आसन ग्रहण करने के लिए कहा और फिर उनसे वहां आने का कारण पूछा। इसपर इंद्रदेव बोले, "हे प्रभु, पूरे देवलोक में हाहाकार मचा हुआ है। नरकासुर नामक एक पापी के अत्याचारों के कारण समस्त देवता गणों पर भय के बादल छाएं हुए हैं। उसने हमारी देवमाता अदिति का भी अपमान करते हुए, उनके कुण्डल चुरा लिए हैं।" यह सुनकर श्रीकृष्ण की पत्नी सत्यभामा बोलीं कि, "परंतु देवता तो स्वयं सबकी रक्षा करते हैं और अत्यंत शक्तिशाली होते हैं, फिर आप लोगों को किसी असुर ने इस प्रकार प्रताड़ित कैसे कर दिया?" इंद्रदेव - "देवी, इसके पीछे का कारण ब्रह्मा जी का वरदान है, जो कि उन्होंने नरकासुर की तपस्या से प्रसन्न होकर उसे दिया था। इस वरदान के अनुसार, कोई भी देवता नरकासुर का वध नहीं कर सकता। इसलिए ब्रह्म देव ने हमें आपकी शरण में आने के लिए कहा है।" श्रीकृष्ण ने इंद्रदेव की सहायता करने का आश्वासन दिया और नरकासुर की नगरी की ओर युद्ध करने के लिए जाने लगे। जाते समय उनकी पत्नी बोलीं, हे प्रभु, कृपया मुझे भी अपने साथ ले चलें। मैं इस युद्ध में आपकी सहायता करूंगी। श्रीकृष्ण बोले, जैसी आपकी इच्छा। इसके पश्चात् श्रीकृष्ण जी पत्नी के साथ गरुण पक्षी पर सवार होकर नरकासुर की नगरी में पहुंचे और वहां उन्होंने आकाश से ही उनकी सेना पर वार करना शुरू कर दिया। उनके आक्रमण से नरकासुर की पूरी सेना समाप्त हो गई और एक दूत ने नरकासुर को इसकी जानकारी दी। नरकासुर गुस्से में आग-बबुला होकर श्रीकृष्ण के समक्ष गया और बोला, "ग्वाले, तुझे अपने प्राण प्रिय नहीं हैं क्या? तेरा इतना दुस्साहस कि तूने मेरी ही सेना पर आक्रमण कर, मेरे सैनिकों को मार दिया। तूने अकारण मेरी सेना का वध क्यों किया?" श्रीकृष्ण बोले, "मैं कोई भी कार्य अकारण नहीं करता, यह सभी हर पाप और अधर्म में तुम्हारे साथी थे।" "तेरे पापों की सूची अंतहीन है। तूने माता अदिति के कुण्डल छीने, तूने लोक हित के लिए तपस्या करने वाले ऋषि मुनियों की तपस्या

भंग की, तूने ब्रह्मा जी के वरदान का दुरुपयोग कर, उनका अपमान किया, तूने देवताओं को प्रताड़ित किया, राजाओं, ब्राह्मणों और राजकुमारियों का बलपूर्वक अपहरण किया और उन्हें बंदी बनाया।"

नरकासुर बीच में बोला, शांत हो जा ग्वाले, मैं ही धर्म की परिभाषा हूँ, मैं जो करता हूँ, वही धर्म कहलाता है। तू किस अधर्म की बात कर रहा है। मैं अपने हिसाब से धर्म का पालन करता हूँ। श्रीकृष्ण ने उसे समझाते हुए कहा, "यह तू नहीं, तेरा अहंकार बोल रहा है। पापों के अंधकार में तू धर्म और अधर्म के बीच का अंतर ही भूल गया। मैं तेरा वध करके धर्म की स्थापना करूँगा।"अपने वध की बात सुनते ही, नरकेश्वर क्रोध की ज्वाला में जलने लगा और उसने श्रीकष्ण पर अस्त्र चलाकर, युद्ध प्रारंभ कर दिया। इस प्रचंड युद्ध में भगवान श्रीकृष्ण और नरकासुर के बीच तीरों की बौछार होने लगी, और दोनों ही तरफ से अत्यंत विनाशकारी अस्त्र-शस्त्र चलने लगे। इस भयंकर युद्ध के बीच श्रीकृष्ण जब धनुष की प्रत्यंचा चढ़ा रहे थे, तो वह डोरी टूट गई। नरकासुर ने इस मौके का फायदा उठाते हुए, तुरंत उनपर वार किया। यह देखकर, श्रीकृष्ण की पत्नी अपना हाथ आगे कर देती हैं, और उस प्रहार को अपने हाथों से रोक देती हैं। अपनी पत्नी पर किए गए प्रहार को देखकर, श्रीकृष्ण अपना सुदर्शन चक्र निकालते हैं और नरकासुर का वध कर, उसे दो हिस्सों में काट देते हैं। तभी धरती फट जाती है और उस पापी असुर के शरीर के हिस्से उसमें समा जाते हैं। इसके पश्चात्, भूदेवी वहां प्रकट होती हैं और हाथ जोड़ते हुए श्रीकृष्ण को प्रणाम करती हैं। जब श्रीकृष्ण उनका परिचय पूछते हैं तो वह बताती हैं कि, "मैं भूदेवी हूं, यह नरकासुर मेरा ही पुत्र था, भगवन, आपने अपने वराह रूप में इस पुत्र को मुझे वरदान के रूप में दिया था, अच्छा हुआ आज इसे मुक्ति भी आपके ही हाथों से मिल गई। मेरे ऊपर से पापों का भार कम करने के लिए तो आप आएं हैं, वह मेरा पुत्र ज़रूर था, लेकिन उसके पापों का बोझ मेरे लिए असहनीय हो गया था। इस कारण मुझे उसकी मृत्यु का कोई शोक नहीं है।"श्रीकृष्ण बोलते हैं कि, "देवी आपका पुत्र असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगा था और उसके पापों का घड़ा भर चुका था, इसलिए मुझे उसका वध कर, उसे मुक्ति देनी पड़ी।" इसके पश्चात भूदेवी नरकासुर के कानों से निकाले हुए माता अदिति के कुंडल श्रीकृष्ण को लौटा देती हैं और पुनः धरती में समाहित हो जाती हैं।श्रीकृष्ण इस प्रकार नरकासुर का वध कर, देवताओं को उसके भय से मुक्त करते हैं। साथ ही नरकासुर द्वारा बंदी बनाई गईं **सोलह हज़ार एक सौ कन्यायों** को भी कैद से मुक्ति दिलाते हैं और उन्हें सम्मान प्रदान करते हैं। श्रीकृष्ण ने कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन ही नरकासुर का वध किया था और इसलिए इसे नरक चतुर्दशी के नाम से भी जाना जाता है।

कार्तिक मास अमावस (पितरों की अमावस्या)

कार्तिक मास की अमावस्या को **पितरों का** दिन कहा गया है।

पितरों के निमित स्थान पर २ मिटटी की कुज्जीया, कच्ची दूध की लस्सी, कार्तिक अमावस्या पर 5 मिठाई, 4 पूड़े, गुलगुले, बताशे, कलावा, मेहँदी, अन्न, और तिल का दान, ३ धागो वाले- देसी घी का 02 दीप-दान , ७ बार मिटटी निकालते है। फिर ही भोजन करना है।

पितरों की पूजा घर में : ३ धागो वाले, देशी घी के ०२ दीपक जलाने हैं , गेंहू के मीठे चीले (२ या 4), गेंहू के गुलगुले (७ या ११) बना कर मेहँदी से टीका करना है। सिर ढके, दक्षिणमुखी बैठ कर, ॐ सर्व पितृ-देवताभ्यो नमः कहते हुए , कच्चे दूध और काले तिल को पानी में मिला कर दाहिने हाथ पर गिराते हुए अंगूठे से साइड में होते हुए मिटटी में, शिवलिंग के पास छोड़ना हैं। ब्राह्मण हो तो उसको खाना खिला कर, फल और दक्षिणा के साथ विदा करना हैं। गेंहू के मीठे चीले , गेंहू के गुलगुले गौ को खिला आवें। फिर ही भोजन करना है।

इस दिन **श्राद्ध, तर्पण और दान** करने से पितृ तृप्त होकर आशीर्वाद देते हैं। अमावस्या की रात्रि ग्रहों और चंद्रमा की अधिक ऊर्जा का प्रभाव से व्यक्ति के मनोभाव, क्रोध और मानसिक स्थिति पर असर पड़ सकता है। अमावस्या का धार्मिक स्नान और दान पुण्य अत्यंत फलदायी माना गया है। पूजा विधि एवं धार्मिक कार्य : प्रातः स्नान के पश्चात गंगा, यमुना या किसी पवित्र नदी में स्नान करना श्रेष्ठ माना गया है। घर पर पूजा स्थान में दीप प्रज्वलित करें और पितरों को जल अर्पित करें। दान-पुण्य करें – विशेषकर अन्न, वस्त्र और तिल का दान।

दीपावली एवं श्रीलक्ष्मी (नवीन प्रतिमा) की षोडशोपचार पूजा

सायं काल में घर के बीच स्वस्तिक बना कर श्री रामचंद्र जी, माँ दुर्गा का ध्यान कर 25, 31,51 दीपक जलाने है। वरुण (जल)देवता, देवी अन्नपूर्णा, चौराहा, तुलसी, मंदिर, केले, पीपल, शिव शंकर, महालक्ष्मी, कुलदेवी, सती माता, पितरों का घी का दीपक, पीर बाबा (२ दीये), शनि देव का काले तिल, तेल का दीपक , दरवाजे के दोनों ओर, ४ कुज्जिओं पर, एक चौमुहा दीया के साथ (११,२१ दीपक) जला कर लक्ष्मी पूजन करना है। भोजन - अदरक वाली, साबुत मूंग दाल, चावल

गणेश /देवी लक्ष्मी की प्रतिमायें	**मिट्टी के 5 बड़े दीपक**	**गौमती चक्र**	**हल्दी,**	**धन, गहने,**
देवी लक्ष्मी हेतु लाल रेशमी वस्त्र,	**मिट्टी के छोटे 25 दीपक**	**बही-खाता**	**चरणामृत (गंगाजल, दही, घी, शक्कर, शहद, तुलसी)**	**दूब - दूर्वा घास**
भगवान के आसन हेतु लाल वस्त्र	**बिल्व-पत्र , तुलसी-पत्र**	**नैवेद्य - 5 मिष्ठान,**		**लक्ष्मी के चरण,**
मूर्ति हेतु लकड़ी की चौकी	**मीठे 3-4 पान**	**५ घर की मिठाई**	**बताशे, खील, जलेबी,**	**कौड़िआं,**
एक नया मिट्टी का कलश	**एक पीला वस्त्र**	**पका हुआ चावल**	**नारियल,**	**पुष्प तथा 3-4 पुष्पमाला।**
बिल्व /अनार लकड़ी की कलम और दवात	**पानी,**	**कमल के बीज,**	**5 फल तथा गन्ना,**	**अखरोट**

५ वृक्षों के पत्ते (आम, पलाश, बरगद, पीपल,बकुल)
सर्वौषधि - दस जड़ी बूटी (मुरा, बच, जटामासी, कुष्ठ, शैलेय, हरदी, दारु-हरदी, सूंठी, चम्पक, मुस्ता)
सप्त-मृत्तिका : गौशाला और अश्वशाला की मिट्टी, हाथी के पैर की मिट्टी, चींटी की बाम्बी की मिट्टी, नदी के संगम की मिट्टी, तरायी की मिट्टी, राजकीय स्थान की मिट्टी

1. श्री लक्ष्मी ध्यान मन्त्र

या सा पद्मासनस्था विपुल-कटि-तटी पद्म-पत्रायताक्षी। गम्भीरार्तव-नाभिः स्तन-भर-नमिता शुभ्र-वस्त्रोत्तरीया॥
या लक्ष्मीर्दिव्य-रूपैर्मणि-गण-खचितैः स्वापिता हेम-कुम्भैः। सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्व-माङ्गल्य-युक्ता॥

भगवती लक्ष्मी कमल के आसन पर विराजमान हैं, कमल की पँखुड़ियों के समान सुन्दर बड़े-बड़े जिनके नेत्र हैं, जिनकी विस्तृत कमर और गहरे आवर्तवाली नाभि है, जो पयोधरों के भार से झुकी हुयी तथा सुन्दर वस्त्र के उत्तरीय से सुशोभित हैं, जो मणि-जटित दिव्य स्वर्ण-कलशों के द्वारा स्नान किये हुये हैं, वे कमल-हस्ता सदा सभी मङ्गलों के सहित मेरे घर में निवास करें।

2. श्री लक्ष्मी आवाहन मन्त्र	आगच्छ देवि देवेशि! तेजोमयि महा-लक्ष्मि! क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरवन्दिते! **॥श्रीलक्ष्मी-देवीम् आवाहयामि॥**	हे देवताओं की ईश्वरि! तेज-मयी हे महा-देवि लक्ष्मि! देव-वन्दिते! आइये, मेरे द्वारा की जाने वाली पूजा को स्वीकार करें। मैं भगवती श्रीलक्ष्मी का आवाहन करता हूँ ॥
3. **पुष्पाञ्जलि-आसनम्** **(पाँच पुष्प अञ्जलि में लेकर आसन के लिये)**	नाना-रत्न-समायुक्तं कार्त-स्वर-विभूषितम्। आसनं देवि देवेशि! प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥ **॥श्रीलक्ष्मी-देव्यै आसनार्थे पञ्च-पुष्पाणि समर्पयामि॥**	हे देवताओं की ईश्वरि! विविध प्रकार के रत्नों से युक्त स्वर्ण-सज्जित आसन को प्रसन्नता हेतु ग्रहण करें।॥ भगवती श्रीलक्ष्मी के आसन के लिये मैं पाँच पुष्प अर्पित करता हूँ ॥
4. **श्री लक्ष्मी स्वागत मन्त्र**	**श्रीलक्ष्मी-देवि! स्वागतम्।**	हे देवी, लक्ष्मि! आपका **स्वागत** है।
5. **श्री लक्ष्मी पाद्य मन्त्र (चरण धोने हेतु)**	पाद्यं गृहाण देवेशि सर्व-क्षेम-समर्थे भोः! भक्त्या समर्पितं देवि महालक्ष्मि! नमोऽस्तु ते॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः पाद्यं समर्पयामि ॥**	सभी प्रकार के कल्याण करने में समर्थ हे देवेश्वरि! चरण धोने का जल भक्ति-पूर्वक समर्पित है, स्वीकार करें। हे महादेवि, लक्ष्मि! आपको नमन है। भगवती श्रीलक्ष्मी को चरण धोने के लिये यह जल अर्पित करता हूँ ॥

6. श्री लक्ष्मी अर्घ्य मन्त्र (शिर के अभिषेक हेतु जल)	नमस्ते देवि देवेशि! नमस्ते कमल-धारिणि! गृहाणार्घ्यं मया दत्तं महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते। गन्ध-पुष्पाक्षतैर्युक्तं फल-द्रव्य-समन्वितम्। गृहाण तोयमर्घ्यर्थं परमेश्वरि वत्सले! **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि ॥**	हे श्री लक्ष्मि! आपको नमस्कार। हे कमल धारण करनेवाली देव-देवेश्वरि! आपको नमस्कार। हे धनदा देवि, श्रीलक्ष्मि! आपको नमस्कार। शिर के अभिषेक के लिये यह जल (अर्घ्य) स्वीकार करें। हे कृपा-मयि परमेश्वरि! चन्दन-पुष्प-अक्षत से युक्त, फल और द्रव्य के सहित यह जल शिर के अभिषेक के लिये स्वीकार करें।भगवती श्रीलक्ष्मी के लिये अर्घ्य समर्पित है।
7. श्री लक्ष्मी स्नान मन्त्र	गङ्गासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितासि मया देवि तथा शान्तिं कुरुष्व मे॥ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो , वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु , मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः! **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः जलस्नानं समर्पयामि ॥**	
8. श्री लक्ष्मी पञ्चामृत स्नान मन्त्र	दधि मधु घृतञ्चैव पयश्च शर्करायुतम्। पञ्चामृतं समानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशे भवत् सरित्॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥**	
9. श्री लक्ष्मी गन्ध स्नान मन्त्र	ॐ मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम्। चन्दनं देवि देवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः गन्धस्नानं समर्पयामि ॥**	
10. श्री लक्ष्मी शुद्ध स्नान मन्त्र	मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् । तदिदं कल्पितं तुभ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥**	
11. श्री लक्ष्मी वस्त्र (कलावा) मन्त्र	दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम्। दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके॥ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि ॥**	

12. श्री लक्ष्मी मधुपर्क मन्त्र	ॐ कापिलं दधि कुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम्। स्वर्णपात्रस्थितं देवि मधुपर्कं गृहाण भोः॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि ॥**
13 श्री लक्ष्मी आभूषण मन्त्र	रत्नकङ्कण-वैदूर्यमुक्ताहारयुतानि च। सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व मे॥ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः आभूषणानि समर्पयामि ॥**
14. श्री लक्ष्मी रक्तचन्दन मन्त्र	ॐ रक्तचन्दनसम्मिश्रं पारिजातसमुद्भवम्। मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम्॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः आभूषणानि समर्पयामि ॥**
15, श्री लक्ष्मी सिन्दुर मन्त्र (तिलक के लिये)	ॐ सिन्दूरं रक्तवर्णञ्च सिन्दूरतिलकप्रिये। भक्त्या दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः सिन्दूरं समर्पयामि ॥**
16. श्री लक्ष्मी कुङ्कुम स्नान मन्त्र	ॐ कुङ्कुमं कामदं दिव्यं कुङ्कुमं कामरूपिणम्। अखण्डकामसौभाग्यं कुङ्कुमं प्रतिगृह्यताम्॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः कुङ्कुमं समर्पयामि ॥**
17. श्री लक्ष्मी- अबीर गुलाल मन्त्र	अबीरञ्च गुलालं च चोवा-चन्दनमेव च। श्रृङ्गारार्थं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः अबीरगुलालं समर्पयामि ॥**
18. श्री लक्ष्मी सुगन्धित द्रव्य मन्त्र	ॐ तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च। मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वरि॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः सुगन्धिततैलं समर्पयामि ॥**
19 श्री लक्ष्मी अक्षत मन्त्र	अक्षताश्च सुरश्रेष्ठे कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि ॥**

<table>
<tr><td rowspan="1">20. श्री लक्ष्मी
गन्ध /चन्दन-समर्पण
मन्त्र</td><td colspan="2">श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं महालक्ष्मि! चन्दनं प्रति-गृह्यताम्॥
॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः चन्दनं समर्पयामि ॥</td><td colspan="2">हे महा-लक्ष्मि! मनोहर और सुगन्धित चन्दन शरीर में लगाने हेतु ग्रहण करें। ॥ भगवती श्रीलक्ष्मी के लिये चन्दन समर्पित करता हूँ ॥</td></tr>
<tr><td>21. श्री लक्ष्मी
पुष्प समर्पण मन्त्र</td><td colspan="2">यथाप्राप्त-ऋतुपुष्पैः बिल्व-तुलसी-दलैरपि।
पूजयामि महा-लक्ष्मि! प्रसीद मे सुरेश्वरि!
॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः पुष्पं समर्पयामि ॥</td><td colspan="2">हे महा-लक्ष्मि! ऋतु के अनुसार पुष्पों और विल्व तथा तुलसी-दलों से मैं पूजा करता हूँ।॥ भगवती श्रीलक्ष्मी के लिये पुष्प समर्पित करता हूँ ॥</td></tr>
<tr><td rowspan="2">22. श्री लक्ष्मी
अङ्ग पूजन मन्त्र</td><td colspan="4">(बायें हाथ में चावल, पुष्प व चन्दन लेकर मन्त्र उच्चारण करते हुये दायें हाथ से श्री लक्ष्मी की मूर्ति के पास छोड़ें)</td></tr>
<tr><td colspan="2">ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि।
ॐ चञ्चलायै नमः जानुनी पूजयामि।
ॐ कमलायै नमः कटिं पूजयामि।
ॐ कात्यायन्यै नमः नाभिं पूजयामि।</td><td colspan="2">ॐ जगन्मात्रे नमः जठरं पूजयामि।
ॐ विश्व-वल्लभायै नमः वक्ष-स्थलं पूजयामि।
ॐ कमल-वासिन्यै नमः हस्तौ पूजयामि।
ॐ कमल-पत्राक्ष्यै नमः नेत्र-त्रयं पूजयामि।
ॐ श्रियै नमः शिरः पूजयामि।</td></tr>
<tr><td rowspan="2">23. श्री लक्ष्मी
अष्ट सिद्धि मन्त्र</td><td colspan="4">(बायें हाथ में चन्दन, पुष्प व चावल लेकर दायें हाथ से श्री लक्ष्मी की मूर्ति के समीप अष्ट-सिद्धियों की पूजा करें)</td></tr>
<tr><td>ॐ अणिम्ने नमः।
ॐ महिम्ने नमः।</td><td>ॐ गरिम्णे नमः।
ॐ लघिम्ने नमः।</td><td>ॐ प्राप्त्यै नमः।
ॐ प्राकाम्यै नमः।</td><td>ॐ ईशितायै नमः।
ॐ वशितायै नमः।</td></tr>
<tr><td rowspan="2">24. श्री लक्ष्मी
अष्ट लक्ष्मी मन्त्र</td><td colspan="4">(बायें हाथ में चन्दन, पुष्प व चावल लेकर दायें हाथ से श्री लक्ष्मी की मूर्ति के समीप अष्ट- लक्ष्मी की पूजा करें)</td></tr>
<tr><td>ॐ आद्य-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ विद्या-लक्ष्म्यै नमः।</td><td>ॐ सौभाग्य-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ अमृत-लक्ष्म्यै नमः।</td><td>ॐ कमलाक्ष्यै नमः।
ॐ सत्य-लक्ष्म्यै नमः।</td><td>ॐ भोग-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ योग-लक्ष्म्यै नमः।</td></tr>
</table>

25. श्री लक्ष्मी धूप समर्पण मन्त्र	वनस्पति-रसोद्भूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्व-देवानां, धूपोऽयं प्रति-गृह्यताम्॥ ॥ **श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः धूपं समर्पयामि ॥**	वृक्षों के रस से निर्मित, सुन्दर, मनोहर, सुगन्धित और सभी देवताओं के सूँघने के योग्य यह धूप आप ग्रहण करें। ॥ भगवती श्रीलक्ष्मी के लिये मैं धूप समर्पित करता हूँ ॥
26. श्री लक्ष्मी दीप समर्पण मन्त्र	साज्यं त्रिवर्ति-संयुक्तं वह्निना योजितं मया, दीपं गृहाण देवेशि! त्रैलोक्य-तिमिरापहम्। भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देव्यै परमात्मने। त्राहि मां नरकात् घोरात् दीपोऽयं प्रति-गृह्यताम्॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः दीपं समर्पयामि ॥**	हे देवेश्वरि! घी के सहित और बत्ती से मेरे द्वारा जलाया हुआ, तीनों लोकों के अँधेरे को दूर करने वाला दीपक स्वीकार करें। मैं भक्ति-पूर्वक परात्परा श्रीलक्ष्मी-देवी को दीपक प्रदान करता हूँ। इस दीपक को स्वीकार करें और घोर नरक से मेरी रक्षा करें।॥ भगवती श्रीलक्ष्मी के लिये दीपक समर्पित करता हूँ ॥
27. श्री लक्ष्मी नैवेद्य समर्पण मन्त्र :-	शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च। आहारो भक्ष्य-भोज्यं च नैवेद्यं प्रति-गृह्यताम्। **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः यथांशतः श्रीलक्ष्मी-देव्यै नैवेद्यं समर्पयामि** **ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा।** **ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।** **ॐ व्यानाय स्वाहा ॥**	शर्करा-खण्ड (बताशा आदि), खाद्य पदार्थ, दही, दूध और घी जैसी खाने की वस्तुओं से युक्त भोजन आप ग्रहण करें।॥ यथा-योग्य रूप भगवती श्रीलक्ष्मी को मैं नैवेद्य समर्पित करता हूँ - प्राण के लिये, अपान के लिये, समान के लिये, उदान के लिये और व्यान के लिये स्वीकार हो ॥
28. श्री लक्ष्मी आचमन-समर्पणम्/ जल-समर्पणम् मन्त्र	**ततः पानीयं समर्पयामि , इति उत्तरापोषणम्।** **हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि। मुख-प्रक्षालनं।** **करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।**	नैवेद्य के पश्चात् मैं पीने और आचमन (उत्तरा-पोशन) के लिये, हाथ धोने के लिये, मुख धोने के लिये जल और हाथों में लगाने के लिये चन्दन समर्पित करता हूँ।

29. श्री लक्ष्मी ताम्बूल-(पान, सुपारी सहित) समर्पण मन्त्र	पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली-दलैर्युतम्। कर्पूरैला-समायुक्तं ताम्बूलं प्रति-गृह्यताम्॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः मुख-वासार्थं पूगी-फलयुक्तं ताम्बूलं समर्पयामि ॥**	पान के पत्तों से युक्त अत्यन्त सुन्दर सुपारी, कपूर और इलायची से प्रस्तुत ताम्बूल आप स्वीकार करें।॥ भगवती श्रीलक्ष्मी के मुख को सुगन्धित करने के लिये सुपारी से युक्त ताम्बूल मैं समर्पित करता हूँ ॥
30. श्री लक्ष्मी दक्षिणा समर्पण मन्त्र	हिरण्य-गर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्य-फलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः सुवर्णपुष्प-दक्षिणां समर्पयामि ॥**	असीम पुण्य प्रदान करने वाली स्वर्ण-गर्भित चम्पक पुष्प से मुझे शान्ति प्रदान करिये। ॥ भगवती श्रीलक्ष्मी के लिये मैं स्वर्ण-पुष्प-रूपी दक्षिणा प्रदान करता हूँ ॥
31. श्री लक्ष्मी प्रदक्षिणा मन्त्र (श्री लक्ष्मी की बायें से दायें ओर प्रदक्षिणा करें)	यानि कानि च पापानि जन्मान्तर-कृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात् कारुण्य-भावेन, क्षमस्व परमेश्वरि॥ **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥** मन्त्र का उच्चारण करते हुये फूल समर्पित करें।	पिछले जन्मों में जो भी पाप किये होते हैं, वे प्रदक्षिणा करते समय एक-एक पग पर क्रमशः नष्ट होते जाते हैं। हे देवि! मेरे लिये कोई अन्य शरण देनेवाला नहीं हैं, तुम्हीं शरण-दात्री हो। अतः हे परमेश्वरि भगवती श्री लक्ष्मी! दया-भाव से मुझे क्षमा करो॥ मैं प्रदक्षिणा समर्पित करता हूँ॥
32. श्री लक्ष्मी वन्दना - सहित पुष्पाञ्जलिः (वन्दना करें तथा मन्त्र का उच्चारण करते हुये श्रीलक्ष्मी को पुष्प समर्पित करें)	करकृतं वा कायजं कर्मजं वा, श्रवण-नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विदितमविदितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व, जय जय करुणाब्धे, श्रीमहा-लक्ष्मि त्राहि। **॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै नमः मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥**	हे दया-सागर, श्रीलक्ष्मि! हाथों-पैरों द्वारा किये हुये या शरीर या कर्म से उत्पन्न, कानों-आँखों से उत्पन्न या मन के जो भी ज्ञात/ अज्ञात मेरे अपराध हों, उन सबको आप क्षमा करें। आपकी जय हो, जय हो। मेरी रक्षा करें। ॥ भगवती श्रीलक्ष्मी के लिये मैं मन्त्र-पुष्पांजलि समर्पित करता हूँ ॥

33. श्री लक्ष्मी साष्टाङ्ग प्रणाम मन्त्र	ॐ भवानि! त्वं महा-लक्ष्मीः सर्व-काम-प्रदायिनी। प्रसन्ना सन्तुष्टा भव देवि! लक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते। **॥ अनेन पूजनेन श्रीलक्ष्मी देवी प्रीयतां नमो नमः॥**	हे भवानी! आप सभी कामनाओं को देने वाली महा-लक्ष्मी हैं। हे देवि! आप प्रसन्न और सन्तुष्ट हों। आपको नमस्कार।॥ इस पूजन से श्रीलक्ष्मी देवी प्रसन्न हों, उन्हें बारम्बार नमस्कार ॥
34. श्री लक्ष्मी से क्षमा प्रार्थना मन्त्र	**आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्॥ पूजा-कर्म न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्ति-हीनं सुरेश्वरि! मया यत्पूजितं देवि! परिपूर्णं तदस्तु मे॥ अनेन यथा-मिलितोपचार-द्रव्यैः कृत-पूजनेन श्रीलक्ष्मी-देवी प्रीयताम् ॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै अर्पणमस्तु ॥**	न मैं आवाहन करना जानता हूँ, न विसर्जन करना। पूजा-कर्म भी मैं नहीं जानता। हे परमेश्वरि! मुझे क्षमा करो। मन्त्र, क्रिया और भक्ति से रहित जो कुछ पूजा मैंने की है, हे देवि! वह मेरी पूजा सम्पूर्ण हो। यथा-सम्भव प्राप्त उपचार-वस्तुओं से मैंने जो यह पूजन किया है, उससे भगवती श्रीलक्ष्मी प्रसन्न हों। ॥ भगवती श्रीलक्ष्मी को यह समस्त पूजन समर्पित है ॥

गणेश जी की आरती

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा,
माता जाकी पारवती, पिता महादेवा,
एक दन्त दयावन्त ४ भुजाधारी ,
माथे पर सिंदूर सोहे, मूसे की सवारी,
पान चढ़े पुष्प चढ़े और चढ़े मेवा ,
लड्डुअन का भोग लगे संत करे सेवा,
अंधन को आँख देत, कोढ़िन को काया,
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया,
सूर श्याम शरण आये सफल कीजे सेवा,
माता जाकी पारवती, पिता महादेवा,
दीनन की लाज रखो , शम्भू सुतकारी ,
कामना को पूरा करो, जाऊं बलिहारी
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा,
माता जाकी पारवती, पिता महादेवा

गजाननं भूत गणादि सेवितं, कपित्थ जम्बू फलचारू भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकम्, नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्॥
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
ॐ एकदंताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।

भगवान् श्रीसत्यनारायणजी की आरती

जय लक्ष्मीरमणा, श्रीलक्ष्मीरमणा। सत्यनारायण स्वामी जन-पातक-हरणा॥ जय॰ ॥ टेक ॥
रत्नजटित सिंहासन अद्भुत छबि राजै। नारद करत निराजन घंटा ध्वनि बाजै॥ जय॰ ॥
प्रकट भये कलि कारण, द्विजको दरस दियो। बूढ़े ब्राह्मण बनकर कंचन-महल कियो॥ जय॰ ॥
दुर्बल भील कठारो, जिनपर कृपा करी। चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी बिपति हरी॥ जय॰ ॥
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं। सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर अस्तुति कीन्हीं ॥ जय॰ ॥
भाव-भक्तिके कारण छिन-छिन रूप धरणो। श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सरथो॥ जय॰ ॥
ग्वाल-बाल सँग राजा वनमें भक्ति करी। मनवांछित फल दीन्हों दीनदयालु हरी॥ जय॰ ॥
चढ़त प्रसाद सवायो कदलीफल, मेवा। धूप-दीप-तुलसीसे राजी सत्यदेवा ॥ जय॰ ॥
(सत्य) नारायणजीकी आरति जो कोड़ नर गावै। तन-मन-सुख-सम्पति मन-वांछित फल पावै॥ जय॰

मंगलम भगवान् विष्णु, मंगलम गरुड़ध्वजः| मंगलम पुन्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरि ||
शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशं| विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्ण शुभांगम् ।
लक्ष्मीकांत कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णु भवभयहरं सर्व लौकेक नाथम् ॥
ॐ श्री विष्णवे च विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधू च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव

भगवान् ब्रह्मा, विष्णु, महेश की आरती

जय शिव औंकारा, भज शिव औंकारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा,॥ ॐ हर हर महादेव ॥
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै। हंसासन गरुडासन वृषवाह न साजै॥ २॥ ॐ हर हर०
दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै। तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै॥ ३॥ ॐ हर हर०
अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी। त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी ॥ ४ ॥ ॐ हर हर०
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे। सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे॥ ५॥ ॐ हर हर०
कर. मध्ये. सुकमण्डलु चक्र शूलधारी। सुखकारी दुखहारी जग-पालनकारी ॥ ६॥ ॐ हर हर०
ब्रह्मा. विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। प्रणवाक्षरमें शोभित ये तीनों एका॥ ७॥ ॐ हर हर०
त्रिगुणस्वामिकी आरति जो कोइ नर गावै। भनत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित पावै॥ ८ ॥ ॐ हर हर०

लक्ष्मी माता की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता **।** तुमको निसदिन सेवत, हर विष्णु विधाता ॥
उमा, रमा, ब्रम्हाणी, तुम ही जग माता । सूर्य चद्रंमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॥ॐ ॥
दुर्गा रुप निरंजनि, सुख-संपत्ति दाता । जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ॥ ॥ॐ ॥
तुम ही पाताल निवासनी, तुम ही शुभदाता । कर्म-प्रभाव-प्रकाशनी, भव निधि की त्राता ॥ ॥ॐ ॥
जिस घर तुम रहती, ताँहि में हैं सद्‌गुण आता। सब सभंव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ ॥ॐ ॥
तुम बिन यज्ञ ना होता, वस्त्र न कोई पाता । खान पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ ॥ॐ ॥
शुभ गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि जाता । रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥ ॥ॐ ॥
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता । उर आंनद समाता, पाप उतर जाता ॥॥ॐ ॥

श्री अम्बे जी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी॥१॥जय अम्बे०
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको। उज्ज्बलसे दोउ नैना,चंद्रवदन नीको॥२॥जय अम्बे०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै। रक्त-पुष्प गल माला,कण्ठनपर साजै॥३॥जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी। सुर-नर-मुनि-जन सेवत,तिनके दुखहारी॥४॥जय अम्बे०
कानन कुण्डल शोभित,नासाग्रे मोती। कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती॥५॥जय अम्बे०
शुम्भ निशुम्भ विदारे,महिषासुर-घाती। धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती॥६॥जय अम्बे
चण्ड मुण्ड संहारे,शोणितबीज हरे। मधु कैटभ दोउ मारे,सुर भयहीन करे॥७॥जय अम्बे०
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी। आगम-निगम-बखानी,तुम शिव पटरानी॥८॥जय अम्बे०
चौंसठ योगिनि गावत,नृत्य करत भैरूँ। बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू॥९॥जय अम्बे०
तुम ही जगकी माता,तुम ही हो भरता। भक्तनकी दुख हरता सुख सम्पति करता॥१०॥जय अम्बे०
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत,सेवत नर-नारी॥ ११॥जय अम्बे०
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती। (श्री)मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती॥१२॥जय अम्बे०
(श्री)अम्बेजीकी आरति जो कोइ नर गावे। कहत शिवानॉद स्वामी,सुख सम्पति पावै॥१३॥जय अम्बे०

सर्व मंगल मांग्लयै शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते ।।

श्री सूर्य-वन्दना

नमो नमस्तेउस्तु सदा विभावसो, सर्वात्मने सप्तहयाय भानवे। अनन्तशक्तिर्मणिभूषणेन वदस्व भक्तिं मम मुक्तिमव्ययाम् ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति-नन्दन। त्रिभुवन-तिमिर-निकन्दन भक्त-हृदय-चन्दन॥ टेक ॥
सप्त-अश्वरथ राजित एक चक्रधारी। दुखहारी, सुखकारी, मानस-मल-हारी ॥ जय० ॥

सुर-मुनि- भूसुर-वंदित, विमल विभवशाली | अघ-दल-दलन दिवाकर दिव्य किरण माली॥ जय०॥
सकल-सुकर्म-प्रसविता सविता शुभकारी। विश्व-विलोचन मोचन भव-बंधन भारी ॥ जय० ॥
कमल-समूह-विकासक, नाशक त्रय तापा। सेवत सहज हरत अति मनसिज-संतापा॥ जय०॥
नेत्र-व्याधि-हर सुरवर भू-पीड़ा-हारी | वृष्टि-विमोचन संतत परहित-ब्रतधारी ॥ जय० ॥
सूर्यदेव करुणाकर अब करुणा कीजे। हर अज्ञान-मोह सब तत्त्वज्ञान दीजै॥ जय०॥

जय जानकिनाथ की आरती

ॐ जय जानकिनाथा, हो प्रभु जय श्री रघुनाथा। दोऊ कर जोड़े विनवौं, प्रभु मेरी सुनो बाता ॥ ॐ ॥
तुम रघुनाथ हमारे, प्राण पिता माता। तुम हो सजन संग, भक्ति मुक्ति दाता ॥ ॐ ॥
चौरासी प्रभु फंद छुड़ावो, मेटो यम त्राता। निश दिन प्रभु मोहि राखो, अपने संग साथा ॥ ॐ ॥
सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, संग चारों भैया। जगमग ज्योति विराजत, शोभा अति लहिया ॥ ॐ ॥
हनुमत नाद बजावत, नेवर ठुमकाता। कंचन थाल आरती, करात कौशल्या माता ॥ ॐ ॥
किरिट मुकुट कर धनुष विराजत, शोभा अति भारी। तुलसीदास दर्शन कर, पल-पल बलिहारी॥ ॐ ॥
जय जानकिनाथा, हो प्रभु जय श्री रघुनाथा। प्रभु जय सीता माता, हो प्रभु जय लक्ष्मण भ्राता ॥ ॐ ॥
हो प्रभु जय चारों भ्राता, हो प्रभु जय हनुमत दासा। दोउ कर जोड़े विनवौं, प्रभु मेरी सुन बाता ॥ ॐ ॥

भगवान् श्रीरामचन्द्र आरती

श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणम्। नवकंजलोचन, कंज-मुख कर-कंज पद कंजारुणम् ॥
कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुंदरम्। पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौभि जनक सुता वरम् ॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश निकंदनम्। रघुनंद आनँदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनम् ॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्। आजानुभुज शर-चाप-धर संग्राम-जित-खर -दूषणम् ॥
इति बदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनम्। मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि-खल-दल-गंजनम्॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने॥

आरती कुंजबिहारी की,

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।
गले में बैजंती माला, बजावै मुरली मधुर बाला, श्रवण में कुण्डल झलकाला,
नंद के आनंद नंदलाला। श्री गिरिधर ....

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली, लतन में ठाढ़े बनमाली ॥
भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चन्द्र सी झलक; ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥ श्री गिरि..

कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसैं, गगन सों सुमन रासि बरसै ॥
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिन संग ॥ अतुल रति गोप कुमारी की ॥ श्री गिरि..

जहां ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा, स्मरन ते होत मोह भंगा ॥
बसी सिव सीस, जटा के बीच,हरै अघ कीच; चरन छवि श्रीबनवारी की ॥ श्री गिरि..

चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृंदावन बेनू, चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू ॥
हंसत मृदु मंद, चांदनी चंद, कटत भव फंद; टेर सुन दीन भिखारी की॥ श्री गिरि..

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।

अच्चुतम केशवं कृष्ण दामोदरं, राम नारायणं जानकी बल्लभम ।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्। देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव |

जिब्हे पिबस्व अमृतं एत देव, गोविन्द दामोदर माधवेती ||

शिव स्तुति

आशुतोष शशाँक शेखर, चन्द्र मौली चिदंबरा। कोटि कोटि प्रणाम शम्भू, कोटि नमन दिगम्बरा॥
निर्विकार ओमकार अविनाशी, तुम्ही देवाधि देव। जगत सर्जक प्रलय करता, शिवम सत्यम सुंदरा॥
निरंकार स्वरूप कालेश्वर, महा योगीश्वरा। दयानिधि दानिश्वर जय, जटाधार अभयंकरा॥
शूल पानी त्रिशूल धारी, औगड़ी बाघम्बरी। जय महेश त्रिलोचनाय, विश्वनाथ विशम्भरा॥
नाथ नागेश्वर हरो हर, पाप साप अभिशाप तम। महादेव महान भोले, सदा शिव शिव संकरा॥
जगत पति अनुरकती भक्ति, सदैव तेरे चरण हो। क्षमा हो अपराध सब, जय जयति जगदीश्वरा॥
जनम जीवन जगत का, संताप ताप मिटे सभी। ओम नमः शिवाय मन, जपता रहे पञ्चाक्षरा॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्। सदा बसन्तं हृदयारबिन्दे भबं भवानीसहितं नमामि।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् | उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ||

श्री हनुमान ललाजी की आरती

आरती कीजै हनुमानललाकी। दुष्टदलन रघुनाथ कलाकी ॥
जाके बलसे गिरिवर काँपै। रोग दोष जाके निकट न झाँपै॥ अंजनिपुत्र महा बलदाई। संतनके प्रभु सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये॥ लंका सोकोट समुद्र-सी खाई।जात पवनसुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे। सीतारामजीके काज सँवारे॥ लक्ष्मण मूछित पड़े सकारे । आनि सजीवन प्रान उबारे॥
पैठि पताल तोरि जम-कारे । अहिरावनकी भुजा उखारे॥ बायें भुजा असुरदल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे॥
सुर नर मुनि आरती उतारे। जय जय जय हनुमान उचारे॥ कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई॥
जो हनुमानजीकी आरति गावै | बसि बैकुंठ परम पद पावै॥

मनोजवम् मारुततुल्यवेगम् जितेन्द्रियम् बुद्धिमताम् वरिष्ठम्। वातात्मजम् वानरयूथमुख्यम् श्रीरामदूतम् शरणम् प्रपद्ये॥
अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहम्, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् |
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशम्, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ||

भगवान् जगदीश्वर जी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे॥ भक्तजनों के संकट छिन में दूर करे॥ॐ॥
जो ध्यावै फल, पावै, दुख विनसे मनका॥ सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका॥ॐ॥
मात-पिता हि मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥ तुम बिन न दूजा, आस करूँ जिसकी॥ ॐ ॥
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ ॥
तुम करुणाके सागर तुम पालन-कर्ता ॥ मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ॥ किस बिधि मिलूँ दयामय! मैं तुमको कुमती॥ ॐ ॥
दीनबन्धु दुखहर्ता तुम ठाकुर मेरे॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ ॥
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा॥ श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा॥ ॐ ॥
श्याम सुन्दर जी की आरती जो कोई नर गावे, कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे ।। ॐ जय
तन मन धन सब है तेरा, स्वामी सब कुछ है तेरा तेरा तुझको समर्पण , क्या लागे मेरा ।। ॐ जय

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ।
ॐ नमोः भगवते वासुदेवाय॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

आओ भोग लगाओ मोहन - आओ भोग लगाओ मोहन,
ऐसा भोग लगे मेरे प्रभु जी, सब अमृत हो जावे मोहन,
भीलनी के बेर सुदामा के तंदुल, रूचि रूचि भोग लगावो मोहन,
दुर्योधन के मेवा त्यागे, भूख लगी तो उठ कर भागे, साग विदुर घर खायो मोहन,
भक्तो का मान बढ़ावो मोहन , आप भोग लगावो मोहन।

पितरों और धि- ध्यानिओं के लिए बायना निकालते हैं।
पितरों का बायना पंडित जी को या मंदिर में देना है। धि-ध्यानिओं का बहिन को या गौ को।

गोवर्धन पूजा (कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिप्रदा) सबसे पहले घर के आंगन में गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत बनाएं। गोवर्धन पर्वत को फूलों से सजाए। भगवान गोवर्धन की नाभि में मिट्टी का दीपक रखें और उसे दूध, दही, शहद, बताशे, और गंगाजल से भरें। भगवान गोवर्धन को नैवेद्य और फल अर्पित करें। भगवान गोवर्धन की षोडश उपचार से पूजा करें। गोवर्धन पूजा की कथा पढ़ें । गोवर्धन की सात परिक्रमा करें। गौधन (गौ, बछड़े, बैल,बछड़ी) को स्नान श्रृंगार कराएं और उनकी पूजा करें, मिठाई खिलाएं और आरती उतारें। भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति रखकर धूप-दीप से आरती करें।भोग लगाने के लिए अन्नकूट और 56 तरह के व्यंजन तैयार करें। शहद, तुलसी, दही शक्कर और गौ घृत से पंचामृत तैयार करें और चढ़ाएं।

पौराणिक कथा : देवराज इंद्र को अपनी शक्ति और वैभव पर अभिमान हो गया था. उसे ही नष्ट करने के लिए भगवान श्री कृष्ण ने यह लीला रची थी. एक दिन जब यशोदा मैया भगवान इंद्र की पूजा की तैयारी कर रही थी तभी उस समय श्री कृष्ण माता यशोदा से पूछा कि वह किस लिए भगवान इंद्र की पूजा कर रही है. कृष्ण जी को माता यशोदा ने उत्तर दिया कि अरे गांव वाले गांव में अच्छी बारिश की कामना के लिए भगवान इंद्र की पूजा कर रहे हैं. जिससे हमारा गांव हरा भरा और फसल की पैदावार अच्छी हो सके. इस पर श्री कृष्ण ने माता यशोदा से कहा कि गिरिराज पर्वत से भी हमें गायों के लिए घास प्रदान करता है. इसलिए गोवर्धन पर्वत की भी पूजा अवश्य होनी चाहिए और इंद्र तो कभी दर्शन भी नहीं देते जबकि गोवर्धन पर्वत पर साक्षात हमारे समक्ष प्रस्तुत है. श्री कृष्ण की इस बात पर सभी गांव वाले सहमत हो गए और सभी गोवर्धन पर्वत की पूजा करने लगे. अपमान का बदला लेने के लिए क्रोधित देवराज इंद्र अपने ब्रज में मूसलाधार बारिश शुरू कर दी. ब्रज में बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई.चारों ओर पानी ही पानी से हाहाकार मच गया. सभी गांव वालों की रक्षा के लिए भगवान श्री कृष्ण सभी को गोवर्धन पर्वत की ओर ले गए. जहां उन्होंने गिरिराज पर्वत को प्रणाम कर उसे अपनी सबसे छोटी उंगली पर धारण कर लिया और उसी के नीचे सभी गांव वालों ने शरण ली. यह देख इंद्र और क्रोधित होगा. उन्होंने वर्षा का प्रभाव और तेज कर दिया. तभी श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्र ने वर्षा की गति को नियंत्रित किया और शेषनाग को आदेश दिया कि वे पानी को पर्वत की ओर आने से रोके. इस तरह 7 दिनों तक भगवान कृष्ण ने गांव वासियों की वर्षा से रक्षा की. देवराज इंद्र को एहसास हो गया था कि श्री कृष्ण कोई सामान्य बालक नहीं है. फिर ब्रह्मा जी ने देवराज इंद्र से कहा कि वह कोई सामान्य बालक नहीं है वह भगवान विष्णु का ही रूप

है. इसके बाद देवराज इंद्र श्री कृष्ण के पास पहुंचे और उनसे क्षमा मांगी और बारिश को रोक दिया. उसके बाद भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को नीचे रखा. इसी दिन से गोवर्धन पर्वत पूजा त्योहार के रूप में हर साल मनाया जाता है. यशोदा जी अपने बाल कृष्ण को प्रतिदिन आठ प्रकार भोजन खिलाती थी। गोवर्धन धारण किये भगवान कृष्ण 7 दिनों तक कुछ नहीं खाया। जब श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को नीचे रखा तब यशोदा जी ने (7x8=56) किस्म का भोग अपने बाल कृष्ण को खिलाया।

गोवर्धन महाराज की आरती करें ।

श्री गोवर्धन महाराज, गिरिराज, तेरे माथे मुकुट विराज रहेओ ।
तो(तुम) पे(पर) पान चढ़े, तो पे फूल चढ़े, तो पे चढ़े दूध की धार । *श्री गोवर्धन........*
तेरे गले में कंठा साज रेहेओ, ठोड़ी पे हीरा लाल । *श्री गोवर्धन........*
तेरे कानन कुंडल चमक रहेओ, तेरी झांकी बनी विशाल । *श्री गोवर्धन........*
तेरी सात कोस की परिक्रमा, चकलेश्वर है विश्राम । *श्री गोवर्धन........*

भगवान् जगदीश्वर जी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे॥ भक्तजनों के संकट छिन में दूर करे॥ॐ॥
जो ध्यावै फल, पावै, दुख विनसे मनका॥ सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका॥ॐ॥
मात-पिता हि मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥ तुम बिन न दूजा, आस करूँ जिसकी॥ ॐ ॥
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ ॥
तुम करुणाके सागर तुम पालन-कर्ता ॥ मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ॥ किस बिधि मिलूँ दयामय! मैं तुमको कुमती॥ ॐ ॥
दीनबन्धु दुखहर्ता तुम ठाकुर मेरे॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ ॥
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा॥ श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा॥ ॐ ॥
श्याम सुन्दर जी की आरती जो कोई नर गावे, कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे ।। ॐ
तन मन धन सब है तेरा, स्वामी सब कुछ है तेरा तेरा तुझको समर्पण , क्या लागे मेरा ।। ॐ जय

आरती कुंजबिहारी की,

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।
गले में बैजंती माला, बजावै मुरली मधुर बाला, श्रवण में कुण्डल झलकाला,
नंद के आनंद नंदलाला। श्री गिरिधर ....
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली, लतन में ठाढ़े बनमाली ॥
भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चन्द्र सी झलक; ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥ श्री गिरि..
कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसैं, गगन सों सुमन रासि बरसै ॥
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिन संग ॥ अतुल रति गोप कुमारी की ॥ श्री गिरि..

जहां ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा, स्मरन ते होत मोह भंगा ॥
बसी सिव सीस, जटा के बीच,हरै अघ कीच; चरन छवि श्रीबनवारी की ॥ श्री गिरि..
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृंदावन बेनू, चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू ॥
हंसत मृदु मंद, चांदनी चंद, कटत भव फंद; टेर सुन दीन भिखारी की॥ श्री गिरि..

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ।
ॐ नमोः भगवते वासुदेवाय॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

आओ भोग लगाओ मोहन - **आओ भोग लगाओ मोहन,**
ऐसा भोग लगे मेरे प्रभु जी, सब अमृत हो जावे मोहन,
भीलनी के बेर सुदामा के तंदुल, रूचि रूचि भोग लगावो मोहन,
दुर्योधन के मेवा त्यागे, भूख लगी तो उठ कर भागे, साग विदुर घर खायो मोहन,
भक्तो का मान बढ़ावो मोहन , आप भोग लगावो मोहन।

यम द्वितीया (भाई दूज) कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया

इस दिन भाई बहन को साथ-साथ यमुना स्नान करना, तिलक लगवाना तथा बहिन के घर भोजन करना अति फलदायी होता है। इस दिन बहन भाई की पूजा कर उसके दीर्घायु और अपने सुहाग की कामना कर हाथ जोड़कर यमराज से प्रार्थना करती है। इसी दिन यमुनाजी ने अपने भाई यमराज को भोजन कराया था। इसीलिये इसे 'यम द्वितीया' भी कहते हैं। इस दिन श्रद्धा भाव से, स्वर्ण वस्त्र मुद्रा आदि बहन को देना चाहिए।

यमराज और यमुनाजी की कथा

सूर्य भगवान की स्त्री का नाम संज्ञादेवी था। इनकी दो संतानें पुत्र यमराज और कन्या यमुना थी। संज्ञा रानी पति सूर्य की उदीप्त किरणों को न सह सकने के कारण उत्तरी ध्रुव प्रदेश में छाया बनकर रहने लगी। **उसी छाया से ताप्ती नदी तथा शनिश्चर का जन्म हुआ। इसी छाया में देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमारों का भी जन्म बताया है ।**

इधर छाया का यम तथा यमुना से विमाता सा व्यवहार होने लगा। इससे खिन्न होकर यम ने अपनी एक नई नगरी यमपुरी बसाई। जब इस धरती पर देवताओं और असुरों का वास होता था। सभी देवी-देवता अपनी अपनी जिम्मेदारियों का पालन करते थे। इन्हीं देवताओं में मृत्यु के देवता यमराज का विशेष स्थान था। यमराज का कार्य सभी जीवों की आयु समाप्त होने पर उन्हें मृत्यु लोक में ले जाना था। उनका निवास स्थान यमलोक था, जहाँ जीवों को उनके कर्मों के अनुसार न्याय दिया जाता था।

यमुनाजी यमराज की बहन थी। यमुनाजी का स्वभाव बहुत ही सरल, कोमल और करुणामयी था। वह अपने भाई यमराज से बहुत स्नेह करती थीं और उन्हें अपने घर बुलाने की इच्छा हमेशा रहती थी। यमपुरी में पापियों को दण्ड देने का काम सम्पादित करते भाई को देखकर यमुना जी गो लोक चली आई। यमुनाजी ने कई बार अपने भाई यमराज को अपने घर आने के लिए निमंत्रण दिया, लेकिन यमराज अपने कार्यों में इतने व्यस्त रहते थे कि वे यमुनाजी के घर नहीं जा पाते थे। समय बीतता गया, लेकिन यमराज अपनी बहन यमुनाजी से मिलने नहीं जा सके। यमुनाजी को यह बात मन ही मन दुखी करती थी, फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और अंततः एक दिन यमराज उनसे मिलने को याद दिलाया

यमुनाजी के इस भावुक निमंत्रण को यमराज अस्वीकार नहीं कर सके और उन्होंने यमुनाजी के घर जाने का निश्चय किया।यमराज जब अपनी बहन यमुनाजी के घर पहुँचे, तो यमुनाजी ने बड़े प्रेम और उत्साह के साथ उनका स्वागत किया। उन्होंने यमराज के आने की खुशी में अपने घर को सजाया, अनेक प्रकार के पकवान बनाए और भाई का आदरपूर्वक सत्कार किया। यमुनाजी ने यमराज को सुंदर स्थान पर बैठाया और उनका तिलक किया, उनके हाथों में रक्षा सूत्र बांधा, और उनकी दीर्घायु और समृद्धि की कामना की। यमराज ने बहन के इस प्रेम और सत्कार से अभिभूत होकर कहा, “हे बहन! आज तुमने मेरा दिल जीत लिया है। मैं तुम्हारे इस प्रेम से अत्यंत प्रसन्न हूँ। आज तुम मुझसे जो चाहो वरदान मांग सकती हो।”

यमुनाजी ने अपने भाई से कहा, “हे भैया ! यदि आप मुझसे प्रसन्न हैं, तो मेरा एक निवेदन है। आप हर साल इसी दिन मेरे घर पधारें और मैं आपसे यह वरदान मांगना चाहती हूं कि मेरे जल में स्नान करने वाले नर-नारी यमपुरी न जाएं। प्रश्न बड़ा कठिन था कि यम के ऐसा वरदान देने से यमपुरी का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता अतः भाई को असमंजस में देखकर यमुना बोली- आप चिन्ता न करें मुझे यह वरदान दें कि 'जो भाई इस दिन अपनी बहन के घर जाकर तिलक करवाएगा और बहन उसकी लंबी उम्र के लिए प्रार्थना करेगी, उसे मृत्यु का भय नहीं होगा।”

यमराज ने यमुनाजी के इस अनुरोध को सहर्ष स्वीकार कर लिया और कहा, “हे बहन! ऐसा ही होगा। आज से इस दिन को भाई दूज के नाम से जाना जाएगा। जो भाई इस दिन अपनी बहन के घर जाकर तिलक करवाएगा और बहन उसकी दीर्घायु की कामना करेगी, उसे कभी अकाल मृत्यु का भय नहीं होगा।” और तुम्हारे जल में स्नान करने वालों को और जो 'लोग आज के दिन बहिन के यहां भोजन करके, इस मथुरा नगरी स्थित विश्राम घाट पर स्नान करें स्वर्ग प्राप्त होगा। इस प्रकार, यमराज ने अपनी बहन यमुनाजी को यह वरदान दिया और हर साल इस दिन बहन द्वारा अपने भाई को तिलक करने की परंपरा शुरू हुई। तभी से भाई दूज का पर्व मनाया जाता है, और इस दिन बहनें अपने भाइयों की लंबी आयु की कामना करती हैं।

छठ पूजा

चैत्र माह की षष्ठी तिथि और कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की षष्ठी

छठी देवी को शिशुओं की अधिष्ठात्री देवी कहा गया है. षष्ठी देवी को भगवान ब्रह्मा की मानस पुत्री देवसेना माना गया है, और इन्हें प्रकृति की मूल प्रवृति के छठवें अंश से उत्पन्न होने के कारण षष्ठी कहा जाता है। देव माता अदिति पुत्री (छठी मैया) ,पार्वती का छठा रूप कात्यायनी माता भगवान सूर्य की बहन छठी मैया को त्योहार की देवी के रूप में पूजा जाता है।

लोक परम्परा के अनुसार **सूर्यदेव और छठी मइया का सम्बन्ध भाई-बहन** का है। लोक मातृका षष्ठी की पहली पूजा सूर्य ने ही की थी। सूर्य की शक्तियों का मुख्य श्रोत उनकी पत्नी ऊषा और प्रत्यूषा हैं। छठ में सूर्य के साथ-साथ दोनों शक्तियों की संयुक्त आराधना होती है। प्रात:काल में सूर्य की पहली किरण (ऊषा काल) और सायंकाल में सूर्य की अंतिम किरण (प्रत्यूषा) को अर्घ्य देकर दोनों का नमन किया जाता है। नवरात्रि के दिन में षष्ठी माता की पूजा, सुरज भगवान और मां गंगा की पूजा देश में एक लोकप्रिय पूजा है।

छठ पूजा का इतिहास

1. एक कथा के अनुसार प्रथम देवासुर संग्राम में जब असुरों के हाथों देवता हार गये थे, तब देव माता अदिति ने तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति के लिए देवारण्य के <u>देव सूर्य मंदिर</u> में अपनी पुत्री(छठी मैया) की आराधना की थी। तब प्रसन्न होकर छठी मैया ने उन्हें सर्वगुण संपन्न तेजस्वी पुत्र होने का वरदान दिया था। इसके बाद अदिति के पुत्र हुए त्रिदेव रूप आदित्य भगवान, जिन्होंने असुरों पर देवताओं को विजय दिलायी।

2. एक कथा के अनुसार राजा प्रियवद को कोई संतान नहीं थी, तब महर्षि कश्यप ने पुत्रेष्टि यज्ञ कराकर उनकी पत्नी मालिनी को यज्ञाहुति के लिए बनायी गयी खीर दी। इसके प्रभाव से उन्हें पुत्र हुआ परन्तु वह मृत पैदा हुआ। प्रियवद पुत्र को लेकर श्मशान गये और पुत्र वियोग में प्राण त्यागने लगे। उसी वक्त ब्रह्माजी की मानस कन्या देवसेना प्रकट हुई और कहा कि सृष्टि की मूल प्रवृत्ति के छठे अंश से उत्पन्न होने के कारण मैं षष्ठी कहलाती हूँ। हे! राजन् आप मेरी पूजा करें तथा लोगों को भी

पूजा के प्रति प्रेरित करें। राजा ने पुत्र इच्छा से देवी षष्ठी का व्रत किया और उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। यह पूजा कार्तिक शुक्ल षष्ठी को हुई थी।

3. रामायण काल में एक मान्यता के अनुसार जब भगवान राम ने लंका में विजय हासिल कर लिया था उसके बाद रामराज्य की स्थापना के दिन कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी के दिन भगवान राम एवं माता सीता ने उपवास किया, सूर्योपासना एवं आराधना की और सप्तमी के दिन फिर से अनुष्ठान कर सूर्यदेव का आशीर्वाद प्राप्त किया था।

4. महाभारत काल की मान्यता के अनुसार छठ पूजा की शुरुआत महाभारत काल से ही हुई थी। कर्ण सूर्य भगवान के पुत्र थे और भगवान सूर्य में परम भक्त भी थे। कर्ण प्रतिदिन कई कई घंटों तक आधी कमर तक पानी में खड़े रहकर सूर्य को अर्घ्य देते थे और भगवान सूर्य के आशीर्वाद से ही वे महान योद्धा बने थे।

5. एक कथा के अनुसार जब पांडव अपना सारा राजपाट जुए में हार गये, तब श्री कृष्ण द्वारा बताये जाने पर द्रौपदी ने छठ व्रत रखा। तब उनकी मनोकामनाएँ पूरी हुईं तथा पांडवों को उनका राजपाट वापस मिला।

6. पौराणिक काल में सूर्य को आरोग्य देवता भी माना जाने लगा था। सूर्य की किरणों में कई रोगों को नष्ट करने की क्षमता पायी गयी। ऋषि-मुनियों ने अपने अनुसन्धान के क्रम में किसी खास दिन इसका प्रभाव विशेष पाया। सम्भवत: यही छठ पर्व के उद्भव की बेला रही हो। भगवान कृष्ण के पौत्र शाम्ब को कुष्ठ रोग हो गया था। इस रोग से मुक्ति के लिए विशेष सूर्योपासना की गयी, जिसके लिए शाक्य द्वीप से ब्राह्मणों को बुलाया गया था।

छठ पूजा का महत्व : वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी छठ पूजा का महत्व माना गया है। छठ पूजा पर विशेष तौर पर भगवान सूर्य की आराधना की जाती है। सूर्य की पराबैगनी किरणों को काफी ज्यादा लाभदायक माना गया है। छठ पूजा के पर्व में भी प्राकर्तिक वस्तुओं का ही उपयोग होता है जैंसे बांस, प्राकर्तिक फल-फूल, गन्ने का रस आदि। छठ पूजा का व्रत प्राकर्तिक सौंदर्य व स्वास्थ्य लाभ के लिए रखा जाता है। यह प्राकृतिक सौंदर्य और परिवार के कल्याण (सुरक्षा एवं स्वास्थ्य लाभ) के लिए की जाने वाली एक महत्वपूर्ण पूजा है। इस पुजा में गंगा स्थान या नदी तालाब जैसे जगह होना अनिवार्य हैं यही कारण है कि छठ पूजा के लिए सभी नदी तालाब कि साफ सफाई किया जाता है [पर्यावरणविदों के अनुसार भी छठ पूजा के पर्व को प्रकृति के अनुकूल माना गया है। वैंसे तो इस दिन स्त्री एवं पुरुष दोनों ही लगभग समान रूप से व्रत रखते हैं। महिलाएं पुत्र रत्न की प्राप्ति व पुत्र के कुशल मंगल रहने की कामना से इस व्रत को रखती हैं। छठ व्रत रखने से मनवांछित फल की प्राप्ति होती है।

छठ पूजा की विधि

छठ पूजा पर्व के चार दिनों तक अनुष्ठान बहुत कठोर माने जाते हैं। भोजन के साथ ही सुखद शैय्या का भी त्याग किया जाता है। पर्व के लिए बनाये गये कमरे में व्रति फर्श पर एक कम्बल या चादर के सहारे ही रात बिताती हैं।

पहले दिन (कार्तिक शुक्ल चतुर्थी तिथि) : व्रती अपने नजदीक में स्थित गंगा नदी,गंगा की सहायक नदी या तालाब में जाकर स्नान करते है। गंगाजल, सेंधा नमक और घी से बना हुआ अरवा चावल और कद्दू की सब्जी,मुंग चना, दाल को प्रसाद के तौर पर खाया जाता है। यह खाना कांसे या मिटटी के बर्तन में पकाया जाता है। खाना पकाने के लिए आम की लकड़ी और मिटटी के चूल्हे का इस्तेमाल किया जाता है।

दूसरे दिन (कार्तिक शुक्ल पंचमी तिथि) : बिना अन्न जल ग्रहण किये व्रत रखना होता है और एकान्त में रहकर शाम गुड़ या गन्ने के रस व चावल से बनी खीर (खरना) ग्रहण करना होता है उसके बाद घर के सभी सदस्यों को प्रसाद के तौर पर वितरित किया जाता है।

तीसरे दिन (कार्तिक शुक्ल षष्टी तिथि) : पूजा अर्चना करने के बाद शाम को पूजा के प्रसाद(विशेष प्रसाद आटे से निर्मित ठेकुआ, चावल के लड्डू), नारियल,पांच प्रकार के फल,और पूजा का अन्य सामान (छठ पूजा में चंदन, चावल, सिंदूर, धूपबत्ती, कुमकुम, कपूर, फल, शहद– हल्दी, मूली और अदरक का हरा पौधा) एक बांस की बनी हुयी टोकरी (दउरा) में लेकर घर का पुरुष अपने सर के ऊपर उठाकर छठ घाट पर ले जाता है।

उपरोक्त पकवान के अतिरिक्त कार्तिक मास में खेतों में उपजे सभी नए (बिना कटे) कन्द-मूल, फलसब्जी, मसाले व अन्नादि यथा गन्ना, ओल, हल्दी, नारियल, नींबू(बड़ा), पके केले आदि चढ़ाए जाते हैं। नदी से मिटटी निकाल कर छठ माता का जो चौरा बना रहता है उस पर पूजा का सारा सामान रखकर नारियल चढाते है और दीप जलाते है। सूर्यास्त से कुछ समय पहले सूर्य देव की पूजा का सारा सामान लेकर घुटने भर पानी में जाकर खड़े हो जाते है और डूबते हुए सूर्य देव को अर्घ्य देकर पांच बार परिक्रमा करते है।

चौथे दिन (कार्तिक शुक्ल सप्तमी तिथि) : एक बांस की बनी हुयी टोकरी में पूजा के प्रसाद,फल डालकर पानी में खड़े होकर उगते हुए सूर्य को अर्घ्य देने की परंपरा है। वहाँ उपस्थित लोगों में प्रसाद वितरण करके व्रती घर आ जाते हैं और घर पर भी अपने परिवार आदि को प्रसाद वितरण करते हैं। व्रति घर वापस आकर गाँव के पीपल के पेड़ जिसको ब्रह्म बाबा कहते हैं वहाँ जाकर पूजा करते हैं। पूजा के पश्चात् व्रति कच्चे दूध का शरबत पीकर तथा थोड़ा प्रसाद खाकर व्रत पूर्ण करते हैं जिसे पारण या परना कहते हैं। व्रती लोग खरना दिन से आज तक निर्जला उपवासोपरान्त आज सुबह ही नमकयुक्त भोजन करते हैं। इस दौरान व्रतधारी 36 घंटे का व्रत रखते हैं। वे पानी भी ग्रहण नहीं करते। लहसून, प्याज वर्जित होता है।

आँवला या अक्षय नवमी पूजा कथा

एक व्यापारी और उसकी पत्नी जो काशी में रहते थे. उनकी कोई संतान नहीं थी. इसी कारण व्यापारी की पत्नी हमेशा दुखी सी रहती थी और उसका स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो गया था. एक दिन उसे किसी ने कहा कि अगर वो संतान चाहती हैं, तो वह किसी जीवित बच्चे की बलि भैरव बाबा के सामने दे. इससे उसको संतान प्राप्ति होगी. उसने यह बात अपने पति से कही, लेकिन पति को यह बात फूटी आँख ना भायी. पर व्यापारी की पत्नी को संतान प्राप्ति की चाह ने इस तरह से बाँध दिया था, कि उसने अच्छे बुरे की समझ को ही त्याग दिया और एक दिन एक बच्चे की बलि भैरव बाबा के सामने दे दी, जिसके परिणाम स्वरूप उसे कई रोग हो गये. अपनी पत्नी की यह हालत देख व्यापारी बहुत दुखी था. उसने इसका कारण पूछा. तब उसकी पत्नी ने बताया कि उसने एक बच्चे की बलि दी. उसी के कारण ऐसा हुआ. यह सुनकर व्यापारी को बहुत क्रोध आया और उसने उसे बहुत मारा. पर बाद में उसे अपनी पत्नी की दशा पर दया आ गई और उसने उसे सलाह दी कि वो अपने इस पाप की मुक्ति के लिए गंगा में स्नान करे और सच्चे मन से प्रार्थना करे. व्यापारी की पत्नी ने वही किया. कई दिनों तक गंगा स्नान किया और तट पर पूरी श्रद्धा के साथ पूजा की. इससे प्रसन्न होकर माता गंगा ने एक बूढी औरत के रूप में व्यापारी की पत्नी को दर्शन दिए और कहा उसके शरीर के सारे विकार दूर करने के लिए वो कार्तिक मास शुक्ल पक्ष की नवमी के दिन वृंदावन में आँवले का व्रत रख उसकी पूजा करेगी, तो उसके सभी कष्ट दूर होंगे. व्यापारी की पत्नी ने बड़े विधि विधान के साथ पूजा की और उसके शरीर के सभी कष्ट दूर हुये. उसे सुंदर शरीर प्राप्त हुआ. साथ ही उसे पुत्र की प्राप्ति भी हुई. तब ही से महिलायें संतान प्राप्ति की इच्छा से आँवला नवमी का व्रत रखती हैं.

आँवला नवमी अथवा अक्षय नवमी

आवला अथवा अक्षय नवमी **कार्तिक माह** शुक्ल पक्ष की नवमी के दिन मनाई जाती हैं. **इस दिन भगवान कृष्ण वृन्दावन गोकुल की गलियाँ छोड़ मथुरा गए थे. इस दिन उन्होंने अपनी बाल लीलाओं को त्याग कर अपने कर्तव्य के पथ पर कदम रखा था.** यह व्रत घर की महिलायें संतान प्राप्ति और परिवार के सुख के लिए करती हैं. महिलायें आँवला नवमी की पूजा पुरे विधि विधान के साथ करती हैं. यह पूजा संतान प्राप्ति एवम पारिवारिक सुख सुविधाओं के उद्देश्य से की जाती हैं.

सामग्री : आँवले का पौधा पत्ते एवम फल, तुलसी के पत्ते एवम पौधा कलश एवम जल कुमकुम, हल्दी, सिंदूर, अबीर, गुलाल, चावल, नारियल, सूत का धागा दुप, दीप, माचिस श्रृंगार का सामान, साड़ी ब्लाउज दान के लिए अनाज

आंवला नवमी पूजा विधि

- औरतें जल्दी उठ नहा धोकर साफ कपड़े पहनती है.
- इस दिन आँवले के वृक्ष में दूध चढ़ाया जाता हैं पूरी विधि के साथ पूजन किया जाता हैं.
- आँवले के वृक्ष की परिक्रमा का विशेष महत्व है. सफ़ेद/ लाल मौली के धागे से इसकी परिक्रमा करते है.
- औरतें अपने अनुसार 8 या 108 बार परिक्रमा करती है. इस परिक्रमा में 8 या 108 की भी चीज चढ़ाई जाती है. इसमें औरतें बिंदी, टॉफी, चूड़ी, मेहँदी, सिंदूर आदि कोई भी वस्तु का चुनाव करती है, और इसे आँवले के वृक्ष में चढ़ाती है.
- फिर सब साथ बैठकर कथा सुनती है, और खाने बैठती है. इसके बाद इस समान को हर सुहागन औरत को टिकी लगाकर दिया जाता है.
- इस दिन ब्राह्मणी औरत को सुहाग, श्रंगार का सामान एवम कपड़े का समान, खाने की चीज और पैसे दान में देना अच्छा मानते है. किसी ब्राहमण पंडित को दान, गरीबो को अनाज इच्छानुसार दान देते हैं.
- इस दिन आँवले के वृक्ष के पास भोजन किया जाता है.

देवोत्थान एकादशी

एकादशी तिथि पर प्रातः स्नान करें। भगवान विष्णु के सामने व्रत का संकल्प लें। इसके बाद मंदिर को साफ करें। एक वेदी पर भगवान विष्णु और धन की देवी माता लक्ष्मी को विराजमान करें। भगवान का पंचामृत से स्नान करवाएं। पीले फूलों की माला अर्पित करें। हल्दी या फिर गोपी चंदन का तिलक लगाएं। पंजीरी और पंचामृत (तुलसी पत्र) का भोग अवश्य लगाएं। विष्णु जी का ध्यान करें।

ॐ ह्रीं श्री क्रीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम गृहे धन पूरये । धन पूरये, चिंताएं दूरये-दूरये स्वाहा: ।।
दन्ताभये चक्र दरो दधानं, कराग्रगस्वर्णघटं त्रिनेत्रम्।
धृताब्जया लिंगितमब्धिपुत्रया, लक्ष्मी गणेशं कनकाभमीडे।।

आरती से पूजा को पूर्ण करें। पूजा में हुई गलतियों के लिए क्षमा याचना करें। अगले दिन पारण समय के अनुसार व्रत खोलें।

देवोत्थान एकादशी का महत्त्व:

भगवान श्रीकृष्ण बोले: कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष मे तुलसी विवाह के दिन आने वाली इस एकादशी को विष्णु प्रबोधिनी एकादशी, देव-प्रबोधिनी एकादशी, देवोत्थान, देव उथव एकादशी, देवउठनी एकादशी, कार्तिक शुक्ल एकादशी तथा प्रबोधिनी एकादशी भी कहा जाता है। यह बड़े-बड़े पापों का नाश करने वाली है, इसका माहात्म्य मैं तुमसे कहता हूँ, ध्यानपूर्वक सुनो।

देवोत्थान एकादशी व्रत कथा:-

एक राजा के राज्य में सभी लोग एकादशी का व्रत रखते थे। प्रजा तथा नौकर-चाकरों से लेकर पशुओं तक को एकादशी के दिन अन्न नहीं दिया जाता था। एक दिन किसी दूसरे राज्य का एक व्यक्ति राजा के पास आकर बोला: महाराज! कृपा करके मुझे नौकरी पर रख लें। तब राजा ने उसके सामने एक शर्त रखी कि ठीक है, रख लेते हैं। किन्तु रोज तो तुम्हें खाने को सब कुछ

मिलेगा, पर एकादशी को अन्न नहीं मिलेगा। उस व्यक्ति ने उस समय हाँ कर ली, पर एकादशी के दिन जब उसे फलाहार का सामान दिया गया तो वह राजा के सामने जाकर गिड़गिड़ाने लगा: महाराज! इससे मेरा पेट नहीं भरेगा। मैं भूखा ही मर जाऊंगा, मुझे अन्न दे दो।

राजा ने उसे शर्त की बात याद दिलाई, पर वह अन्न छोड़ने को तैयार नहीं हुआ, तब राजा ने उसे आटा-दाल-चावल आदि दिए। वह नित्य की तरह नदी पर पहुंचा और स्नान कर भोजन पकाने लगा। जब भोजन बन गया तो वह भगवान को बुलाने लगा: आओ भगवान! भोजन तैयार है। उसके बुलाने पर पीताम्बर धारण किए भगवान चतुर्भुज रूप में आ पहुँचे तथा प्रेम से उसके साथ भोजन करने लगे। भोजनादि करके भगवान अंतर्धान हो गए तथा वह अपने काम पर चला गया।

पंद्रह दिन बाद अगली एकादशी को वह राजा से कहने लगा कि महाराज, मुझे दुगुना सामान दीजिए। उस दिन तो मैं भूखा ही रह गया। राजा ने कारण पूछा तो उसने बताया कि हमारे साथ भगवान भी खाते हैं। इसीलिए हम दोनों के लिए ये सामान पूरा नहीं होता। यह सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला: मैं नहीं मान सकता कि भगवान तुम्हारे साथ खाते हैं। मैं तो इतना व्रत रखता हूँ, पूजा करता हूँ, पर भगवान ने मुझे कभी दर्शन नहीं दिए।

राजा की बात सुनकर वह बोला: महाराज! यदि विश्वास न हो तो साथ चलकर देख लें। राजा एक पेड़ के पीछे छिपकर बैठ गया। उस व्यक्ति ने भोजन बनाया तथा भगवान को शाम तक पुकारता रहा, परंतु भगवान न आए। अंत में उसने कहा: हे भगवान! यदि आप नहीं आए तो मैं नदी में कूदकर प्राण त्याग दूंगा। लेकिन भगवान नहीं आए, तब वह प्राण त्यागने के उद्देश्य से नदी की तरफ बढ़ा। प्राण त्यागने का उसका दृढ़ इरादा जान शीघ्र ही भगवान ने प्रकट होकर उसे रोक लिया और साथ बैठकर भोजन करने लगे। खा-पीकर वे उसे अपने विमान में बिठाकर अपने धाम ले गए। यह देख राजा ने सोचा कि व्रत-उपवास से तब तक कोई फायदा नहीं होता, जब तक मन शुद्ध न हो। इससे राजा को ज्ञान मिला। वह भी मन से व्रत-उपवास करने लगा और अंत में स्वर्ग को प्राप्त हुआ।

कार्तिक पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा- गुरु नानक जयंती)

कार्तिक महीने में कुमार कार्तिकेय ने तारकासुर का वध किया था। इस महीने में भगवान ने वेदों की रक्षा की थी और पूरे महीने मत्स्य अवतार के रूप में जल में निवास करते हैं। इस मास में प्रभु भक्ति करने वाला मृत्यु के बाद बैकुंठ में स्थान प्राप्त करता है। कार्तिक मास में सूर्योदय से पूर्व स्नान करने के साथ देवी तुलसी की पूजा करने और दीप दिखाने का भी बड़ा ही महत्व है। जो श्रद्धालु भक्त इस प्रकार से नियम पूर्वक कार्तिक मास का व्रत पूजन करता है वह भगवान विष्णु के लोक में स्थान पाता है।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन ऐसे करें पूजा : कार्तिक पूर्णिमा के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर पवित्र नदी में स्नान करना चाहिए। आप शुद्ध जल में गंगाजल मिलाकर स्नान कर सकते हैं। कार्तिक पूर्णिमा के दिन हाथ में कुशा लेकर स्नान करना चाहिए। इसके बाद भगवान लक्ष्मी नारायण की आराधना करते हुए पूजा करें। जहां भगवान विष्णु की मूर्ति या फिर उनके चित्र के सामने घी का दीपक लगाएं, और विधि-विधान से पूजा करें। कार्तिक पूर्णिमा पर भगवान विष्णु के सहस्रनाम पाठ का विशेष महत्व है। भगवान सत्यनारायण की कथा सुने। कथा के समापन के पश्चात भगवान को खीर का भोग लगाकर प्रसाद वितरण करें।

इसके बाद शाम के समय भगवान लक्ष्मी नारायण यानी विष्णु की पूजा कर, तुलसी जी की भी आरती उतारें। शाम के समय घर के बाहर और अंदर भी दीपक लगाना चाहिए। पूजा के दौरान **ॐ सों सोमाय नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ कार्तिकेय नमः, ॐ वृंदाय नमः, ॐ केशवाय नमः** मंत्रों का जाप करें। कार्तिक पूर्णिमा के दिन चंद्रोदय के दौरान महादेव और कृतिकाओं की पूजा करने का विधान है। ऐसा करने से भगवान शिव प्रसन्न होते हैं, और अपने उपासकों पर आशीर्वाद की वर्षा करते हैं। इस दिन शाम के समय चंद्रमा को अर्घ्य देने से कुंडली में चंद्रमा की स्थिति मजबूत होती है। इस दिन दिया गया दान 10 यज्ञों के पुण्य के समान होता है। दान में फल, उड़द की दाल, कंबल, चावल आदि दे सकते हैं, इसे शुभ माना गया है। **कार्तिक पूर्णिमा पर भगवान् स्कन्द (कार्तिकेय) की पूजा के लिए ३६५ बाती जलाना शुभ है। अखरोट को भुजा कर उसका प्रसाद लगाना चाहिए।**

कार्तिक पूर्णिमा व्रत कथा : पौराणिक कहानियों में तारकासुर नामक राक्षस था. तारकक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली उसके तीन पुत्र थे. तारकासुर ने धरती और स्वर्ग पर आतंक मचा रखा था, इसलिए देवताओं ने भगवान शिव से तारकासुर को मार डालने की मांग की. जब भगवान शिव ने तारकासुर को मार डाला तो सभी देवता बहुत खुश हुए. लेकिन उसके तीनों पुत्रों को यह सुनकर बहुत दुःख हुआ और उन्होंने ब्रह्माजी की तपस्या की ताकि वे अपने पिता के वध का बदला ले सकें. तीनों की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान ब्रह्मा ने उनसे वरदान मांगे. तीनों ने ब्रह्माजी से जीवन भर अमर रहने का वरदान मांगा, लेकिन ब्रह्माजी ने उन्हें इसके अलावा कोई और वरदान नहीं मांगा. तब तीनों ने एक और वरदान की कल्पना की, इस बार ब्रह्माजी से तीन अलग नगर बनाने के लिए कहा. वे चाहते थे कि सभी इनमें बैठकर पूरी पृथ्वी और आकाश में घूम सकें. जब हम एक हजार साल बाद एक हो जाएं और तीनों नगर एक हो जाएं, तो जो देवता तीनों नगरों को एक ही बाण से नष्ट कर सकता है, वही हमारी मृत्यु होगी. ये वरदान ब्रह्माजी ने उन्हें दे दिए.

ब्रह्माजी के आदेश पर मयदानव ने उनके लिए तीन नगर बनाए. तारकक्ष के लिए सोना, कमला के लिए चांदी और विद्युन्माली के लिए लोहा था. तीनों ने मिलकर तीनों राज्यों को नियंत्रित किया. इन तीन राक्षसों से भयभीत इंद्र देवता भगवान शंकर की शरण में गए. इंद्र देव की बात सुनकर भगवान शिव ने इन दानवों को मार डालने के लिए एक अद्भुत रथ बनाया. इस भव्य रथ में हर चीज देवताओं से बनाई गई थी. सूर्य और चंद्रमा से पहिए बने. रथ पर चार घोड़े होते हैं: इंद्र, वरुण, यम और कुबेर. शेषनाग प्रत्यंचा बन गए और हिमालय धनुष बन गया. भगवान शिव खुद एक बाण बन जाएं और अग्निदेव बाण की नोंक बन जाएं. भगवान शिव खुद इस अद्भुत रथ पर सवार हुए.

तीनों भाइयों और देवताओं से निर्मित इस रथ के बीच भयानक युद्ध हुआ. जब ये तीनों रथ एक सीध में मिले, भगवान शिव ने बाण छोड़कर तीनों को मार डाला. इन तीनों भाइयों के वध के बाद भगवान शिव को त्रिपुरारी नाम दिया गया. जिस दिन यह सब हुआ, वह कार्तिक पूर्णिमा का दिन था. तभी से कार्तिक पूर्णिमा के दिन भगवान शिव की पूजा की जाने लगी. कार्तिक पूर्णिमा के दिन इस कथा का पाठ करने से महादेव की कृपा प्राप्त होती है. साथ ही जो व्यक्ति कार्तिक पूर्णिमा के दिन लक्ष्मी मां की पूजा करता है और इस कथा का पाठ करता है, उसे धन-धान्य की प्राप्ति होती है.
कार्तिक के महीने में लहसुन, प्याज, बैंगन और करेला मांस मछली का सेवन नहीं करना चाहिए।

गणेश संकष्टी चतुर्थी

(माघ माह कृष्ण पक्ष चतुर्थी)

सकट चौथ के दिन प्रथम पूजनीय देवता भगवान गणेश की पूजा की जाती है. इस दिन माता अपने संतान की लंबी आयु और उज्जवल भविष्य के लिए व्रत का पालन करती हैं. मान्यता है कि इस दिन पूजा करने के साथ सकट चौथ की व्रत का कथा का पाठ करना शुभ होता है. ऐसा करने में बप्पा प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं. **पानी से भरी कुज्जी, और तिल लेकर कर कथा सुननी है, तिल से तारों को अर्ग देना हैं। व्रत का पारण करना है।**

सकट चौथ व्रत कथा :

एक बार गणेश जी बाल रूप में चुटकी भर चावल और एक चम्मच दूध लेकर पृथ्वी लोक के भ्रमण पर निकले. वे सबसे यह कहते घूम रहे थे, कोई मेरे लिए खीर बना दे, लेकिन किसी ने भी उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया. तभी एक गरीब बुढ़िया उनकी खीर बनाने के लिए तैयार हो गई. इस पर गणेशजी ने घर का सबसे बड़ा बर्तन चूल्हे पर चढ़ाने को कहा. बुढ़िया ने भगवान गणेश की बाल लीला समझते हुए घर का सबसे बड़ा भगौना चूल्हे पर चढ़ा दिया.

गणेशजी के दिए चावल और दूध भगौने में डालते ही भगौना भर गया. इस बीच गणेशजी वहां से चले गए और बोले अम्मा जब खीर बन जाए तो बुला लेना. पीछे से बुढ़िया के बेटे की बहू ने एक कटोरी खीर चुराकर खा ली और एक कटोरी खीर छिपाकर अपने पास रख ली. अब जब खीर तैयार हो गई तो बुढ़िया माई ने आवाज लगाई-आजा रे गणेशा खीर खा ले. तभी गणेश जी वहां पहुंच गए और बोले कि मैंने तो खीर पहले ही खा ली. तब बुढ़िया ने पूछा कि कब खाई तो वे बोले कि जब तेरी बहू ने खाई तभी मेरा पेट भर गया. बुढ़िया ने इस पर माफी मांगी. इसके बाद जब बुढ़िया ने बाकी बची खीर का क्या करें, इस बारे में पूछा तो गणेश जी ने उसे नगर में बांटने को कहा और जो बचे उसे अपने घर की जमीन गड्ढा करके दबा दें. अगले दिन जब बुढ़िया उठी तो उसे अपनी झोपड़ी महल में बदली हुई और खीर के बर्तन सोने- जवाहरातों से भरे मिले. गणेश जी की कृपा से बुढ़िया का घर धन दौलत से भर गया.

सकट चौथ व्रत की दूसरी कथा

एक लकड़हारा था। वह वन में जा कर लकड़ीआं काटता और उन्हें बेच कर अपना और अपनी वृद्ध माँ का पेट पालता। गणेश संकष्टी चतुर्थी का दिन था। वह वन में जाकर लकड़ीआं काटने गया। लकड़हारे को पड़ोसिओं ने बताया की तुम तो वन में जा कर लकड़ीआं काट कर उन्हें बेच कर अपना गुजरा करते हो और तुम्हारी माँ घर में खीर,पूड़े और लड्डू बना बना कर खाती है। वह घर आ कर देखता हैं - उसकी माँ, खीर,पूड़े और तिल के लड्डू आदि बना रही थी। वह अपनी माँ पर क्रोधित हो कर कहा- मैं तो तुम्हारे लिए लकड़ी काटता हूँ और तुम यहाँ खीर,पूड़े और तिल के लड्डू खा रही हो। अब मैं तुम्हारे पास एक पल भी नहीं रहूँगा। उसकी वृद्धा माँ ने उसे बहुत समझाया, उसे गणेश संकष्टी चतुर्थी व्रत का महत्व समझाया परन्तु वो नहीं माना। अंत में माँ ने कहा - बेटा , तुम जाना है तो ठीक परन्तु एक काम कर , अपने साथ कुछ तिल और ये जल ले जा, जहाँ, तुम्हे कुछ भी कष्ट आये तो ये तिल और पानी के छींटे डाल कर कहना - यदि, मेरी माँ ने गणेश संकष्टी चतुर्थी के सच्चे व्रत रखें हैं तो संकटा देवी और श्री गणेश जी , मेरा ये कष्ट दूर करे। माँ ने कुछ तिल, जल, भोजन एक पोटली में बाँध दिए। लकड़हारा बेटा, उनको लेकर, अनमने मन से माँ से विदा ले, घर से निकल पड़ा।

मार्ग में उसे एक जंगल मिला , जंगल से सांय सांय की आवाजें आ रही थी। वो डर गया। उसे अपनी वृद्धा माँ के वचन याद आये, उसने जल्दी जल्दी कुछ तिल और जल निकले और वहां छिटक दिए और कहा - यदि, मेरी माँ ने गणेश संकष्टी चतुर्थी के सच्चे व्रत रखें हैं तो संकटा देवी और श्री गणेश जी , मेरा ये कष्ट दूर करे। ऐसा कहते ही जंगल में सांय सांय की आवाजें बंद हो गयी और जंगल ने उसे रास्ता दे दिया। परन्तु थोड़ी ही देर में उसे एक शेर मिला वो और अधिक डर गया। उसने फिर से वृद्धा माँ के वचन याद करके कुछ तिल के दाने और जल वहां छिटक दिए और कहा - यदि, मेरी माँ ने गणेश संकष्टी चतुर्थी के सच्चे व्रत रखें हैं तो संकटा देवी और श्री गणेश जी, मेरा ये कष्ट दूर करे। ऐसा कहते ही शेर ने उसे रास्ता दे दिया। थोड़ी आगे चलने पर उसे एक उफनती नदी मिली।

इस बार भी उसने फिर से वृद्धा माँ के वचन याद करके कुछ तिल और जल वहां छिटक दिए और कहा - यदि, मेरी माँ ने गणेश संकष्टी चतुर्थी के सच्चे व्रत रखें हैं तो संकटा देवी और श्री गणेश जी , मेरा ये कष्ट दूर करे। ऐसा कहते ही नदी ने भी उसे रास्ता दे दिया। ऐसा ही फिर से एक और जंगल की भयानक आग मार्ग में आयी परन्तु वृद्धा माँ के वचन अनुसार संकटा देवी और

श्री गणेश जी की कृपा से उसे जंगल की आग ने भी रास्ता दे दिया। अब वह एक शहर में पहुंचा। रात हो रही थी, उसने एक घर का दरवाजा खटखटाया , एक वृद्धा घर से निकली। हाल चाल जानने के बाद उसने एक रात बिताने और सोने के लिए उस वृद्धा से याचना की। वृद्धा ने उसे घर के अंदर बुलाया और खाने को कुछ बनाने लगी। लकड़हारे ने देखा कि वो वृद्धा भोजन बना भी रही हैं और रो भी रही है।

आश्चर्य से उसने वृद्धा से इसका कारण जानना चाहा। वृद्धा बोली बेटा तू एक रात का अतिथि है , तू भोजन करो सो जावो , तुमने क्या लेना। मेरा कष्ट है , तुम इसमें कुछ नहीं कर सकते , तुम भोजन करो और सो जावो। बहुत जोर देने पर वृद्धा ने बताया कि इस नगर में एक कुम्हार रहता है , उसके एक बार बर्तन बनाकर आंवा (बर्तन पकाने का बड़ा चूल्हा) लगाया तो आंवा नहीं पका. हारकर वह राजा के पास जाकर प्रार्थना करने लगा कि आंवां पक ही नहीं रहा है. राजा ने पंडित को बुलाकर कारण पूछा तो राज पंडित ने कहा कि हर बार आंवां लगाते समय बच्चे की बलि देने से आंवां पक जाएगा. राजा का आदेश हो गया. बलि आरंभ हुई. जिस परिवार की बारी होती वह परिवार अपने बच्चों में से एक बच्चा बलि के लिए भेज देता है। आज रात मेरे अपने लड़के की बारी है और मुझ बुढ़िया के लिए वही जीवन का सहारा है। लेकिन राजा की आज्ञा के आगे किसी का जोर नहीं चलता। लकड़हारे ने कहा -माई , कोई डर कि बात नहीं , मेरा वैसे भी कोई नहीं , रात को जब कोई आये , मुझे उठा देना , तेरे बेटे के स्थान पर मैं बलि देने चला जाऊँगा। दुःखी बुढ़िया ने उसे भोजन दिया। थके हारे उस लकड़हारे को भोजन खाते ही नींद आ गयी। अब आधी रात में राजा के सैनिकों ने वृद्धा के घर का दरवाजा खटखटाया। वृद्धा ने सोचा ये लकड़हारा भी किसी का बेटा है मैं पराये लड़के को कैसे उठाऊ। अब वो लकड़ी के मोटे डंडे (सोटे) से घर में चारों और ठोकने लगी। शोर से लकड़हारा नींद से जाग गया। उसने वृद्धा से पूछा - क्या, माई तेरे घर में चूहे बहुत शोर कर रहे हैं ? वृद्धा ने उसे डरते हुए बताया - बेटा, राजा के सैनिक मेरे बेटे को लेने आ गए हैं।

लकड़हारा बोला- माई कोई बात नहीं, मैं चलता हूँ और वो दरवाजे से बाहर सैनिकों के साथ चलने के लिए तैयार हो गया। वृद्धा ने उसे आशीर्वाद देते कहा - जा बेटा, गणेश जी और संकटा माई तेरी रक्षा करें। उस को राजा के सैनिक पकड़ कर कुम्हार के पास ले गए। लकड़हारे ने आंवा में बैठते समय ही अपने आस पास तिल और पानी के छींटे मारें और अपनी माँ के वचन दोहराये - हे गणेश जी और संकटा माई, यदि मेरी वृद्धा माँ ने गणेश संकष्टी चतुर्थी के सच्चे व्रत रखें हैं तो आप मुझे इस महान कष्ट से उबारिये, मैं आपकी शरण में हूँ। कुम्हार ने बर्तन लगाए , ईंधन लगाया और आग जलाई। अगली सुबह ही कुम्हार

को एहसास हुआ कि पहले तो आंवा पकने में कई दिन लग जाते थे, इस बार, एक ही रात में आंवां पक गया था। वो भाग कर राजा के पास गया और सारा हाल चाल बताया। राजा और सैनिक दौड़े दौड़े वहां आये। राजा ने सैनिकों को आंवा हटाने कि आज्ञा दी। जब सैनिक आंवा हटाने लगे तो अंदर से आवाज आयी- हौले- हौले। डरते डरते सैनिकों ने आंवा हटा दिया।

उन सब ने देखा कि लकड़हारा सुरक्षित बैठा है, आसपास घास उग आयी है और नगर के अन्य बालक भी जीवित हो गए थे। उसे अब आंवा से हटाया गया। राजा ने सोचा कि ये लड़का बहुत बड़ा संत , योगी, महात्मा है जो इस तप्ती आग से भी बच गया। मैं अपनी पुत्री का विवाह इस से कैसे करूँ क्योंकि आज ही स्वयम्बर है और देश विदेश के राज्यों से राजकुमार बुलाए गए है। ये सोच कर राजा ने उस लकड़हारे को राजकुमारों के कपडे पहना कर स्वयम्बर - मंडप में ले गया। राजकुमारी को भी ये बात बता दी गयी। राजकुमारी को एक छज्जे पर एक लोटे के साथ बिठाया गया। घोषणा कि गयी कि सब राजकुमार उस छज्जे के निचे से निकलेगे, राजकुमारी जिस राजकुमार के सर पर भी लोटा फेंकेगी उसी पुरुष को ही राजकुमारी वरण करेगी। सब राजकुमार छज्जे के निचे से निकले, लकड़हारे को राजकुमारों के बीच खड़ा कर दिया थे जैसे ही वो छज्जे के निचे से निकला , राजकुमारी ने लोटा उस के सर पर गिरा दिया। राजकुमारों ने इसे गलती बताया और प्रक्रिया दोहराई गयी। इस बार लकड़हारे को राजकुमारों के पीछे खड़ा कर दिया थे जैसे ही वो छज्जे के निचे से निकला , राजकुमारी ने लोटा उस के सर पर गिरा दिया। तीसरी बार फिर से , लकड़हारे को राजकुमारों के आगे खड़ा कर दिया थे जैसे ही वो छज्जे के निचे से निकला , राजकुमारी ने लोटा उस के सर पर गिरा दिया।

अब राजा ने घोषणा कि राजकुमारी ने अपना वर (लकड़हारे को) पसंद कर लिया है। संकटा माई और गणेश जी कि कृपा स्वरूप लकड़हारे का राजकुमारी से विवाह सारे रीती रिवाजों के साथ संपन्न हो गया। लकड़हारा अपना जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने लग गया। इस बीच उनके एक पुत्र भी पैदा हो गया था। बहुत दिन होने पर राजकुमारी की भाभियाँ कानाफूसी करने लगी कि विवाह से पहले भी ये राजकुमारी यही रहती थी, अब भी, उसे अपने ससुराल में ही जाना चाहिए। धीरे धीरे ये काना फूसि तानो में बदल गयी। अपनी भाभिओं के तानो से तंग आ कर , राजकुमारी ने लकड़हारे से कहा - तुम मुझे अपने घर ले चलो, तुम्हारा घर कहाँ है।

लकड़हारे ने सारा वृत्तांत राजकुमारी और राजा को बताया। राजा सच्चाई सुन कर प्रसन्न हो, राजकुमारी को उसके साथ भेजना स्वीकार किया। नगरवासियों ने सकट की महिमा स्वीकार की तथा लड़के को भी धन्य माना। बहुत धन और सेवक

दे कर उनको विदा किया गया। मार्ग में नगर कि वृद्धा का घर भी मिला वृद्धा ने भी बहुत आशीर्वाद दे कर उसको अपनी माँ के पास जाने को कहा। जंगल, नदी आदि को पार कर के वो लकड़हारा अपनी पत्नी(राजकुमारी) , पुत्र और सेवकों के साथ अपने गांव पहुंचा। गाँव में पड़ोसियों ने उसकी माँ के पास जा कर सारा वृत्तांत कहा - कि तुम्हारा बेटा एक राजकुमारीऔर तुम्हारे पौत्र को लेकर सेवकों के साथ तुम्हारे पास लौट आया है। अपने पुत्र के वियोग में रो रो कर वृद्धा ने अपनी नेत्र-ज्योति ही खो दी थी। उसने पड़ोसियों से कहा- जब मेरा बेटा यहाँ था तब तुम सब उसके कान भरने में लगीं थी , अब मुझ वृद्धा के साथ फिर से मजाक कर रही हो और मुझे कष्ट दे रही हो। तभी वृद्धा का बेटा लकडहारा अपनी विवाहिता पत्नी (राजकुमारी) अपने पुत्र के साथ वृद्धा माँ के चरणों में पड़ गया। संयोगवश यह भी गणेश संकष्टी चतुर्थी का दिन था। अपने बेटे की आवट पहचान कर और बेटे, पुत्रवधु और पौत्र का स्पर्श पाकर वृद्धा ने भाव विभोर हो कर उनको आशीर्वाद दिया और अपने गले से लगा लिया।

उसने संकटा माई और गणेश जी से प्रार्थना कि - हे संकट दूर करने वाली संकटा माई और विघ्नहर्ता श्री गणेश जी, यदि मैंने तुम्हारे व्रत सच्चे मन से किये हैं तो मुझे नेत्रज्योति प्रदान करें ताकि मैं अपने पुत्र पुत्रवधु और पौत्र को देख पाऊं। माँ संकटा और श्री गणेश भगवान कि कृपा से उसे दृष्टि पुनः प्राप्त हो गयी। अपने को धन्य मान कर उसने माँ संकटा और श्री गणेश भगवान का बहुत बहुत धन्यवाद् किया। वे सब मिलकर सुख से रहने लगे। जैसे संकटहर्ता माँ संकटा और विघ्नहर्ता श्री गणेश ने उनपर कृपा की , वैसी कृपा सब (कथा कहने और सुनने वालों) पर भी करें। जय माँ संकटा जी की और जय श्री गणेश जी की।

लोहड़ी (पोंगल, बिहू)

पौष शुक्ल पक्ष पूर्णिमा

दक्ष प्रजापति की पुत्री सती के योगाग्नि-दहन की याद में ही यह अग्नि जलाई जाती है। घर लौटते समय 'लोहड़ी' में से दो चार दहकते कोयले, प्रसाद के रूप में, घर पर लाने की प्रथा भी है। लोहड़ी को दुल्ला भट्टी की एक कहानी से भी जोड़ा जाता हैं। विवाहिता पुत्रियों को माँ के घर से 'त्योहार' (परिवार के सदस्यों के लिए वस्त्र, मिठाई, रेवड़ी, मूंगफली, गजक ,फलादि) भेजा जाता है।

मकर सक्रांति

इस अवसर पर सूर्य देव की पूजा-अर्चना करने का विधान है। मकर सक्रांति के दिन सूर्योदय से पूर्व उठ कर पानी में तिल दाल कर नहाया जाता है। लाल कपडे पहने जाते हैं। दाहिने हाथ में जल लेकर बिना नमक खाये, व्रत का संकल्प लेते हैं। भगवान् सूर्य की पूजा की जाती है। उन्हें ताम्बे के लोटे से लाल फूल, लाल चन्दन तिल, गुड़ मिलाकर शुद्ध जल चढ़ाया जाता है। जल चढ़ाते समय **ॐ घृणि सूर्यआदित्याय नमः** मंत्र उच्चारण करें।

सूर्य को जल देते समय जल ताम्बे के बर्तन में इकट्ठा किया जाता है और वो जल मदार के पौधे में डाल दिया जाता है। निचे दिए सूर्य मन्त्रों से सूर्यदेव के स्तुति करें और सूर्य देवता को नमन करें।भगवान भास्कर की पूजा करने के बाद, तिल, उड़द चावल गुड़ सब्जी, वस्त्र श्रद्धा अनुसार किसी ब्राह्मण को दान दे। इस दिन दान करना भी उत्तम होता है.भगवान सूर्यदेव को तिल और खिचड़ी का भोग लगाएं। मकर संक्रांति के दिन पवित्र नदियों स्नान करने का विशेष महत्व माना जाता है. **मकरसक्रांति के दिन आदित्य हृदय स्तोत्र, श्री नारायण कवच, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पढ़ना सुनना चाहिए।**

	1. **ॐ सूर्याय नमः** 2. **ॐ आदित्याय नमः** 3. **ॐ सप्तार्चिषे नमः** **4. ॐ सवित्रे नमः** **5. ॐ मार्तण्डाय नमः** **6. ॐ विष्णवे नमः**	**7. ॐ भास्कराय नमः** **8. ॐ भानवे नमः** **9. ॐ मरीचये नमः** **10 ॐ मित्राय नमः** **11 ॐ रवये नमः** **12 ॐ खगाय नमः**	**13 ॐ पूष्णे नमः** **14 ॐ अर्काय नमः** **15 ॐ हिरण्यगर्भाय नमः** **16 ॐ श्री सवितृसूर्य नारायणाय नमः**

पौराणिक कथा (श्री मद्भागवत पुराण) के अनुसार, सूर्य देव की दो पत्नियां थीं. संज्ञा और छाया. संज्ञा से सूर्य की संताने - यम, यमुना,वैवस्वत मनु और रेवंत। सूर्य देव को उनकी पत्नी छाया से २ संताने हुई - शनिदेव और अश्विनी कुमार। सूर्य देव और उनके पुत्र शनिदेव के संबंध अच्छे नहीं थे और इसके पीछे का कारण था शनिदेव की माता छाया के प्रति सूर्य देव का खराब व्यवहार । जब शनिदेव का जन्म हुआ था तो उनका काला रंग देखकर सूर्य देव क्रोधित हो गए और सूर्य देव ने कहा था कि ऐसा पुत्र मेरा नहीं हो सकता।

शनिदेव के जन्म के बाद से ही सूर्य देव ने शनिदेव और उनकी माता छाया को अलग कर दिया था. शनिदेव और उनकी माता छाया दोनों जिस घर में रहते थे, उसका नाम कुंभ था. सूर्य देव के इस व्यवहार से उनकी पत्नी छाया क्रोधित हुईं और उन्होंने सूर्य देव को कुष्ठ रोग का श्राप दे दिया । छाया के इस श्राप से क्रोधित होकर सूर्यदेव ने छाया और शनिदेव का घर जला दिया था। पिता सूर्यदेव को कुष्ठ रोग से पीड़ित देख कर संज्ञा पुत्र -धर्मराज यम बहुत दुखी हुए। उन्होंने सूर्यदेव को कुष्ठ रोग से मुक्ति दिलवाने के लिए कड़ी तपस्या की और सूर्य देव को छाया के श्राप से मुक्ति दिलाई । धर्मराज यम ने अपनी सौतेली माता छाया और उनके पुत्र शनि के कष्ट को देख कर बहुत दुखी हुए।

उन्होंने माता छाया और भ्राता शनि के कल्याण के लिए अपने पिता सूर्यदेव को बहुत समझाया और मांग रखी कि सूर्यदेव माता छाया और शनि के प्रति अच्छा व्यवहार करें. इसके बाद सूर्य को अपनी गलती का एहसास हुआ और वे पत्नी छाया और पुत्र शनिदेव से मिलने के लिए उनके घर पहुंचे । जब सूर्य शनि के घर कुम्भ (राशि) पहुंचे, लेकिन वहां तो सब कुछ जलकर राख हो गया था। सूर्य देव को देखकर शनिदेव बेहद प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने पिता का स्वागत किया । उस समय महात्मा शनि के पास काले तिल के सिवा कुछ नहीं बचा था। उन्होंने काले तिल ही सूर्यदेव को अर्पण कर दिए। शनिदेव के इस व्यवहार से सूर्य देव बहुत प्रसन्न हुए. सूर्य देव ने शनिदेव को एक नया घर मकर (राशि) भेंट किया। सूर्य देव के आशीर्वाद से शनिदेव दो राशियां कुंभ और मकर के स्वामी बन गए। सूर्य देव ने शनिदेव को आशीर्वाद दिया कि वो जब भी उनसे मिलने उनके घर आएंगे तो उनका घर धन-धान्य से भर जाएगा । काले तिल के कारण शनि को उनका वैभव फिर से प्राप्त हुआ इसीलिए शनिदेव को काले तिल बहुत प्रिय हैं। सूर्य ने कहा कि मकर संक्रांति के मौके पर जो भी मुझे काले तिल अर्पित करेगा, उनके जीवन में खुशहाली आएगी । इसी समय से मकर सक्रांति पर सूर्यदेव (का मकर राशि में प्रवेश) एवं शनिदेव की काले तिल से पूजा का प्रचलन हुआ जिससे किसी के पास धन धान्यकी कमी नहीं रहती है।

पौराणिक कथा के अनुसार, मकर सक्रांति के दिन ही स्वर्ग से उतरी देवी गंगा, महात्मा भगीरथ के पीछे चल कल महात्मा कपिल के आश्रम से होते हुए , समुद्र में जा मिली थी और इसके बाद ही राजा सगर के 60 हजार पुत्रों को मोक्ष की प्राप्ति हुई। तब से हर साल मकर संक्रांति का पर्व मनाया जाता है और मकर संक्रांति पर गंगा स्नान की मान्यता चली आ रही है। कुछ कथाओं के अनुसार, मकर सक्रांति वाले दिन , देवता पृथ्वी पर अवतरित होते हैं और गंगा आदि नदिओं में स्नान करते हैं। मकर सक्रांति को मौसम बदलाव का सूचक भी माना जाता है। इस दिन से वातावरण में कुछ गर्मी आने लगती है और फिर

बसंत ऋतु के बाद ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है। मकर सक्रांति पर सूर्य देव उत्तरायण में प्रवेश करते हैं। उत्तरायण देवताओं का दिन है, उत्तरायण के इस दिन मृत्यु होने से मोक्ष प्राप्त करने की संभावना अधिक होती है। द्वापर युग में महाभारत काल में महात्मा भीष्म ने सूर्य देव के दक्षिणायन से उत्तरायण में आने पर ही मकर सक्रांति को देह त्याग किया था।

ज्ञात रहे- मकर सक्रांति से पहले खरमास होता है, जिसमें किसी शुभ मांगलिक कार्य करने की मनाही होती है। मकर सक्रांति के साथ ही विवाह, मुंडन, जनेऊ और नामकरण आदि संस्कारों की शुरुआत हो जाती है। मकर सक्रांति को मौसम बदलाव का सूचक भी माना जाता है। इस दिन से वातावरण में कुछ गर्मी आने लगती है और फिर बसंत ऋतु के बाद ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है। इस पर्व पर प्रकृति में प्रकाश और ऊर्जा देने वाले सूर्यदेव की पूजा होती है।

श्री नारायण सम्पूर्ण कवच

न्यास- सर्वप्रथम श्रीगणेश जी तथा भगवान नारायण को नमस्कार करें –

अङ्गन्यासः

ऊँ ऊँ नमः पादयोः – (दाहिने हाथ की तर्जनी और अंगुठा इन दोनों को मिलाकर दोनों पैरों का स्पर्श करें)

ऊँ नं नमः जानुनो – (दाहिने हाथ की तर्जनी और अंगुठा इन दोनों को मिलाकर दोनों घुटनों का स्पर्श करें)

ऊँ मों नमः ऊर्वोः (दाहिने हाथ की तर्जनी और अंगुठा इन दोनों को मिलाकर दोनों पैरों की जाँघो का स्पर्श करें)

ऊँ नां नमः उदरे – (दाहिने हाथ की तर्जनी और अंगुठा इन दोनों को मिलाकर पेट का स्पर्श करें)

ऊँ रां नमः हृदि – (मध्यमा, अनामिका और तर्जनी से हृदय का स्पर्श करें)

ऊँ यं नमः उरसि – (मध्यमा, अनामिका और तर्जनी से छाती का स्पर्श करें)

ऊँ णां नमः मुखे – (तर्जनी और अँगुठे के संयोग से मुख का स्पर्श करें)

ऊँ यं नमः शिरसि – (तर्जनी और मध्यमा के संयोग से सिर का स्पर्श करें)

करन्यासः

ऊँ ऊँ नमः दक्षिणतर्जन्याम् – (दाहिने अँगुठे से दाहिने तर्जनी के सिरे का स्पर्श करें)
ऊँ नं नमः दक्षिणमध्यमायाम् – (दहिने अँगुठे से दाहिने हाथ की मध्यमा अँगुली का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)
ऊँ मों नमः दक्षिणानामिकायाम् – (दहिने अँगुठे से दाहिने हाथ की अनामिका के ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)
ऊँ भं नमः दक्षिणकनिष्ठिकायाम् – (दाहिने अँगुठे से हाथ की कनिष्ठिका के ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)
ऊँ गं नमः वामकनिष्ठिकायाम् – (बाँये अँगुठे से बाँये हाथ की कनिष्ठिका के ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)
ऊँ वं नमः वामानिकायाम् – (बाँये अँगुठे से बाँये हाँथ की अनामिका के ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)
ऊँ तें नमः वाममध्यमायाम् – (बाँये अँगुठे से बाये हाथ की मध्यमा के ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)
ऊँ वां नमः वामतर्जन्याम् – (बाँये अँगुठे से बाँये हाथ की तर्जनी के ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)
ऊँ सुं नमः दक्षिणाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि (दाहिने हाथ की चारों अँगुलियों से दाहिने हाथ के अँगुठे का ऊपर वाला पोर छुए)
ऊँ दें नमः दक्षिणाङ्गुष्ठायः पर्वणि – (दाहिने हाथ की चारों अँगुलियों से दाहिने हाथ के अँगुठे का नीचे वाला पोर छुए)
ऊँ वां नमः वामाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि – (बाँये हाथ की चारों अँगुलियों से बाँये अँगुठे के ऊपरवाला पोर छुए)
ऊँ यं नमः वामाङ्गुष्ठाधः पर्वणि – (बाँये हाथ की चारों अँगुलियों से बाँये हाथ के अँगुठे का नीचे वाला पोर छुए)

विष्णुषडक्षरन्यासः

ऊँ ऊँ नमः हृदये – **(तर्जनी, मध्यमा एवं अनामिका से हृदय का स्पर्श करें)**
ऊँ विं नमः मूर्धनि – **(तर्जनी मध्यमा के संयोग सिर का स्पर्श करें)**
ऊँ षं नमः भ्रुर्वोर्मध्ये – **(तर्जनी, मध्यमा से दोनों भौंहों का स्पर्श करें)**
ऊँ णं नमः शिखायाम् – **(अँगुठे से सिखा का स्पर्श करें)**
ऊँ वें नमः नेत्रयोः – **(तर्जनी, मध्यमा से दोनों नेत्रों का स्पर्श करें)**
ऊँ नं नमः सर्वसन्धिषु – **(तर्जनी, मध्यमा, अनामिका से शरीर के सभी जोड़ो- कंधा, घुटना, कोहनी को स्पर्श करें)**
ऊँ मः अस्त्राय फट् प्राच्याम् – **(पूर्व की ओर चुटकी बजाएँ)**

<table>
<tr><td colspan="2">ऊँ मः अस्त्राय फट् आग्नेय्याम् – (अग्निकोण में चुटकी बजायें)
ऊँ मः अस्त्राय फट् दक्षिणस्याम् – (दक्षिण की ओर चुटकी बजाएँ)
ऊँ मः अस्त्राय फट् नैऋत्ये – (नैऋत्य कोण में चुटकी बजाएँ)
ऊँ मः अस्त्राय फट् प्रतीच्याम् – (पश्चिम की ओर चुटकी बजाएँ)
ऊँ मः अस्त्राय फट् वायव्ये – (वायुकोण में चुटकी बजाएँ)
ऊँ मः अस्त्राय फट् उदीच्याम् – (उत्तर की ओर चुटकी बजाएँ)
ऊँ मः अस्त्राय फट् ऐशान्याम् – (ईशानकोण में चुटकी बजाएँ)
ऊँ मः अस्त्राय फट् ऊर्ध्वायाम् – (ऊपर की ओर चुटकी बजाएँ)
ऊँ मः अस्त्राय फट् अधरायाम् – (नीचे की ओर चुटकी बजाएँ)</td></tr>
<tr><td colspan="2" align="center">श्री हरिः अथ श्रीनारायणकवच (श्रीमद्भागवत स्कन्ध 6 , अ। 8)</td></tr>
<tr><td>राजोवाच
यया गुप्तः सहस्त्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान्।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम्
॥१॥भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम्।
यथाऽऽततायिनः शत्रून् येन गुप्तोऽजयन्मृधे॥२॥</td><td>राजा परिक्षित ने पूछा – भगवन्! देवराज इंद्र ने जिससे सुरक्षित होकर शत्रुओं की चतुरङ्गिणी सेना को खेल खेल में अनायास ही जीतकर त्रिलोकी की राज लक्ष्मी का उपभोग किया, आप उस नारायण कवच को सुनाइये और यह भी बतलाईये कि उन्होंने उससे सुरक्षित होकर रणभूमि में किस प्रकार आक्रमणकारी शत्रुओं पर विजय प्राप्त की॥</td></tr>
<tr><td>श्री शुक्र उवाच
वृतः पुरोहितोस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु ॥३॥</td><td>श्री शुक्रदेव जी ने कहा- परीक्षित्! जब देवताओं ने विश्वरूप को पुरोहित बना लिया, तब देवराज इन्द्र के प्रश्न करने पर विश्वरूप ने नारायण कवच का उपदेश दिया तुम एकाग्र चित्त होकर उसका श्रवण करो॥३॥</td></tr>
<tr><td>विश्वरूप उवाच
धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ् मुखः।
कृतस्वाङ्गकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः॥४॥
नारायणमयं वर्म संनह्येद्भय आगते।</td><td>विश्वरूप ने कहा- देवराज इन्द्र ! भय का अवसर उपस्थित होने पर नारायण कवच धारण करके अपने शरीर की रक्षा कर लेनी चाहिए उसकी विधि यह है कि पहले हाथ पैर धोकर आचमन करें, फिर हाथ में कुश की पवित्री धारण करके उत्तर मुख करके बैठ जाय इसके बाद कवच धारण पर्यंत और कुछ न बोलने का निश्चय करके पवित्रता से “ ऊँ नमो नारायणाय ” और “ ऊँ</td></tr>
</table>

पादयोर्जानुनोरूर्वोरूदरे हृद्यथोरसि ॥५॥ मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादोंकारादीनि विन्यसेत्। ऊँ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा ॥६॥	नमो भगवते वासुदेवाय " इन मंत्रों के द्वारा हृदयादि अङ्गन्यास तथा अङ्गुष्ठादि करन्यास करें पहले " ऊँ नमो नारायणाय " इस अष्टाक्षर मन्त्र के ऊँ आदि आठ अक्षरों का क्रमशः पैरों, घुटनों, जाँघों, पेट, हृदय, वक्षःस्थल, मुख और सिर में न्यास करें अथवा पूर्वोक्त मन्त्र के यकार से लेकर ऊँकार तक आठ अक्षरों का सिर से आरम्भ कर उन्हीं आठ अङ्गों में विपरित क्रम से न्यास करें ॥४
करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया। प्रणवादियकारन्तमङ्गुल्यङ्गुष्ठपर्वसु ॥७॥	तदनन्तर "ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय" इस द्वादशाक्षर मन्त्र के ऊँ आदि 12अक्षरों का दायीं तर्जनी से बाँयीं तर्जनी तक दोनों हाथो की 8 अँगुलियों और दोनों अँगुठों की 2-2 गाठों में न्यास करें॥७॥
न्यसेद् हृदय ओङ्कारं विकारमनु मूर्धनि। षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया दिशेत् ॥८॥ वेकारं नेत्रयोर्युञ्ज्यान्नकारं सर्वसन्धिषु। मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः ॥९॥ सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत्। ऊँ विष्णवे नम इति ॥१०॥	फिर " ऊँ विष्णवे नमः " इस मन्त्र के पहले के पहले अक्षर 'ऊँ ' का हृदय में, ' वि ' का ब्रह्मरन्ध्र, में ' ष ' का भौहों के बीच में, 'ण ' का चोटी में, ' वे ' का दोनों नेत्रों और 'न' का शरीर की सब गाँठों में न्यास करें तदनन्तर 'ऊँ मः अस्त्राय फट्' कहकर दिग्बन्द करें इस प्रकर न्यास करने से इस विधि को जानने वाला पुरूष मन्त्रमय हो जाता है ॥८-१०॥
आत्मानं परमं ध्यायेद ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम्। विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत ॥११॥	इसके बाद समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान और वैराग्य से परिपूर्ण इष्टदेव भगवान का ध्यान करें और अपने को भी तद् रूप ही चिन्तन करें तत्पश्चात् विद्या, तेज और तपः स्वरूप इस कवच का पाठ करे॥११॥
ऊँ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे। दरारिचर्मासिगदेषुचापाशान्द धानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः ॥१२॥	भगवान् श्री हरि गरूड़ जी की पीठ पर अपने चरण कमल रखे हुए हैं अणिमा आदि आठों सिद्धियाँ उनकी सेवा कर रही हैं आठ हाँथों में शंख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा, बाण, धनुष, और पाश (फंदा) धारण किए हुए हैं वे ओंकार स्वरूप प्रभु सब प्रकार से सब ओर से मेरी रक्षा करें ॥१२॥

जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्तिर्यादो गणेभ्यो वरूणस्य पाशात्। स्थलेषु यावटुवामनोऽव्यात् त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः ॥१३॥	मत्स्यमूर्ति भगवान जल के भीतर जल जंतुओं से और वरूण के पाश से मेरी रक्षा करें माया से ब्रह्मचारी रूप धारण करने वाले वामन भगवान स्थल पर और विश्वरूप श्री त्रिविक्रम भगवान आकाश में मेरी रक्षा करें ॥१३॥
दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः पायान्नृसिंहोऽसुरयुथपारिः। विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः ॥१४॥	जिनके घोर अट्टहास करने पर सब दिशाएँ गूँज उठी थीं और गर्भवती दैत्य पत्नियों के गर्भ गिर गये थे, वे दैत्ययुथ पतियों के शत्रु भगवान नृसिंह किले, जंगल, रणभूमि आदि विकट स्थानों में मेरी रक्षा करें
रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः। रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे सलक्ष्मणोऽव्याद्भरताग्रजोऽस्मान् ॥१५॥	अपनी दाढ़ों पर पृथ्वी को उठा लेने वाले यज्ञमूर्ति वराह भगवान मार्ग में, परशुराम जी पर्वतों के शिखरों और लक्ष्मणजी के सहित भरत अग्रज भगवान रामचंद्र प्रवास के समय मेरी रक्षा करें ॥
मामुग्रधर्मादखिलात्प्रमादान्नारायणः पातु नरश्च हासात्। दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात् ॥१६॥	भगवान नारायण मारण मोहन आदि भयंकर अभिचारों और सब प्रकार के प्रमादों से मेरी रक्षा करें ऋषि श्रेष्ठ नर गर्व से, योगेश्वर भगवान दत्तात्रेय योग के विघ्नों से और त्रिगुणाधिपति भगवान कपिल कर्म बन्धन से मेरी रक्षा करें ॥
सनत्कुमारोऽवतु कामदेवाद्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात्। देवर्षिवर्यः पुरूषार्चनान्तरात् कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात् ॥१७॥	परमर्षि सनत्कुमार कामदेव से, हयग्रीव भगवान मार्ग में चलते समय देवमूर्तियों को नमस्कार आदि न करने के अपराध से, देवर्षि नारद सेवा पराधों से और भगवान कच्छप सब प्रकार के नरकों से मेरी रक्षा करें ॥१७॥
धन्वन्तरिर्भगवान्पात्वपथ्या द्द्वन्द्वाद्भया दृषभो निर्जितात्मा।यज्ञश्च लोकादवताज्ञनान्ताद् बलो गणात्क्रोधवशादहीन्द्रः ॥१८॥	भगवान धन्वन्तरि कुपथ्य से, जितेन्द्र भगवान ऋषभदेव सुख-दुःख आदि भयदायक द्वन्द्वों से, यज्ञ भगवान लोकापवाद से, बलराम जी मनुष्य कृत कष्टों से और श्री शेष जी क्रोधवश नामक सर्पों के गणों से मेरी रक्षा करें॥१८॥
द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद् बुद्धस्तु पाखण्ड गणप्रमादात्। कल्किः कले कालमलात्प्रपातु धर्मावनायोरूकृतावतारः ॥१९॥	भगवान श्रीकृष्णद्वेपायन व्यासजी अज्ञान से तथा बुद्ध पाखण्डियों से और प्रमाद से मेरी रक्षा करें धर्म रक्षा करने वाले महान अवतार धारण करने वाले भगवान कल्कि पापबहुल कलिकाल के दोषों से मेरी रक्षा करें ॥१९॥
मां केशवो गदया प्रातरव्याद् गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः।नारायण प्राह्ण उदात्तशक्ति	प्रातःकाल भगवान केशव अपनी गदा लेकर, कुछ दिन चढ़ जाने पर भगवान गोविन्द अपनी बांसुरी लेकर, दोपहर के पहले भगवान नारायण अपनी तीक्ष्ण

र्मध्यन्दिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ॥२०॥	शक्ति लेकर और दोपहर को भगवान विष्णु चक्रराज सुदर्शन लेकर मेरी रक्षा करें॥२०॥
देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा सायं त्रिधामावतु माधवो माम्।दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः ॥२१॥	तीसरे पहर में भगवान मधुसूदन अपना प्रचण्ड धनुष लेकर मेरी रक्षा करें सांयकाल में ब्रह्मा आदि त्रिमूर्तिधारी माधव, सूर्यास्त के बाद हृषिकेश, अर्ध-रात्रि के पूर्व तथा अर्ध रात्रि के समय अकेले भगवान पद्मनाभ मेरी रक्षा करें ॥
श्रीवत्सधामापररात्र ईशः प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः। दामोदरोऽव्यादनुसन्ध्यं प्रभाते विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ॥२२॥	रात्रि के पिछले प्रहर में श्रीवत्सलाञ्छन श्रीहरि, उषाकाल में खड्गधारी भगवान जनार्दन, सूर्योदय से पूर्व श्रीदामोदर और सम्पूर्ण सन्ध्याओं में कालमूर्ति भगवान विश्वेश्वर मेरी रक्षा करें॥
चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि भ्रमत्समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम्। दन्दग्धि दन्दग्ध्यरिसैन्यमासु कक्षं यथा वातसखो हुताशः ॥२३॥	सुदर्शन ! आपका आकार चक्र (रथ के पहिये) की तरह है आपके किनारे का भाग प्रलयकालीन अग्नि के समान अत्यन्त तीव्र है आप भगवान की प्रेरणा से सब ओर घूमते रहते हैं जैसे आग वायु की सहायता से सूखे घास को जला डालती है, वैसे ही आप हमारी शत्रुसेना को शीघ्र से शीघ्र जला दीजिये,
गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिङ्गे निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियासि। कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षो भूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन् ॥२४॥	कौमुद की गदा ! आपसे छूटने वाली चिनगारियों का स्पर्श वज्र के समान असह्य है आप भगवान अजित की प्रिया हैं और मैं उनका सेवक हूँ इसलिए आप कूष्माण्ड, विनायक, यक्ष, राक्षस, भूत और प्रेतादि ग्रहों को अभी कुचल डालिये, कुचल डालिये तथा मेरे शत्रुओं को चूर चूर करें ॥२४॥
त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृ पिशाचविप्रग्रह घोरदृष्टीन्। दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन् ॥२५॥	शङ्खश्रेष्ठ ! आप भगवान श्रीकृष्ण के फूँकने से भयंकर शब्द करके मेरे शत्रुओं का दिल दहला दीजिये एवं यातुधान, प्रमथ, प्रेत, मातृका, पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि भयावने प्राणियों को यहाँ से झटपट दूर करें ॥२५॥
त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्य मीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि। चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम् ॥२६॥	भगवन की श्रेष्ठ तलवार ! आपकी धार बहुत तीक्ष्ण है आप भगवान की प्रेरणा से मेरे शत्रुओं को छिन्न भिन्न कर दिजिये भगवान की प्यारी ढाल ! आप में सैकड़ों चन्द्राकार मण्डल हैं आप पाप दृष्टि पापात्मा शत्रुओं की आँखे बन्द कर दिजिये और उन्हें सदा के लिये अंधा बना दीजिये ॥२६॥

यन्नो भयं ग्रहेभ्यो ऽभूत्केतुभ्यो नृभ्य एव च। सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव वा ॥२७॥ सर्वाण्येतानि भगन्नामरूपास्त्रकीर्तनात्। प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः ॥२८॥	सूर्य आदि ग्रह, धूमकेतु (पुच्छल तारे) आदि केतु, दुष्ट मनुष्य, सर्पादि रेंगने वाले जन्तु, दाढ़ों वाले हिंसक पशु, भूत-प्रेत आदि तथा पापी प्राणियों से हमें जो – जो भय हो और जो -जो हमारे मङ्गल के विरोधि हों वे सभी भगावान के नाम, रूप तथा आयुधों का कीर्तन करने से तत्काल नष्ट हो जाँय ॥२७-२८॥
गरूड़ो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः। रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः ॥२९॥	बृहद्, रथन्तर आदि सामवेदीय स्तोत्रों से जिनकी स्तुति की जाती है, वेदमूर्ति भगवान गरूड़ और विष्वक्सेन जी अपने नामोच्चारण के प्रभाव से हमें सब प्रकार की विपत्तियों से बचायें ॥२९॥
सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः। बुद्धिन्द्रियमनः प्राणान्पान्तु पार्षदभूषणाः ॥३०॥	श्रीहरि के नाम, रूप, वाहन, आयुध और श्रेष्ठ पार्षद हमारी बुद्धि, इन्द्रिय, मन और प्राणों को सबकी आपत्तियों से बचाये ॥
यथा हि भगवानेव वस्तुतः सद्सच्च यत्। सत्यनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपाद्रवाः ॥३१॥	जितना भी कार्य वा कारण रूप जगत है, वह वास्तव में भगवान ही है इस सत्य के प्रभाव से हमारे सारे उपद्रव नष्ट हो जाँय ॥
यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम्। भूषणायुधलिङ्गाख्या धत्ते शक्तीः स्वमायया ॥३२॥ तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः। पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः ॥३३॥	जो लोग ब्रह्म और आत्मा की एकता का अनुभव कर चुके हैं, उनकी दृष्टि में भगवान का स्वरूप समस्त विकल्पों से रहित है, भेदों से रहित हैं फिर भी वे अपनी माया शक्ति के द्वारा भूषण, आयुध और रूप नामक शक्तियों को धारण करते हैं यह बात निश्चित रूप से सत्य है इस कारण सर्वज्ञ, सर्वव्यापक भगवान श्रीहरि सदा सर्वत्र सब स्वरूपों से हमारी रक्षा करें ॥३२-३३॥
विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्तादन्त र्बहिर्भगवान् नारसिंहः। प्रहापयँल्लोकभयं स्वनेन स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजः ॥३४॥	जो अपने भयंकर अट्टहास से सब लोगों के भय को भगा देते हैं व अपने तेज से सबका तेज ग्रस लेते हैं,वे भगवान नृसिंह दिशा विदिशा में, नीचे ऊपर, बाहर भीतर सब ओर से हमारी रक्षा करें ॥
मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम्। विजेष्यस्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरयूथपान् ॥३५॥	देवराज इन्द्र ! मैने तुम्हें यह नारायण कवच सुना दिया है इस कवच से तुम अपने को सुरक्षित कर लो बस, फिर तुम अनायास ही सब दैत्य यूथपतियों को जीत कर लोगे ॥३५॥

एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा। पदा वा संस्पृशेत्सद्यः साध्वसात्स विमुच्यते ॥३६॥	इस नारायण कवच को धारण करने वाला पुरूष जिसको भी अपने नेत्रों से देख लेता है अथवा पैर से छू देता है, तत्काल समस्त भयों से से मुक्त हो जाता है ॥३६॥
न कुतश्चिद्भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत्। राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित् ॥३७॥	जो इस वैष्णवी विद्या को धारण कर लेता है, उसे राजा, डाकू, प्रेत, पिशाच आदि और बाघ आदि हिंसक जीवों से कभी किसी प्रकार का भय नहीं होता
इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः। योगधारणया स्वाङ्गं जहौ स मरूधन्वनि ॥३८॥	देवराज ! प्राचीनकाल की बात है, एक कौशिक गोत्री ब्राह्मण ने इस विद्या को धारण करके योगधारणा से अपना शरीर मरूभूमि में त्याग दिया ॥३८॥
तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा। ययौ चित्ररथः स्त्रीर्भिवृतो यत्र द्विजक्षयः ॥३९॥	जहाँ उस ब्राह्मण का शरीर पड़ा था, उसके उपर से एक दिन गन्धर्वराज चित्ररथ अपनी स्त्रियों के साथ विमान पर बैठ कर निकले॥
गगनान्न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाशिराः । स वालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः। प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा धाम स्वमन्वगात् ॥४०॥	वहाँ आते ही वे नीचे की ओर सिर किये विमान सहित आकाश से पृथ्वी पर गिर पड़े इस घटना से उनके आश्चर्य की सीमा न रही जब उन्हें बालखिल्य मुनियों ने बतलाया कि यह नारायण कवच धारण करने का प्रभाव है, तब उन्होंने उस ब्राह्मण देव की हड्डियों को ले जाकर पूर्व वाहिनी सरस्वती नदी में प्रवाहित कर दिया और फिर स्नान करके वे अपने लोक को चले गये
श्रीशुक उवाच य इदं शृणुयात् काले यो धारयति चादृतः। तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात् ॥४१॥	श्रीशुकदेवजी कहते हैं- परिक्षित जो पुरूष इस नारायण कवच को समय पर सुनता है और जो आदर पूर्वक इसे धारण करता है, उसके सामने सभी प्राणी आदर से झुक जाते हैं और वह सब प्रकार के भयों से मुक्त हो जाता है ॥
एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः। त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान् ॥४२॥	परीक्षित ! शतक्रतु इन्द्र ने आचार्य विश्वरूपजी से यह वैष्णवी विद्या प्राप्त करके रणभूमि में असुरों को जीत लिया और वे त्रैलोक्यलक्ष्मी का उपभोग करने लगे॥४२॥

॥ इति श्री नारायण कवच सम्पूर्णम् ॥ (श्रीमद्भागर्त स्कन्ध 6 , अ। 8)

श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र (55) Vishnu Sahasranamam - M.S.Subbulakshmi - YouTube	
ॐ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।	प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ 1 ॥
यस्यद्विरदवक्त्राद्याः पारिषद्याः परः शतम् ।	विघ्नं निघ्नन्ति सततं विष्वक्सेनं तमाश्रये ॥ 2 ॥
व्यासं वसिष्ठ नप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम् ।	पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम् ॥ 3 ॥
व्यासाय विष्णु रूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।	नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः ॥ 4 ॥
अविकाराय शुद्धाय नित्याय परमात्मने।	सदैक रूप रूपाय विष्णवे सर्वजिष्णवे ॥ 5 ॥
यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्।	विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ 6 ॥
ॐ नमो विष्णवे प्रभविष्णवे।	
श्री वैशम्पायन उवाच	
श्रुत्वा धर्मा नशेषेण पावनानि च सर्वशः।	युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्य भाषत ॥ 7 ॥
युधिष्ठिर उवाच	
किमेकं दैवतं लोके किं वाऽप्येकं परायणं	स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥ 8 ॥
को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः।	किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसार बन्धनात् ॥ 9 ॥
श्री भीष्म उवाच	
जगत्प्रभुं देवदेव मनन्तं पुरुषोत्तमम् ।	स्तुवन्नाम सहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥ 10 ॥
तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम्।	ध्यायन् स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥ 11 ॥
अनादि निधनं विष्णुं सर्वलोक महेश्वरम् ।	लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्व दुःखातिगो भवेत् ॥ 12 ॥
ब्रह्मण्यं सर्व धर्मज्ञं लोकानां कीर्ति वर्धनम्।	लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूत भवोद्भवम्॥ 13 ॥
एष मे सर्व धर्माणां धर्मोऽधिक तमोमतः ।	यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥ 14 ॥

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः।	परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् । 15 ॥
पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम्।	दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥ 16 ॥
यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादि युगागमे।	यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥ 17 ॥
तस्य लोक प्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते।	विष्णोर्नाम सहस्रं मे श्रुणु पाप भयापहम् ॥ 18 ॥
यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः।	ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥ 19 ॥
ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः।	छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान् देवकीसुतः ॥ 20 ॥
अमृतां शूद्भवो बीजं शक्तिर्देवकिनन्दनः।	त्रिसामा हृदयं तस्य शान्त्यर्थे विनियुज्यते ॥ 21 ॥
विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्।	अनेकरूप दैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम् ॥ 22 ॥
अस्य श्री विष्णोर्दिव्य सहस्रनाम स्तोत्र महामन्त्रस्य ।	
श्री वेदव्यासो भगवान् ऋषिः ।	
अनुष्टुप् छन्दः	
श्रीमहाविष्णुः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता ।	अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम् ।
देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः ।	उद्भवः, क्षोभणो देव इति परमोमन्त्रः ।
शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम् ।	शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम् ।
रथाङ्गपाणि रक्षोभ्य इति नेत्रम् ।	त्रिसामासामगः सामेति कवचम् ।
आनन्दं परब्रह्मेति योनिः ।	ऋतुस्सुदर्शनः काल इति दिग्बन्धः ॥
श्रीविश्वरूप इति ध्यानम् ।	
श्री महाविष्णु प्रीत्यर्थे सहस्रनाम जपे पारायणे विनियोगः ।	
करन्यासः	

विश्वं विष्णुर्वषट्कार इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः	अमृतां शूद्भवो भानुरिति तर्जनीभ्यां नमः
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृत् ब्रह्मेति मध्यमाभ्यां नमः	सुवर्णबिन्दु रक्षोभ्य इति अनामिकाभ्यां नमः
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वीति कनिष्ठिकाभ्यां नमः	रथाङ्गपाणि रक्षोभ्य इति करतल करपृष्ठाभ्यां नमः
अङ्गन्यासः	
सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्म इति ज्ञानाय हृदयाय नमः	सहस्रमूर्तिः विश्वात्मा इति ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा
सहस्रार्चिः सप्तजिह्व इति शक्त्यै शिखायै वषट्	त्रिसामा सामगस्सामेति बलाय कवचाय हुं
रथाङ्गपाणि रक्षोभ्य इति नेत्राभ्यां वौषट्	शाङ्गधन्वा गदाधर इति वीर्याय अस्त्रायफट्
ऋतुः सुदर्शनः काल इति दिग्भन्धः	
ध्यानम्	
क्षीरोधन्वत्प्रदेशे शुचिमणि-विलस-त्सैकते-मौक्तिकानां	माला-कॢप्तासनस्थः स्फटिक-मणिनिभै-र्मौक्तिकै-र्मण्डिताङ्गः।
शुभ्रै-रभ्रै-रदभ्रै-रुपरिविरचितै-र्मुक्त पीयूष वर्षैः	आनन्दी नः पुनीया-दरिनलिनगदा शङ्खपाणि-र्मुकुन्दः
भूः पादौ यस्य नाभिर्वियं-दसुर निलश्चन्द्र सूर्यौ च नेत्रे	कर्णावाशाः शिरोद्यौर्मुखमपि दहनो यस्य वास्तेयमब्धिः ।
अन्तःस्थं यस्य विश्वं सुर नरखगगोभोगि गन्धर्वदैत्यैः	चित्रं रं रम्यते तं त्रिभुवन वपुशं विष्णुमीशं नमामि ॥ 2 ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय !	
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं	विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिहृर्ध्यानगम्यम्	वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥ 3 ॥
मेघश्यामं पीतकौशेयवासं	श्रीवत्साकं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम् ।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं	विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम् ॥ 4 ॥
नमः समस्त भूतानां आदि भूताय भूभृते ।	अनेकरूप रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ 5॥

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं	सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
सहार वक्षःस्थल शोभि कौस्तुभं	नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् । 6॥
छायायां पारिजातस्य हेमसिंहासनोपरि	आसीनमम्बुदश्याममायताक्षमलङ्कृतम् ॥ 7 ॥
चन्द्राननं चतुर्बाहुं श्रीवत्साङ्कित वक्षसम्	रुक्मिणी सत्यभामाभ्यां सहितं कृष्णमाश्रये ॥ 8 ॥
पञ्चपूज लं – पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि, हं – आकाशात्मने पुष्पैः पूजयामि, यं – वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि रं – अग्न्यात्मने दीपं दर्शयामि, वं – अमृतात्मने नैवेद्यं निवेदयामि, सं – सर्वात्मने सर्वोपचार पूजा नमस्कारान् समर्पयामि	
स्तोत्रम्	
हरिः ओम्	
विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।	भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥ 1 ॥
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमागतिः ।	अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥ 2 ॥
योगो योगविदां नेता प्रधान पुरुषेश्वरः ।	नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥ 3 ॥
सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।	सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥ 4 ॥
स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ।	अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥ 5 ॥
अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।	विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥ 6 ॥
अग्राह्यः शाश्वतो कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।	प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥ 7 ॥
ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।	हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥ 8 ॥
ईश्वरो विक्रमीधन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।	अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान्॥ 9 ॥
सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः ।	अहस्संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥ 10 ॥
अजस्सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ।	वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिस्सृतः ॥ 11 ॥

वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितस्समः ।	अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥ 12 ॥
रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः ।	अमृतः शाश्वतस्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥ 13 ॥
सर्वगः सर्व विद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः ।	वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित्कविः ॥ 14 ॥
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः ।	चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥ 15 ॥
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।	अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ 16 ॥
उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः ।	अतीन्द्रः सङ्ग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥ 17 ॥
वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।	अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥ 18 ॥
महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।	अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥ 19 ॥
महेश्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सताङ्गतिः ।	अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥ 20 ॥
मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।	हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ 21 ॥
अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः ।	अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥ 22 ॥
गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ।	निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥ 23 ॥
अग्रणीग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः	सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ 24 ॥
आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः ।	अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥ 25 ॥
सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ।	सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥ 26 ॥
असङ्ख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।	सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिदः सिद्धि साधनः ॥ 27 ॥
वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः ।	वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥ 28 ॥
सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः ।	नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥ 29 ॥
ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ।	ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥ 30 ॥

अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः ।	औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥ 31 ॥
भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।	कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥ 32 ॥
युगादि कृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।	अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥ 33 ॥
इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः ।	क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥ 34 ॥
अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।	अपान्निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥ 35 ॥
स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।	वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्धरः ॥ 36 ॥
अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ।	अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥ 37 ॥
पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत् ।	महर्धिरृद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥ 38 ॥
अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।	सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिञ्जयः ॥ 39 ॥
विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ।	महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥ 40 ॥
उद्भवः, क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।	करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥ 41 ॥
व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।	परर्धिः परमस्पष्टः तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥ 42 ॥
रामो विरामो विरजो मार्गोनेयो नयोऽनयः ।	वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मोधर्म विदुत्तमः ॥ 43 ॥
वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।	हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥ 44 ॥
ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।	उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥ 45 ॥
विस्तारः स्थावर स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।	अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥ 46 ॥
अनिर्विण्णः स्थविष्ठो भूद्धर्मयूपो महामखः ।	नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः, क्षामः समीहनः ॥ 47 ॥
यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सताङ्गतिः ।	सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥ 48 ॥
सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।	मनोहरो जितक्रोधो वीर बाहुर्विदारणः ॥ 49 ॥

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत्।	वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ 50 ॥
धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम्॥	अविज्ञाता सहस्त्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥ 51 ॥
गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूत महेश्वरः ।	आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥ 52 ॥
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।	शरीर भूतभृद् भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥ 53 ॥
सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित् पुरुसत्तमः ।	विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्वतां पतिः ॥ 54 ॥
जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमित विक्रमः ।	अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधि शयोन्तकः ॥ 55 ॥
अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।	आनन्दोऽनन्दनोनन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥ 56 ॥
महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।	त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत् ॥ 57 ॥
महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी ।	गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्र गदाधरः ॥ 58 ॥
वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः ।	वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥ 59 ॥
भगवान् भगहाऽऽनन्दी वनमाली हलायुधः ।	आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥ 60 ॥
सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।	दिवःस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥ 61 ॥
त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक् ।	सन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम्। 62 ॥
शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।	गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥ 63 ॥
अनिवर्ती निवृत्तात्मा सङ्क्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।	श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतांवरः ॥ 64 ॥
श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।	श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ॥ 65 ॥
स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ।	विजितात्माऽविधेयात्मा सत्कीर्तिच्छिन्नसंशयः ॥ 66 ॥
उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः ।	भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥ 67 ॥
अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः ।	अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥ 68 ॥

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।	त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥ 69 ॥
कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः ।	अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥ 70 ॥
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।	ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥ 71 ॥
महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।	महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥ 72 ॥
स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः ।	पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ 73 ॥
मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।	वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥ 74 ॥
सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।	शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥ 75 ॥
भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः ।	दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ॥ 76 ॥
विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।	अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥ 77 ॥
एको नैकः स्तवः कः किं यत्तत् पदमनुत्तमम् ।	लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥ 78 ॥
सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।	वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥ 79 ॥
अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृत् ।	सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥ 80 ॥
तेजोऽवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतांवरः ।	प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः ॥ 81 ॥
चतुर्मूर्ति श्चतुर्बाहु श्चतुर्व्यूह श्चतुर्गतिः ।	चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥ 82 ॥
समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।	दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥ 83 ॥
शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।	इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥ 84 ॥
उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।	अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥ 85 ॥
सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।	महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥ 86 ॥
कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।	अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ 87 ॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।	न्यग्रोधोऽदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्र निषूदनः ॥ 88 ॥
सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।	अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥ 89 ॥
अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।	अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥ 90 ॥
भारभृत् कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।	आश्रमः श्रमणः, क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥ 91 ॥
धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः ।	अपराजितः सर्वसहो नियन्ताऽनियमोऽयमः ॥ 92 ॥
सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।	अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत् प्रीतिवर्धनः ॥ 93 ॥
विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ।	रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥ 94 ॥
अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।	अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकधिष्ठानमद्भुतः ॥ 95 ॥
सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः ।	स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्तिः स्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः ॥
अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।	शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥ 97 ॥
अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः, क्षमिणांवरः ।	विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ 98 ॥
उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।	वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥ 99 ॥
अनन्तरूपोऽनन्त श्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।	चतुरश्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥ 100 ॥
अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः ।	जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥ 101 ॥
आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।	ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥ 102 ॥
प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत् प्राणजीवनः ।	तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥ 103 ॥
भूर्भुवः स्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।	यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥ 104 ॥
यज्ञभृद् यज्ञकृद् यज्ञी यज्ञभुक् यज्ञसाधनः ।	यज्ञान्तकृद् यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥ 105 ॥
आत्मयोनिः स्वयञ्जातो वैखानः सामगायनः ।	देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥ 106 ॥

शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।	रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥ 107 ॥
श्री सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति ।	
वनमाली गदी शार्ङ्गी शङ्खी चक्री च नन्दकी । श्रीमान्नारायणो विष्णुर्वासुदेवोऽभिरक्षतु ॥ 108 ॥ **x 3**	
श्री वासुदेवोऽभिरक्षतु ॐ नम इति ।	
इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ।	नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम्। ॥1॥
य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत्॥	नाशुभं प्राप्नुयात् किञ्चित्सोऽमुत्रेह च मानवः ॥2॥
वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात् क्षत्रियो विजयी भवेत् ।	वैश्यो धनसमृद्धः स्यात् शूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥3॥
धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ।	कामानवाप्नुयात् कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम् ॥4॥
भक्तिमान् यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः ।	सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत् प्रकीर्तयेत् ॥5॥
यशः प्राप्नोति विपुलं यातिप्राधान्यमेव च ।	अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥6॥
न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति ।	भवत्यरोगो द्युतिमान् बलरूप गुणान्वितः ॥7॥
रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।	भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥8॥
दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।	स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥9॥
वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।	सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम्। ॥10॥
न वासुदेव भक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।	जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥11॥
इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।	युज्येतात्म सुखक्षान्ति श्रीधृति स्मृति कीर्तिभिः ॥12॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभामतिः ।	भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥ 13 ॥
द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः ।	वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥ 14 ॥
ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।	जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य स चराचरम्। ॥ 15 ॥

इन्द्रियाणि मनोबुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः ।	वासुदेवात्मकान्याहुः, क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ॥ 16 ॥
सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ।	आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥ 17 ॥
ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः ।	जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥ 18 ॥
योगोज्ञानं तथा साङ्ख्यं विद्याः शिल्पादिकर्म च ।	वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् ॥ 19 ॥
एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।	त्रींलोकान्व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः ॥ 20 ॥
इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।	पठेद्य इच्चेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥ 21 ॥
विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभुमव्ययम्।	भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥ 22 ॥
न ते यान्ति पराभवं ॐ नम इति ।	
अर्जुन उवाच	
पद्मपत्र विशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्तम ।	भक्ताना मनुरक्तानां त्राता भव जनार्दन ॥ 23 ॥
श्रीभगवानुवाच	
यो मां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डव ।	सोऽहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः ॥ 24 ॥
स्तुत एव न संशय ॐ नम इति ।	
व्यास उवाच	
वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् ।	सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ 25 ॥
श्रीवासुदेव नमोस्तुत ॐ नम इति ।	
पार्वत्युवाच	
केनोपायेन लघुना विष्णोर्नामसहस्रकम् ।	पठ्यते पण्डितैर्नित्यं श्रोतुमिच्छाम्यहं प्रभो ॥ 26 ॥
ईश्वर उवाच	

श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे । सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥ 27 ॥ श्रीराम नाम वरानन ॐ नम इति ।	
ब्रह्मोवाच	
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तयेसहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे	सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटी युगधारिणे नमः॥28॥
श्री सहस्रकोटी युगधारिणे नम ॐ नम इति ।	
सञ्जय उवाच	
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।	तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ 29 ॥
श्री भगवान् उवाच	
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।	तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्। ॥ 30 ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। ।	धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ 31 ॥
आर्ताः विषण्णाः शिथिलाश्च भीताः घोरेषु च व्याधिषु वर्तमानाः।	सङ्कीर्त्य नारायणशब्दमात्रं विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवन्ति॥32॥
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्	करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥33॥
यदक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत्	तथ्सर्वं क्षम्यतां देव नारायण नमोऽस्तु ते ।
विसर्ग बिन्दु मात्राणि पदपादाक्षराणि च	न्यूनानि चातिरिक्तानि क्षमस्व पुरुषोत्तमः ॥
इति श्री महाभारते शतसाहस्रिकायां संहितायां वैयासिक्यामनुशासन पर्वान्तर्गत आनुशासनिक पर्वणि, मोक्षधर्मे भीष्म युधिष्ठिर संवादे श्री विष्णोर्दिव्य सहस्रनाम स्तोत्रं नामैकोन पञ्च शताधिक शततमोध्यायः ॥	
श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तम्	
॥ ॐ तत्सत् सर्वं श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥	

आदित्य हृदय स्तोत्र

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम् । रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥1॥
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम् । उपगम्याब्रवीद् राममगस्त्यो भगवांस्तदा ॥2॥
राम राम महाबाहो श्रृणु गुह्मं सनातनम् । येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ॥3॥
आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम् । जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम् ॥4॥

सर्वमंगलमागल्यं सर्वपापप्रणाशनम् । चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥5॥
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम् । पुजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥6॥
सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावन: । एष देवासुरगणांल्लोकान् पाति गभस्तिभि: ॥7॥
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिव: स्कन्द: प्रजापति: । महेन्द्रो धनद: कालो यम: सोमो ह्यापां पतिः ॥8॥

पितरो वसव: साध्या अश्विनौ मरुतो मनु: । वायुर्वहिन: प्रजा प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकर: ॥9॥
आदित्य: सविता सूर्य: खग: पूषा गभस्तिमान् । सुवर्णसद्दशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकर: ॥10॥
हरिदश्व: सहस्त्रार्चि: सप्तसप्तिर्मरीचिमान् । तिमिरोन्मथन: शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान् ॥11॥
हिरण्यगर्भ: शिशिरस्तपनोऽहस्करो रवि: । अग्निगर्भोऽदिते: पुत्रः शंखः शिशिरनाशन: ॥12॥

व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजु:सामपारग: । घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः ॥13॥
आतपी मण्डली मृत्यु: पिगंल: सर्वतापन:। कविर्विश्वो महातेजा: रक्त:सर्वभवोद् भव: ॥14॥
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावन: । तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते ॥15॥
नम: पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नम: । ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नम: ॥16॥

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः । नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥17॥
नम उग्राय वीराय सारंगाय नमो नमः । नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ॥18॥
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सुरायादित्यवर्चसे । भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥19॥
तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने । कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥20॥

तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे । नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥21॥
नाशयत्येष वै भूतं तमेष सृजति प्रभुः । पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥22॥
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः । एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥23॥
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतुनां फलमेव च । यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमं प्रभुः ॥24॥

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च । कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ॥25॥
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगप्तितिम् । एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ॥26॥
अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि । एवमुक्ता ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥27॥
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा ॥ धारयामास सुप्रीतो राघव प्रयतात्मवान् ॥28॥
आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् । त्रिराचम्य शूचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ॥29॥
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागतम् । सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत् ॥30॥

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः ।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥31॥

बसंत पंचमी और सरस्वती पूजा

माघ शुक्ल पंचमी के दिन बड़े उल्लास से मनाया जाता है। बसंत को ऋतुओं का राजा कहा जाता है। इस दिन भगवन विष्णु, कामदेव और रति देवी की पूजा की जाती है। सृष्टि के आरम्भ में भगवन विष्णु की आज्ञा से , ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की , जब उन्होंने अपने कमंडल से जल छिड़का, पृथ्वी पर जलकण में कम्पन होने लगा , और वृक्षों के बीच एक चतुर्भुजी स्त्री का प्राकट्य हुआ जो एक हाथ में वीणा , दो हाथो में पुस्तक एवं माला लिए थी , और एक हाथ वर मुद्रा में था। वीणा के मधुरनाड से सब जीवों में वाणी व्याप्त हो आयी, जलधारा में कलकल के स्वर, पवन चलने से सरसराहट होने लगी। ब्रह्मा जी ने उसको वाणी की देवी सरस्वती, शारदा, वीणावादिनी, वाग्देवी, बागीश्वरी आदि नाम दिए। वे संगीत की देवी, विद्या और बुद्धि प्रदाता है। बसंत पंचमी इनके जन्मोत्सव के रूप में मनाते हैं। आज के दिन भगवन राम माता शबरी के आश्रम में आये थे।
ज्योतिषशास्त्र में बसंतपंचमी के दिन को सर्वसिद्धि एवं स्वयंसिद्धि का महूर्त कहा गया है। सभी पवित्र कार्य (मुंडन, यज्ञोपवीत, सगाई, विवाह , तिलक, गृहप्रवेश आदि मांगलिक कार्य इस दिन शुभ फलदायी माने गए हैं। गहने, कपडे, वाहन आदि की खरीददारी भी शुभ है। यथा संभव हो, ब्राह्मण को दान अवश्य करें।

सरस्वती पूजा : स्नान के बाद पीले रंग के वस्त्र धारण करें। घर के मंदिर को स्वच्छ करने के बाद देवी सरस्वती की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करवाए और एक पाटे पर रखेें। अब श्री गणेश की प्रतिमा को भी देवी सरस्वती की प्रतिमा के साथ स्थापित करें। अब पाटे के आगे कलश रखें, फूल अर्पित करें, फूलों की माला चढ़ाएं। सफ़ेद वस्त्र अर्पित करें। पीले रंग का फल (कदलीफल) और श्रृंगार की वस्तुएं चढ़ाएं। फिर विधिवत नवग्रह, गणेश जी, सरस्वती की महूर्त अनुसार पूजा करे। देवी सरस्वती की आरती करें, पीले फल, पीली मिठाई, मालपुए, बेसन के लड्डू का भोग लगा कर अपनी मनोकामना पूर्ण करने की, ज्ञान प्राप्त करने की प्रार्थना करें।फिर अपने से बड़े, माता पिता , गुरुजनो का आशीर्वाद प्राप्त करें।

बसंत पंचमी के दिन किये जाने वाले उपाय:-
वाक् सिद्धि प्राप्ति हेतु : ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः
आत्म ज्ञान प्राप्ति हेतु :ॐ ऐं वाग्देव्यै विझहे धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात
बुद्धि/विवेक/दूरदर्शिता/चतुराई से सफलता : ॐ सरस्वत्यै विद्महे ब्रह्मपुत्र्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात

सरस्वती वंदना **या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता, या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना या ब्रह्माच्युतशंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता, सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा**	**सरस्वती वंदना** जो परमेश्वरी भगवती शारदा कुंदपुष्प, चंद्र और बर्फ के हार के समान श्वेत है और श्वेत वस्त्रों से सुशोभित हो रही है जिसके हाथों में वीणा का श्रेष्ठ दंड सुशोभित है, जो श्वेत कमल पर विराजमान है जिसकी स्तुति सदा ब्रह्मा विष्णु और महेश द्वारा की जाती है. वह परमेश्वरी समस्त दुर्मति को दूर करने वाली माँ सरस्वती मेरी रक्षा करें.
आशासु राशीभवदंगवल्ली , **भासैव दासीकृतदुग्धसिन्धुम्,** **मन्दस्मितैर्निन्दितशारदेन्दुं ,** **वन्देऽरविन्दासनसुन्दरि त्वाम्**	जिनके शरीर की कांति समस्त दिशाओं में बिखरती है, अपनी छवि से जिसने शिव सागर को भी अपना दास बना लिया है. मंद मुस्कान से जिसने शरद ऋतु के चंद्रमा को भी फीका कर दिया है. श्वेतकमल आसन पर विराजमान हे सुंदरी सरस्वती मैं आपकी वंदना करता हूं.
शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे, सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं क्रियात् सरस्वतीं च तां नौमि वागधिष्ठातृदेवताम् देवत्वं प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः	शरद ऋतु के कमल के समान मुख वाली परमेश्वरी शारदा देवी मेरे मुखमंडल में हमेशा हमेशा निवास करें. वाणी की देवी मां सरस्वती को मैं नमस्कार करता हूं जिनकी मात्र कृपा से मनुष्य भी देवता बन जाते हैं.
पातु नो निकषग्रावा मतिहेम्नः सरस्वती, **प्राज्ञेतरपरिच्छेदं वचसैव करोति या**	वह सरस्वती जो विशाल बुद्धि रूपी सोने की कसौटी है और जो वाणी से ही बुद्धिमान -मूर्ख का अंतर प्रकट करती है.
शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं, वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारा-पहाम् । हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां, वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।	श्वेत रंग वाली ब्रह्मा के विचार के सार में लगी हुई, आदि शक्ति समस्त जगत में व्याप्त रहने वाली हाथों में वीणा और पुस्तक धारण करने वाली अभयदान को देने वाली तथा मूर्खता के अंधकार को दूर करने वाली हाथों में स्फटिक मणियों की माला धारण करने वाली श्वेत कमल पर विराजमान बुद्धि देने वाली, परम तेजस्वी मां सरस्वती के चरणों में मैं वंदना करता हूं.
वीणाधरे विपुलमंगलदानशीले, **भक्तार्तिनाशिनि विरण्चिहरीशवन्द्ये।** **कीर्तिप्रदेऽखिलमनोरथदे महार्हे,** **विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम्**	वीणा धारण करने वाली समस्त मंगल के दान में निपुण, भक्तों की पीड़ा को दूर करने वाली तथा ब्रह्मा विष्णु शिव द्वारा वंदनीय कीर्ति एवं समस्त मनोरथ को प्रदान कर, बहुमूल्य विद्या प्रदान करने वाली, भगवती माँ सरस्वती देवी के चरणों की वंदना करता हूं.

श्वेताब्जपूर्णविमलासनसंस्थिते हे, श्वेताम्बरा वृतमनोहरमंजुगात्रे, उद्यन्मनोज्ञसितपंकजमं जुलास्ये, विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम्	श्वेत कमल के स्वच्छ आसन पर बैठी हुई, वस्त्रों से सुंदर शरीर को ढके हुए, खिले हुए सुंदर, सफेद कमल के समान सुंदर मुख वाली हे देवी, संपूर्ण विद्याओं देने वाली सरस्वती मां मैं आपके चरणों की वंदना करता हूं
मातस्त्वदीयपदपंकजभक्तियुक्ता, ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय। ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण्, भूवह्निवायुगगनाम्बुविनिर्मितेन	हे माँ परमेश्वरी तुम्हारे चरण कमल की भक्ति में लगे रहकर जो लोग अन्य सबको छोड़कर तुम्हें भजते हैं वह अपने पंचभूतों से बने हुए इस शरीर से देवत्व को प्राप्त हो जाते हैं.
मोहान्धकारभरिते हृदये मदीये, मातः सदैव कुरु वासमुदारभावे याखिलावयवनिर्मलसुप्रलाभिः, शीघ्रं विनाशय मनोगतमन्धकारम्	मोह और अंधकार से भरे मेरे हृदय में हे माता तुम उदार भाव से हमेशा-हमेशा निवास करो अपने समस्त अवयवों की निर्मल एवं सुंदर कांति से मेरे मन के अंधकार को शीघ्र ही नष्ट करो.
ब्रह्मा जगत् सृजति पालयतीन्दिरेशः, शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावैः। न स्यात्कृपा यदि तव प्रकटप्रभावे , न स्युः कथंचिदपि ते निजकार्यदक्षाः	हे देवी! आपके प्रभाव से ब्रह्मा संसार को बनाते है. विष्णु उसका पालन करते हैं और आपके प्रभाव से ही शिव का संहार करते हैं. हे देवी! यदि आपकी कृपा ना हो तो पर सब अपने कर्मों में निपुण नहीं हो सकते हैं.
लक्ष्मीर्मेधा धरा पुष्टिर्गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः, एताभिः पाहि तनुभिरष्टाभिर्मां सरस्वति । सरस्वत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः, वेदवेदान्तवेदांगविद्यास्थानेभ्य एव च ।	हे मां सरस्वती, लक्ष्मी, मेघा, धरा, पुष्टि, गोरी, तुष्टि, प्रभा, धर्ति इन रूपों में मेरी रक्षा करो. हे माँ सरस्वती में आपके चरणों में नित्य वंदना करता हूँ. मां भद्रकाली को नमस्कार करता हूं और वेद, वेदांत, वेदांग तथा विद्या के स्थानों को मेरा प्रणाम है.
सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने, विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तु ते । यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्, तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ।	हे माँ सरस्वती! आप अत्यंत भाग्यशालिनी हो. आप ज्ञान स्वरूपा हो कमल के समान एवं विशाल नेत्र वाली हे ज्ञानदात्री मां मुझे विद्या दो! मैं आपको बारंबार प्रणाम करता हूं. हे माँ अज्ञानवश, भूल से पद, अक्षर एवं मात्राओं की मुझसे कोई गलती हुई हो तो इन सभी को क्षमा करके आप परमेश्वरी कृपा करके प्रसन्न होवे!!

महाशिवरात्रि

भगवान शिव हिंदुओं की प्रमुख आराध्य देवता हैं। महाशिवरात्रि का पर्व शिव भक्तों के लिए विशेष महत्व रखता है। हिंदू पुराणों के अनुसार इस दिन भगवान शिव का प्राकट्य और विवाह दोनों हुआ था। इसीलिए इस विशेष दिन भगवान शिव की आराधना का महत्व बहुत अधिक है। महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव को गंगा जल चढ़ाने से विशेष पुण्य प्राप्त होता है। महाशिवरात्रि से एक दिन पूर्व त्रयोदशी तिथि में शिवजी की पूजा करनी चाहिए और व्रत का संकल्प लेना चाहिए। इसके उपरांत चतुर्दशी तिथि को निराहार रहना चाहिए। महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव की मूर्ति या शिवलिंग को पंचामृत से स्नान कराकर 'ॐ नमः शिवायः' मंत्र से पूजा करनी चाहिए। इसके बाद रात्रि के चारों प्रहर में शिवजी की पूजा करनी चाहिए और अगले दिन प्रातःकाल ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देकर व्रत का पारण करना चाहिए।

पूजा सामग्री: सुगंधित पुष्प, बिल्वपत्र, धतूरा, भाँग, बेर, आम्र मंजरी, जौ की बालें, मंदार पुष्प, गाय का कच्चा दूध, ईख का रस, दही, शुद्ध देशी घी, शहद, गंगा जल, पवित्र जल, कपूर, धूप, दीप, रूई, मलयागिरी, चंदन, पंच फल, पंच मेवा, पंच रस, इत्र, गंध रोली, मौली जनेऊ, पंच मिष्ठान्न, शिव व माँ पार्वती की श्रृंगार की सामग्री, वस्त्राभूषण रत्न, सोना, चांदी, दक्षिणा, पूजा के बर्तन, कुशासन आदि।

व्रत व पूजा के मंत्र: ॐ नमः शिवाय का जाप या मनन श्रद्धा व ध्यान से।

बिल्वपत्र चढ़ाने का मंत्र: नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च।
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चा हनन्न्याय च नमो घृशणवे॥
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनम् पापनाशनम्। अघोर पाप संहारं बिल्व पत्रं शिवार्पणम्॥
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्। त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
अखण्डै बिल्वपत्रैश्च पूजये शिव शंकरम्। कोटिकन्या महादानं बिल्व पत्रं शिवार्पणम्॥
गृहाण बिल्व पत्राणि सपुश्पाणि महेश्वर। सुगन्धीनि भवानीश शिवत्वंकुसुम प्रिय।

इसके बाद व्रत कथा (तुलसीदास कृत पार्वती मंगल) का वाचन और श्रवण करें।
शिव पार्वती विवाह के श्रवण मात्र से जन्म मरण से मुक्ति मिलती हैं।

शीतला सप्तमी (बासड़िया) फाल्गुन शुक्ल पक्ष सप्तमी (होली से पहले मंगलवार)

होली से पहले सोमवार की रात को भोजन (मीठी रोटी या पूरी, मीठे चावल, सत्तू की रोटी) पकाते है। मंगलवार को स्नान के बाद , शीतला माता के मंदिर में जा कर माता की पूजा (कच्चा दूध, भीगा चने की दाल, हल्दी के साथ) करने के बाद गरीबों को दान देना शुभ है। घर आकर मुख्या द्वार के दोनों और बचा हुआ कच्चा दूध वाला पानी डालते है। फिर ही घर में प्रवेश करते हैं और ठंडा बासी भोजन खाने का नियम हैं।

होली

होलिका दहन: कृतयुग में हिरण्यकशिपु नाम का एक अत्यंत बलशाली असुर था। उसने अपने राज्य में ईश्वर का नाम लेने पर ही पाबंदी लगा दी थी। हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रह्लाद (परम आनन्द) ईश्वर भक्त था। प्रह्लाद की ईश्वर भक्ति से क्रुद्ध होकर हिरण्यकशिपु ने उसे (पर्वत से गिराना, साँपों से डसवाना, खोलते तेल में डालना आदि) अनेक कठोर दंड दिए, परंतु उसने ईश्वर की भक्ति का मार्ग न छोड़ा। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका (जलाने की लकड़ी) को वरदान प्राप्त था कि वह आग में भस्म नहीं हो सकती। हिरण्यकशिपु ने आदेश दिया कि होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठे। आग में बैठने पर होलिका तो जल गई, पर प्रह्लाद अक्षुण्ण रहे (बच गया)। ईश्वर भक्त प्रह्लाद की याद में इस दिन होली जलाई जाती है। इसी दिन प्रथम पुरुष मनु का जन्म हुआ था- मन्वादितिथि कहते हैं।

शिव पार्वती विवाह और मिलन : कृतयुग में देवता और असुरों के बीच युद्ध हो रहा था और देवता हार रहे थे। ब्रह्मा जी ने बताया कि असुरों को हारने के लिए शिव पुत्र का जन्म आवश्यक है। शिव अपनी भार्या देवी सती के दक्ष यज्ञ में दाह के कारण विरक्त हो तपस्या में लीन थे। देवी सती का पुनर्जन्म पर्वतराज हिमालय सुनैना के घर पार्वती के रूप में हो चूका था। वे शिव को पाने के लिए घोर तप कर रही थी। देवताओं के कहने पर प्रेम और बसंत के देव कामदेव ने शिव पर अपना पुष्प बाण छोड़ा। शिव कि तपस्या भंग हो गयी। परन्तु उनके क्रोध से कामदेव भस्म हो गए। उनकी पत्नी रति के अनुनय विनती करने पर शिव जी ने कामदेव को अनंग (बिना शरीर)रूप में हर प्राणी में रहने का वर दिया। बाद में शिव पार्वती विवाह और मिलन से षण्मुख कार्तिकेय जी का जन्म हुआ जिन्होंने देवताओं के सेनापति बनकर तारकासुर वध किया ।

होली धुलेंडी : त्रेतायुग की शुरुआत में भगवन विष्णु जी ने (धुलेंडी) धूलि वंदन किया था। वैदिक काल में होलिकोत्सव को **नवात्रैष्टि यज्ञ** कहा जाता था। उस समय खेत के अधपके अन्न को यज्ञ में (अन्न को यज्ञ की अग्नि में होम करना) दान करके प्रसाद लेने का विधान था। इसी से इसका नाम **होली धुलेंडी** पड़ा।

भगवान कृष्ण- राधा : पौराणिक कथाओं के अनुसार, अपने शरारती स्वभाव के लिए जाने जाने वाले भगवान कृष्ण ने अपने सांवले रंग के बारे में अपनी मां से शिकायत की थी। जवाब में, उसकी माँ ने चंचलता से सुझाव दिया कि वह राधा के चेहरे को रंगों से रंग दे। इस सुझाव के बाद, भगवान कृष्ण और उनके साथी राधा और गोपियों पर गुलाल, रंगीन पानी फेंकें थे, जिससे एक खुशी और रंगीन उत्सव उत्पन्न हुआ। माना जाता है कि होली के दौरान रंग लगाने और पानी छिड़कने की परंपरा इस चंचल प्रेम कहानी से उत्पन्न हुई है।

पर्व का पहला दिन होलिका दहन का दिन कहलाता है। इस दिन चौराहों पर व जहाँ कहीं अग्नि के लिए लकड़ी एकत्र की गई होती है, वहाँ होली जलाई जाती है। इसमें लकड़ियाँ और उपले प्रमुख रूप से होते हैं। जिनके बीच में छेद होता है। इस छेद में मूँज की रस्सी डाल कर माला बनाई जाती है। होली में आग लगाने से पहले इस माला को भाइयों के सिर के ऊपर से सात बार घूमा कर फेंक दिया जाता है। रात को होलिका दहन के समय यह माला होलिका के साथ जला दी जाती है। इस दिन होलिका दहन की राख से तिलक लगा कर वंदन करते हैं।

दूसरे दिन सफ़ेद वस्त्र पहन कर होली खेलते हैं , जिस पर होली के रंग सुन्दर दिखाई देते हैं।होली के दिन घरों में गुझियों, खीर, पूरी और पूड़े आदि विभिन्न व्यंजन (खाद्य पदार्थ) पकाए जाते हैं।

शीतला सप्तमी (बासड़िया) चैत्र माह कृष्ण पक्ष (होली के बाद का पहला मंगलवार)

होली **के बाद का** पहले सोमवार की रात को भोजन (मीठी रोटी या पूरी, मीठे चावल, सत्तू की रोटी) पकाते है। मंगलवार को स्नान के बाद , शीतला माता के मंदिर में जा कर माता की पूजा (कच्चा दूध, भीगा चने की दाल, हल्दी के साथ) करने के बाद गरीबों को दान देना शुभ है। घर आकर मुख्या द्वार के दोनों और बचा हुआ कच्चा दूध वाला पानी डालते है। फिर ही घर में प्रवेश करते हैं और ठंडा बासी भोजन खाने का नियम हैं।

युगादि या उगादि पर्व (गुड़ी पड़वा)

उगादि या युगादि पर्व (गुड़ी पड़वा) की तिथि उगादि पर्व चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि

पूजन विधि सुबह स्नान आदि करके घर के मुख्या द्वार और आँगन को साफ़ करके गोबर से लीपा जाता है। उसके बाद रंग बिरंगी बड़ी बड़ी और खूबसूरत रंगोली बनाई जाती है। घर के मंदिर और मुख्य द्वार को केले व अशोक के पत्तों, आम्र पल्लव और फूलों से सजाया जाता है। इसके पश्चात घर के सभी सदस्य मिलकर अपने ईष्ट देव की अराधना करते हैं। पूजा के बाद सभी लोग एक दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं और खास तौर पर बनाए गए पारंपरिक व्यंजनों का आनंद उठाते हैं। इस दिन लोग मंदिरों में एकत्रित होते हैं भगवान विष्णु और भगवान ब्रह्मा की पूजा करते हैं और वहां मंदिर के ब्राह्मण सभी लोगों को नए वर्ष का पंचांग और राशिफल पढ़कर सुनाते हैं।

पौराणिक कथा के अनुसार, उगादि त्योहार के दिन भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण किया था, और समय, तिथि, दिन, योग और ग्रहों की गणना प्रक्रिया की शुरुआत की थी। इसलिए इस दिन को "काल गणना" का प्रारंभिक दिन भी कहा जाता है। उगादि त्योहार हिंदू नव वर्ष की शुरुआत का प्रतीक है।उगादि का महत्व धार्मिक मान्यताओं के अनुसार चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को ही भगवान विष्णु ने धरती पर मत्स्य अवतार लिया था। इसलिए इस दिन श्री हरि विष्णु की विधिवत पूजा की जाती है। इसके साथ ही सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी की भी उपासना की जाती है।

इसी दिन सूर्य की किरणें धरती पर पहली बार पड़ी थीं। कई लोग नये कामों जैसे नई फसल, या नए व्यवसाय की शुरुआत भी इसी दिन से करते हैं। इस दिन घरों में पत्तों और आम्र पल्लवों को सजाया जाता है जो भगवान गणेश और कार्तिकेय के पसंदीदा थे। मान्यता है कि आम्र पल्लव लगाने से घर में नकारात्मक शक्तियों का प्रवेश नहीं होता है।

पुरण पोली,ओंबट्टू, और होलिगे जैसे व्यंजनों के साथ साथ एक ख़ास पेय पदार्थ तैयार किया जाता है। पचड़ी काढ़ा इस दिन विशेष तौर पर बनाया जाता है जो प्रसाद का भी हिस्सा होता है। यह मुख्यतः मिट्टी के बर्तन में नीम के फूल, नारियल, गुड़, इमली, कच्चा आम, नमक एवं मिर्च मिलाकर बनाया जाता है। यह ना केवल पूजा के लिए महत्वपूर्ण होता है बल्कि लोगों के स्वास्थ्य के लिए भी बेहद लाभप्रद होता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

चैत्र नवरात्रि शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि से प्रारंभ

होली के बाद गुड़ी पड़वा का पर्व मनाया जाता है और तभी से चैत्र नवरात्रि का 9 दिवसीय पर्व प्रारंभ होता है। चैत्र नवरात्रि से ही हिन्दू नववर्ष की शुरुआत वसंत का आगमन होती है चैत्र नवरात्रि के दिनों में कठिन साधना और कठिन व्रत का खासा महत्व रहता है, चैत्र नवरात्रि को आध्यात्मिक इच्छाओं की पूर्ति, सिद्धि, मोक्ष हेतु मनाया जाता है। इस दिन से लोग लगातार 9 दिनों तक माँ दुर्गा के 9 स्वरूपों यानी कि शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, माँ कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री की पूजा बड़े ही विधिविधान के साथ करते हैं। (चैत्र) नवरात्र के अंत में रामनवमी आती है, इस नवरात्रि में शक्ति और विष्णु, दोनों की आराधना की जाती है



नवरात्रि कलश स्थापना के लिए आवश्यक सामग्री :-

जौ बोने के लिए मिटटी का पात्र,	**लाल कपडा / लाल चुन्नी**	**मोली /कलावा/ रक्षा सूत्र**	**श्रृंगार (बिंदी, चूड़ी, दर्पण, कंघी, सिन्दूर)**	**छोटी इलाइची**
मिटटी का कलश	**जौ (जवारे)**	**दूर्वा घास**	**गंगा जल**	**लौंग**
कलश का ढक्कन	**अक्षत/चावल**	**1 /2 रु सिक्का**	**हल्दी, सिन्दूर**	**नारियल**
आम की पत्तियां	**फुल , फुल माला**	**पान, सुपारी,**	**साफ़ मिट्टी**	**प्रसाद**

कलश स्थापना

हिन्दू शास्त्रों के अनुसार किसी भी पूजा से पहले गणेशजी की आराधना करते हैं। हममें से अधिकांश लोग यह नहीं जानते कि देवी दुर्गा की पूजा में कलश क्यों स्थापित करते हैं ? हमारे पुराणों में कलश को भगवान विष्णु का रुप माना गया है। इसलिए लोग देवी की पूजा से पहले कलश का पूजन करते हैं। पूजा स्थान पर कलश की स्थापना करने से पहले उस जगह को गंगा जल से शुद्ध किया जाता हैं और फिर पूजा में सभी देवी -देवताओं को आमंत्रित किया जाता है। कलश को पांच तरह के पत्तों से सजाया जाता है और उसमें हल्दी की गांठ, सुपारी, दूर्वा, आदि रखी जाती है। कलश को स्थापित करने के लिए उसके नीचे बालू की वेदी बनाई जाती है और उसमें जौ बोये जाते हैं। जौ बोने की विधि धन-धान्य देने वाली देवी अन्नपूर्णा को खुश करने के लिए की जाती है। माँ दुर्गा की फोटो या मूर्ति को पूजा स्थल के बीचों-बीच स्थापित करते है और माँ का श्रृंगार रोली ,चावल, सिंदूर, माला, फूल, चुनरी, साड़ी, आभूषण और

सुहाग से करते हैं। पूजा स्थल में एक अखंड दीप जलाया जाता है जिसे व्रत के आखिरी दिन तक जलाया जाना चाहिए। कलश स्थापना करने के बाद, गणेश जी और मां दुर्गा की आरती करते है जिसके बाद नौ दिनों का व्रत शुरू हो जाता है।

कलश स्थापना विधि :- नवरात्रि में कलश स्थापना देव-देवताओं के आह्वान से पूर्व की जाती है। सबसे पहले मिट्टी के बड़े पात्र में थोड़ी सी मिट्टी डालें। और उसमे जवारे के बीज डाल दें।अब इस पात्र में दोबारा थोड़ी मिटटी और डालें। और फिर बीज डालें। उसके बाद सारी मिट्टी पात्र में डाल दें और फिर बीज डालकर थोड़ा सा जल डालें। (ध्यान रहे इन बीजों को पात्र में इस तरह से लगाएं कि उगने पर यह ऊपर की तरफ उगें। यानी बीजों को खड़ी अवस्था में लगाएं और ऊपर वाली लेयर में बीज अवश्य डालें।) अब कलश और उस पात्र की गर्दन पर मौली बांध दें। साथ ही तिलक भी लगाएं। इसके बाद कलश में गंगा जल भर दें। इस जल में सुपारी, इत्र, दूर्वा घास, अक्षत और सिक्का भी दाल दें। अब इस कलश के किनारों पर 5 अशोक के पत्ते रखें और कलश को ढक्कन से ढक दें। अब एक नारियल लें और उसे लाल कपड़े या लाल चुन्नी में लपेट लें। चुन्नी के साथ इसमें कुछ पैसे भी रखें। इसके बाद इस नारियल और चुन्नी को रक्षा सूत्र से बांध दें। तीनों चीजों को तैयार करने के बाद सबसे पहले जमीन को अच्छे से साफ़ करके उसपर मिट्टी का जौ वाला पात्र रखें। उसके ऊपर मिटटी का कलश रखें और फिर कलश के ढक्कन पर नारियल रख दें। आपकी कलश स्थापना संपूर्ण हो चुकी है। इसके बाद सभी देवी देवताओं का आह्वान करके विधिवत नवरात्रि पूजन करें। इस कलश को आपको नौ दिनों तक मंदिर में ही रखे देने होगा। बस ध्यान रखें सुबह-शाम पानी डालते रहें।

सप्ताह भर श्री मद दुर्गा सप्तशती का पाठ करना है। साथ ही रामायण का नवाह्न पाठ भी कर सकते है। अष्टमी को कड़ाही (सूजी का हलवा, पूरी, चने) करनी है। आटे का दिया लगाना है , भगवती दुर्गा का पूजन कर भोग लगाना है।

कन्या पूजन विधि :- नवरात्रि की नवमी पर हवन के बाद कन्या पूजन का खास महत्व रहता है।–

- धार्मिक मान्यता के अनुसार **2 से 10 वर्ष की आयु की कन्या कुमारी पू**जा के लिए उपयुक्त होती हैं।
- सभी कन्याओं को कुश के आसान पर या लकड़ी के पाट पर बैठाकर उनके पैरों को पानी या दूध से धोएं।
- फिर पैर धोने के बाद उनके पैरों में महावार लगाकर उनका श्रृंगार करें और फिर उनके माथे पर अक्षत, फूल और कुमकुम का तिलक लगाकर उनकी पूजा और आरती करें।
- इसके बाद सभी कन्याओं को भोजन कराएं। साथ ही एक लांगुरिया (छोटा लड़का) को खीर, पूरी, प्रसाद, हलवा, चने की सब्जी आदि खिलाएं।- भोजन कराने के बाद उन्हें दक्षिणा दें, उन्हें रूमाल, चुनरी, फल और खिलौने देकर उनका चरण स्पर्श करके उन्हें खुशी खुशी से विदा करें।

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की राम नवमी

पूरी, चना,आलू की सब्जी, खीर और हलवा- रामायण का पाठ समाप्ति पर, रामायण की आरती (घी का दीपक, सिन्दूर का तिलक, कलावा) के बाद भोग लगा कर श्री रामचंद्र की पूजा कर के , गौ का भोजन निकाल कर ही भोजन करना है।

बैसाखी

बैसाख कृष्ण पक्ष प्रतिपदा

पुराणों के अनुसार ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण वैशाख महीने में किया था। भगवान राम का राज्याभिषेक भी वैशाख महीने में हुआ था। बैसाखी के त्योहार को नव वर्ष के रूप में मनाते हैं। इस दिन सूर्यदेव मेष राशि में प्रवेश करते हैं, अत: यह दिन को मेष संक्रांति के नाम से जाना जाता है। 13 अप्रैल 1699 को बैसाखी वाले दिन वाले दिन सिक्खों के दसवें गुरु गोविंद सिंह जी ने आनंदपुर साहिब में सभी जातियों के बीच के भेदभाव को समाप्त कर खालसा पंथ की स्थापना की थी। ये पर्व किसानों के लिए बेहद खास होता है क्योंकि इस दिन फसल को काटकर घर आ जाने की खुशी में लोग ईश्वर का धन्यवाद करते हैं। शाम में लोग नाच गाकर ये त्योहार मनाते हैं।

अक्षय तृतीया

अक्षय तृतीया वैशाख मास में शुक्ल पक्ष की स्वयंसिद्ध मुहूर्त तृतीया तिथि को कहते हैं। पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार इस दिन जो भी शुभ कार्य किये जाते हैं, उनका अक्षय फल मिलता है। यह तिथि यदि सोमवार तथा रोहिणी नक्षत्र के दिन आए तो इस दिन किए गए दान, जप-तप का फल बहुत अधिक बढ़ जाता हैं। यदि यह तृतीया मध्याह्न से पहले शुरू होकर प्रदोष काल तक रहे तो बहुत ही श्रेष्ठ मानी जाती है।

स्कंद पुराण और भविष्य पुराण में उल्लेख है कि वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया को रेणुका के गर्भ से भगवान विष्णु ने जन्म से ब्राह्मण और कर्म से क्षत्रिय भृगुवंशी परशुराम रूप में जन्म लिया। इसी दिन एक कथा के अनुसार परशुराम की माता और विश्वामित्र की माता के पूजन के उपरान्त प्रसाद देते समय ऋषि ने प्रसाद परिवर्तित कर दे दिया था। जिसके प्रभाव से परशुराम ब्राह्मण होते हुए भी क्षत्रिय स्वभाव के थे और क्षत्रिय पुत्र होने पर भी विश्वामित्र ब्रह्मर्षि कहलाए।

भविष्य पुराण के अनुसार सतयुग और त्रेता युग का प्रारंभ इसी तिथि से हुआ है। इसी दिन महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ था और द्वापर युग का समापन भी इसी दिन हुआ था। भगवान विष्णु ने नर-नारायण, हयग्रीव और परशुराम जी का अवतरण भी इसी तिथि को हुआ था। ब्रह्माजी के पुत्र अक्षय कुमार का आविर्भाव भी इसी दिन हुआ था। इस दिन श्री बद्रीनाथ जी की प्रतिमा स्थापित कर पूजा की जाती है और श्री लक्ष्मी नारायण के दर्शन किए जाते हैं। प्रसिद्ध तीर्थ स्थल बद्रीनारायण के कपाट भी इसी तिथि से ही पुनः खुलते हैं। श्री बाँके बिहारी जी मन्दिर वृन्दावन में भी केवल इसी दिन श्री विग्रह के चरण दर्शन होते हैं।, पद्म पुराण के अनुसार इस तृतीया को अपराह्न व्यापिनी मानना चाहिए।

महत्त्व

1. इस दिन बिना कोई पंचांग देखे कोई भी शुभ व मांगलिक कार्य जैसे विवाह, गृह-प्रवेश, वस्त्र-आभूषणों की खरीददारी या घर, भूखण्ड, वाहन आदि की खरीददारी से सम्बन्धित कार्य किए जा सकते हैं। नवीन वस्त्र, आभूषण आदि धारण करने और नई संस्था, समाज आदि की स्थापना या उदघाटन का कार्य श्रेष्ठ माना जाता है।

2. इस दिन गंगा स्नान करने से तथा भगवत पूजन से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। यहाँ तक कि इस दिन किया गया जप, तप, हवन, स्वाध्याय और दान भी अक्षय हो जाता है। इस दिन पितरों को किया गया तर्पण तथा पिन्डदान अथवा किसी और प्रकार का दान, अक्षय फल प्रदान करता है।ऐसी मान्यता है कि इस दिन से प्रारम्भ किए गए कार्य अथवा इस दिन को किए गए दान का कभी भी क्षय नहीं होता।

मदनरत्न के अनुसार: अस्यां तिथौ क्षयमुर्पति हुतं न दत्तं। तेनाक्षयेति कथिता मुनिभिस्तृतीया॥
उद्दिष्य दैवतपितृन्क्रियते मनुष्यैः। तत् च अक्षयं भवति भारत सर्वमेव॥

3. इस दिन मनुष्य अपने या स्वजनों द्वारा किए गए जाने-अनजाने अपराधों की सच्चे मन से ईश्वर से क्षमा प्रार्थना करे तो भगवान उसके अपराधों को क्षमा कर देते हैं और उसे सदगुण प्रदान करते हैं, अतः आज के दिन अपने दुर्गुणों को भगवान के चरणों में सदा के लिए अर्पित कर उनसे सदगुणों का वरदान माँगने की परम्परा भी है।

4. अक्षय तृतीया के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर समुद्र व गङ्गा स्नान करके और शान्त चित्त होकर, भगवान विष्णु की विधि विधान से पूजा करने का प्रावधान है। इस दिन लक्ष्मी नारायण की पूजा श्वेत कमल अथवा श्ववेत पाटल (गुलाब) व पीले पाटल से करनी चाहिये।(सर्वत्र शुक्ल पुष्पाणि प्रशस्तानि सदार्चने। दानकाले च सर्वत्र मन्त्र मेत मुदीरयेत) ।

5. नैवेद्य में जौ व गेहूँ का सत्तू, ककड़ी और चने की दाल अर्पित किया जाता है। तत्पश्चात फल, फूल, पात्र, तथा वस्त्र आदि दान करके ब्राह्मणों को दक्षिणा दी जाती है। इस दिन परशुराम जी की पूजा करके उन्हें अर्घ्य देने का बड़ा माहात्म्य माना गया है।

6. ब्राह्मण को भोजन करवाना कल्याणकारी समझा जाता है। गौ, भूमि, स्वर्ण पात्र इत्यादि का दान भी इस दिन किया जाता है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ और क्वारी कन्याएँ इस दिन गौरी-पूजा करके मिठाई, फल और भीगे हुए चने बाँटती हैं, गौरी-पार्वती की पूजा करके धातु या मिट्टी के कलश में जल, फल, फूल, तिल, अन्न आदि दान करती हैं।

7. यह तिथि वसन्त ऋतु के अन्त और ग्रीष्म ऋतु का प्रारम्भ का दिन भी है इसलिए अक्षय तृतीया के दिन जल से भरे घड़े, कुल्हड, सकोरे, पंखे, खडाऊँ, छाता, चावल, नमक, घी, खरबूजा, ककड़ी, शक्कर, साग, इमली, सत्तू आदि घर्मी में लाभकारी वस्तुओं का दान पुण्यकारी माना गया है।

8. इस दिन सत्तू अवश्य खाना चाहिए तथा नए वस्त्र और आभूषण पहनने चाहिए। अक्षय तृतीया पर अपने अच्छे आचरण और सद्‌गुणों से दूसरों का आशीर्वाद लेना अक्षय रहता है।

प्रचलित कथाएँ : प्राचीन काल में एक धर्मदास नामक वैश्य था। उसकी सदाचार, देव और ब्राह्मणों के प्रति बहुत श्रद्धा थी। इस व्रत के माहात्म्य को सुनने के पश्चात उसने इस पर्व के आने पर गङ्गा में स्नान करके विधि -पूर्वक देवी-देवताओं की पूजा की, व्रत के दिन स्वर्ण, वस्त्र तथा दिव्य वस्तुएँ ब्राह्मणों को दान में दी। अनेक रोगों से ग्रस्त तथा वृद्ध होने पर भी उसने उपवास करके धर्म-कर्म और दान पुण्य किया। यही वैश्य दूसरे जन्म में कुशावती का राजा बना।अक्षय तृतीया के दिन किए गए दान व पूजन के कारण वह बहुत धनी प्रतापी बना। वह इतना धनी और प्रतापी राजा था कि त्रिदेव तक उसकी सभा में अक्षय तृतीया के दिन ब्राह्मण का वेष धारण करके उसके महायज्ञ में सम्मिलित होते थे। अपनी श्रद्धा और भक्ति का उसे कभी घमण्ड नहीं हुआ और वैभवशाली होने पर वह धर्म मार्ग से विचलित नहीं हुआ। माना जाता है कि यही राजा आगे चलकर राजा चंद्रगुप्त के रूप में जन्मा।

वट सावित्री व वट पूर्णिमा व्रत

(ज्येष्ठ माह, कृष्ण पक्ष की अमावस्या -वट सावित्री व्रत, ज्येष्ठ माह शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा -वट पूर्णिमा व्रत होता है)
इस त्यौहार में स्त्रियाँ सावित्री की देवी मान कर पूजन करती है. वट सावित्री व्रत का महत्त्व **करवा चौथ व्रत के महत्त्व** समान ही होता है. **वट सावत्री व्रत व वट पूर्णिमा व्रत का महत्त्व एक ही है.**

वट सावित्री व वट पूर्णिमा व्रत महत्त्व

पति की सुख समर्धि व् लम्बी आयु के लिए ये व्रत रखा जाता है. वट (बरगद) यह एक विशाल पेड़ होता है, जिसमें जटाएं लटकती रहती है. सावित्री देवी का रूप मानी जाती है. हिन्दू पूरण में बरगद के पेड़ में ब्रम्हा, विष्णु व् महेश का रहवास माना जाता है. इस वृक्ष की जड़ में ब्रम्हा रहते है, बीच में विष्णु व् उपरी सामने के भाग में शिव होते है. इस वृक्ष के नीचे बैठकर इसकी पूजा करने से सारी मनोकामनाएं पूरी होती है. इस त्यौहार का महत्व हर विवाहिता के जीवन में होता है.

सावित्री सत्यवान कथा : अश्वपति नाम का सच्चा, ईमानदार राजा हुआ करता था. उसके जीवन में सभी तरह का ऐशोआराम सुख शांति थी. करे, बच्चे की चाह में वह पुरे 18 वर्ष तक कठिन तपस्या (देवी सावित्री की आराधना) करता रहा. उसके कठिन ताप को देख देवी सावित्री खुद उसके पास आई, और उसे एक बेटी का वरदान दिया, जिसका नाम सावित्री रखा गया. जब ये सावित्री बड़ी हुई और युवावस्था में पहुंची तो खुद अपने लिए अच्छे जीवनसाथी तलाशने लगी. जिसके बाद उसे सत्यवान मिले. लेकिन सत्यवान की कुंडली के अनुसार उसका जीवन अधिक नहीं था, उसकी 1 साल में म्रत्यु लिखी थी. सावित्री अपने पति सत्यवान के साथ एक बार बरगद पेड़ के नीचे बैठी थी. सावित्री की गोद में सर रखकर सत्यवान लेटे हुए थे. तब खुद यमराज उसके पास जाते है, और सत्यवान के प्राण मांगते है. सावित्री के मना करने पर वे उसे इसके बदले में वरदान मांगने को कहते है. सावित्री अपने सास-ससुर की सुख शांति मांगती है, जो यमराज उसे दे देते है. लेकिन इसके बाद भी सावित्री अपने पति को नहीं छोडती, और साथ में जाने को बोलती है| जिसके बाद अपने माता पिता की सुख समर्धि मांगती है. यमराज वो भी मान जाते है, लेकिन सावित्री फिर भी उनके पीछे पीछे उनके आवास में जाने लगती है. तब यमराज आखरी इच्छा उससे पूछते है, तब वो उनसे एक बेटा मांगती है. यमराज ये भी मान जाते है. लेकिन सावित्री इस वरदान के

द्वारा यमराज से चालाकी करती है. वो बोलती है, बिना पति के उसे बेटा कैसे मिल सकता है. यमराज कुछ नहीं बोल पाते, लेकिन सावित्री के सच्चे प्यार को वो समझ जाते है. यमराज सावित्री के प्रयास को देख खुश होते है, और सत्यवान की आत्मा उसके शरीर में वापस भेज देते है. इसके साथ ही दुनिया इन्हें सती सावित्री के नाम ने जानने लगती है. और यहाँ से वट सावित्री का त्यौहार मनाया जाने लगा.

वट सावित्री व वट पूर्णिमा व्रत पूजा विधि

- इस पूजा को करने वाली स्त्रियाँ सबसे पहले पूजा वाले दिन सुबह उठकर स्नान कर शुद्ध हो जाती है. इसके बाद नए वस्त्रों और आभूषणों को धारण करती हैं. महिलाएं दुल्हन की तरह अपना साज श्रंगार करती है
- **वट सावित्री के व्रत में कई लोग 3 दिन का उपवास रखते है.** इसलिए पहले दिन रात को खाना खा लेते है, दुसरे दिन फल फूल खा सकते है, व् तीसरे दिन पूरा दिन का व्रत रहते है. स्त्रियाँ रात में पूजा के बाद पूजा के बाद भोजन ग्रहण कर लेती है. ये व्रत पूरा होता है.
- यह पूजा वट के वृक्ष के नीचे होती है. अतः वृक्ष के नीचे एक स्थान को अच्छे से साफ़ करके वहाँ पर सभी आवश्यक पूजन सामग्रियों को रख देते हैं. इसके बाद सत्यवान और सावित्री की मूर्तियाँ निकाल कर उसे वट वृक्ष के जड़ में स्थापित किया जाता है, एवं इन मूर्तियों को लाल वस्त्र अर्पित करते है.
- एक बांस की टोकरी लेते है, उसमें सात तरह के अनाज रखते है, जिसे कपड़े के 2 टुकड़े से ढक देते है. एक दुसरी बांस की टोकरी में देवी सावित्री की प्रतिमा रखते है, साथ में धुप, दीप, कुमकुम, अक्षत, मोली आदि पूजा की सामग्री रखते है. अब वट वृक्ष में जल चढ़ाकर, कुमकुम, अक्षत चढाते है, साथ ही देवी सावित्री की पूजा करते है.
- इसके बाद बांस के बने पंखे से सत्यवान और सावित्री की मूर्ति को हवा करते हैं. स्त्रियाँ वट वृक्ष के एक पत्ते को अपने बाल में लगा के रखती हैं. इसके बाद सच्चे मन से प्रार्थना करते हैं. फिर लाल मौली/सूत के धागे को लेकर वट वृक्ष के चारों ओर घूमकर बांधते है, ऐसा 7 बार करते है.

इसके बाद किसी पुरोहित अथवा पंडित जी से सत्यवान और सावित्री के व्रत की कथा सुनने है. कथा समाप्त हो जाने के बाद कथा कहने वाले पंडित जी को अपने सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा दी जाती है. ये करने के बाद ब्राह्मण व जरुरत मंद को दान करते है. चना व गुड़ का प्रसाद सबको दिया जाता है. फिर घर में सभी बड़ों के पैर छूकर स्त्रियाँ सदा सुहागन रहने का आशीर्वाद लेती हैं. शाम के समय घर में बनी अथवा किसी दूकान से लायी गयी मिठाई का सेवन कर अपना व्रत खोलती हैं.

देवशयनी एकादशी

आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवशयनी एकादशी, पद्मनाभा तथा प्रबोधनी एकादशी कहा जाता है। इसी एकादशी से चातुर्मास का आरंभ माना जाता है। इस अवधि में कोई भी शुभ कार्य जैसे विवाह आदि नहीं किया जाता। मान्यता है कि, इस दिन से भगवान श्री हरि विष्णु क्षीरसागर में शयन करते हैं और फिर चार माह बाद देवोत्थानी एकादशी को उन्हें उठाया जाता है। इस बीच के अंतराल को ही चातुर्मास कहा गया है।

कथा! : एक बार देवऋषि नारदजी ने ब्रह्माजी से इस एकादशी के विषय में जानने की उत्सुकता प्रकट की, तब ब्रह्माजी ने उन्हें बताया: सतयुग में मांधाता नामक एक चक्रवर्ती सम्राट राज्य करते थे। उनके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी। किंतु भविष्य में क्या हो जाए, यह कोई नहीं जानता। अतः वे भी इस बात से अनभिज्ञ थे कि उनके राज्य में शीघ्र ही भयंकर अकाल पड़ने वाला है। उनके राज्य में पूरे तीन वर्ष तक वर्षा न होने के कारण भयंकर अकाल पड़ा। इस अकाल से चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई। धर्म पक्ष के यज्ञ, हवन, पिंडदान, कथा-व्रत आदि में कमी हो गई। जब मुसीबत पड़ी हो तो धार्मिक कार्यों में प्राणी की रुचि कहाँ रह जाती है।
प्रजा ने राजा के पास जाकर अपनी वेदना की दुहाई दी। राजा तो इस स्थिति को लेकर पहले से ही दुःखी **थे। वे सोचने लगे** कि आखिर मैंने ऐसा कौन-सा पाप-कर्म किया है, जिसका दंड मुझे इस रूप में मिल रहा है? फिर इस कष्ट से मुक्ति पाने का कोई साधन करने के उद्देश्य से राजा सेना को लेकर जंगल की ओर चल दिए। वहाँ विचरण करते-करते एक दिन वे ब्रह्माजी के पुत्र अंगिरा ऋषि के आश्रम में पहुँचे और उन्हें साष्टांग प्रणाम किया। ऋषिवर ने आशीर्वचनोपरांत कुशल क्षेम पूछा। फिर जंगल में विचरने व अपने आश्रम में आने का प्रयोजन जानना चाहा।

तब राजा ने हाथ जोड़कर कहा: महात्मन्! सभी प्रकार से धर्म का पालन करता हुआ भी मैं अपने राज्य में दुर्भिक्ष का दृश्य देख रहा हूँ। आखिर किस कारण से ऐसा हो रहा है, कृपया इसका समाधान करें।

यह सुनकर महर्षि अंगिरा ने कहा: हे राजन! सब युगों से उत्तम यह सतयुग है। इसमें छोटे से पाप का भी बड़ा भयंकर दंड मिलता है। इसमें धर्म अपने चारों चरणों में व्याप्त रहता है। ब्राह्मण के अतिरिक्त किसी अन्य जाति को तप करने का अधिकार नहीं है जबकि आपके राज्य में एक शूद्र तपस्या कर रहा है। यही कारण है कि आपके राज्य में वर्षा नहीं हो रही है। जब तक वह काल को प्राप्त नहीं होगा, तब तक यह दुर्भिक्ष शांत नहीं होगा। दुर्भिक्ष की शांति उसे मारने से ही संभव है।

किंतु राजा का हृदय एक नरपराध शूद्र तपस्वी का शमन करने को तैयार नहीं हुआ। उन्होंने कहा: हे देव मैं उस निरपराध को मार दूँ, यह बात मेरा मन स्वीकार नहीं कर रहा है। कृपा करके आप कोई और उपाय बताएँ।

महर्षि अंगिरा ने बताया: आषाढ़ माह के शुक्लपक्ष की एकादशी का व्रत करें। इस व्रत के प्रभाव से अवश्य ही वर्षा होगी। राजा अपने राज्य की राजधानी लौट आए और चारों वर्णों सहित पद्मा एकादशी का विधिपूर्वक व्रत किया। व्रत के प्रभाव से उनके राज्य में मूसलधार वर्षा हुई और पूरा राज्य धन-धान्य से परिपूर्ण हो गया। ब्रह्म वैवर्त पुराण में देवशयनी एकादशी के विशेष माहात्म्य का वर्णन किया गया है। इस व्रत से प्राणी की समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

॥卐॥ इति वार्षिक पर्व सम्पूर्ण ॥卐॥